जुलाई - सितम्बर, 1999
अंक-6
15 रुपये

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

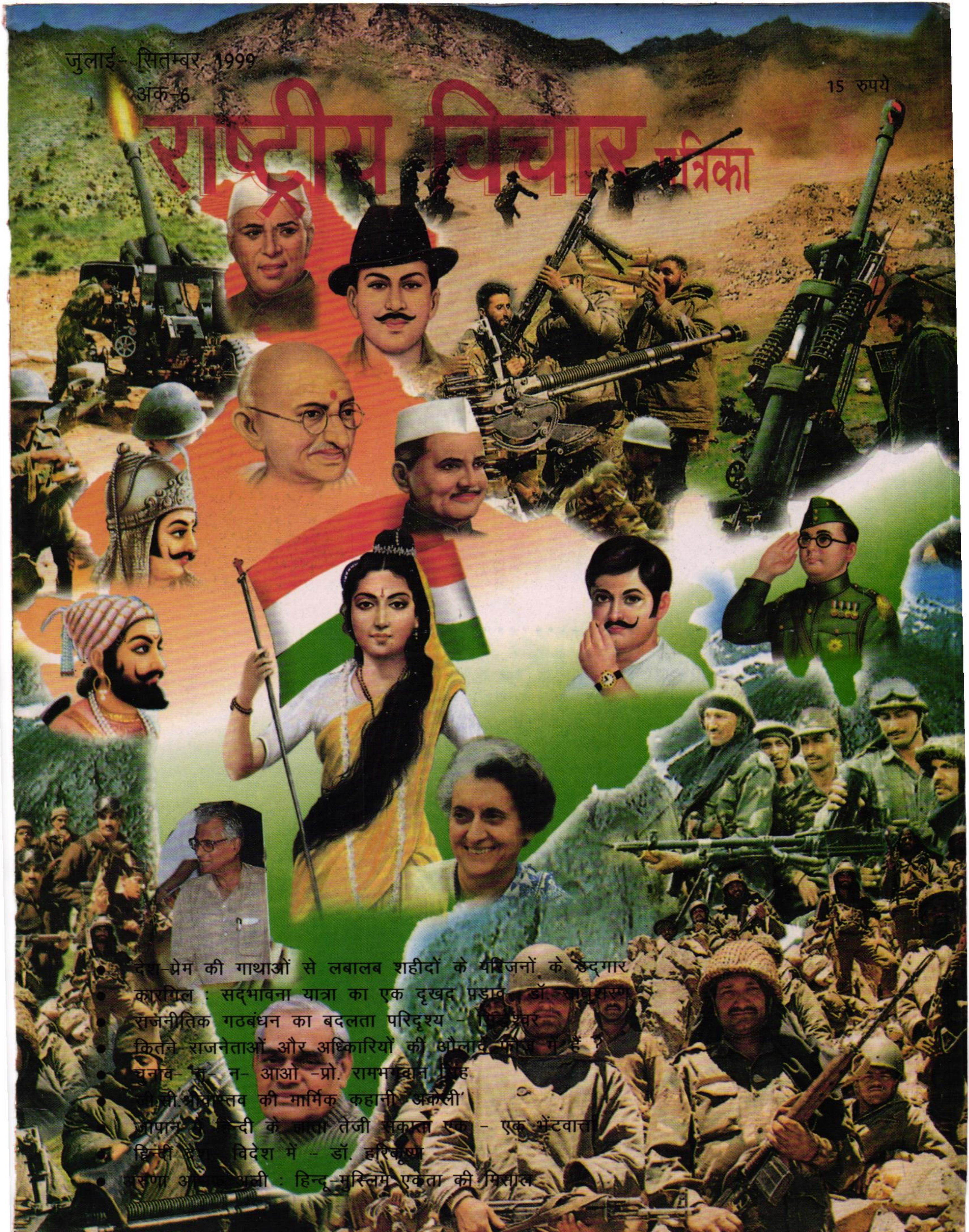

- देश-प्रेम की गाथाओं से लबालब शहीदों के परिजनों के उद्गार
- कारगिल : सद्भावना यात्रा का एक दुखद पड़ाव - डॉ. [illegible]
- राजनीतिक गठबंधन का बदलता परिदृश्य - [illegible]
- कितने राजनेताओं और अधिकारियों की औलादें फौज में हैं ?
- चुनाव- [illegible] - न- आओ -प्रो. रामभगवान सिंह
- [illegible] श्रीवास्तव की मार्मिक कहानी 'अकेली'
- जापान में हिन्दी के [illegible] तेजी सकता एक - एक भेंटवार्ता
- हिन्दी [illegible] विदेश में - डॉ. हरिकृष्ण
- [illegible] : हिन्दू-मुस्लिम एकता की मिसाल

अंक-1

अंक-2

अंक-3

अंक-4

अंक-5

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

सदस्यता / ग्राहक प्रपत्र

हम **राष्ट्रीय विचार पत्रिका** के वार्षिक/दो वर्षीय/पांच वर्षीय/दस वर्षीय/आजीवन सदस्य/संरक्षक सदस्य बनना चाहते हैं।

सदस्यता शुल्क.....................................रुपये मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. ....दिनांक .... भेज रहे हैं।

हमारी प्रति निम्न पते पर भेजें।

नाम .... पता...पिन कोड.......................

सदस्यता शुल्क

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

		भारत	*विदेश*
वार्षिक	-	50 रुपये	3 डॉलर
दो-वर्षीय	-	100 रुपये	5 डॉलर
पाँच-वर्षीय	-	250 रुपये	10 डॉलर
दस-वर्षीय	-	500 रुपये	18 डॉलर
आजीवन	-	1000 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	-	5000 रुपये	500 डॉलर

राष्ट्रीय विचार मंच

		भारत	*विदेश*
वार्षिक	-	25 रुपये	3 डॉलर
आजीवन	-	500 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	-	1000 रुपये	100 डॉलर
संपोषक	-	2000 रुपये	200 डॉलर

बैंक ड्राफ्ट/चेक 'राष्ट्रीय विचार मंच' के नाम देय होगा।

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

विज्ञापन दरें

आवरण पृष्ठ (रंगीन)

	एक बार	चार या अधिक बार
1. अन्तिम पृष्ठ	8000 रुपये	6000 रुपये
2. द्वितीय पुर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
3. द्वितीय आधा पृष्ठ	2500 रुपये	2200 रुपये
4. तृतीय पूर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
5. तृतीय आधा पृ.	2500 रुपये	2200 रुपये

भीतरी पृष्ठ

	एक बार	चार या अधिक बार
6. रंगीन पूर्ण पृष्ठ	1500 रुपये	1200 रुपये
7. रंगीन आधा पृ.	800 रुपये	700 रुपये
8. साधारण पूर्ण पृ.	1000 रुपये	800 रुपये
9. साधारण आधा पृ.	600 रुपये	500 रुपये
10. साधारण चौथाई पृ.	400 रुपये	300 रुपये

विज्ञापन के लिए संपर्क करे

राष्ट्रीय विचार पत्रिका, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1, दूरभाष 228519, **Email-ranjansudhir@hotmail.com**

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित मंच का त्रैमासिक मुख-पत्र

वर्ष-3 जुलाई-सितम्बर, 1999 अंक-6

-----पत्रिका परिवार -----

संरक्षक :

रामरतन चौधरी, कलकत्ता

प्रधान संपादक : सिद्धेश्वर

बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1, दूरभाष- 228519

E-mail- sidheshwarprasad@hotmail.com

संपादक : डॉ.हीरालाल सहनी

सह संपादक : कामेश्वर मानव

उप संपादक : विनय कुमार सिन्हा

सहा.संपादकः राधेश्याम, मनोज कुमार

संपादन सहायक : दिलीप कुमार

कार्यालय : नई दिल्ली

प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन

118, मस्जिद मोठ, साउथ एक्सटेंसन-II

Email-ranjansudhir@hotmail.com

विज्ञापन व प्रसार प्रबंधक : रामप्रताप सिंह

कार्यालय सहायक :

विष्णुदेव प्रसाद, अयोध्या प्रसाद

संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001

दूरभाष : 0612-228519

ब्यूरो प्रमुख, प्रतिनिधि व संवाददाता

नई दिल्ली	:	डॉ०मेदनी राय, प्रो०राजेश
मुम्बई	:	बालकवि प्यासा
कलकत्ता	:	कमलेश कुमार
बोकारो	:	सुरेश कुमार
जबलपुर	:	भवानी प्रसाद चौकसे
पटना	:	विन्देश्वर प्रसाद गुप्ता
रांची	:	राजेन्द्र प्रसाद
धनबाद	:	प्रो०बी०बी०शर्मा
डाल्टनगंज	:	अरबिन्द प्रसाद
रक्सौल	:	रवीन्द्र ठाकुर
मधुबनी	:	बिल्टू सहनी
जयनगर	:	डॉ. राजकुमार गुप्ता
खगड़िया	:	मुल्कराज आनन्द

प्रकाशक :
राष्ट्रीय विचार मंच, पटना
शब्द-संयोजनः रंजन कम्प्यूटर्स, पटना
मुद्रकः प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड,
ओखला, नई दिल्ली

मूल्य : एक प्रति 15 रुपये
आजीवन सदस्य : 1000 रुपये

सृजन और सृजनहार

पृष्ठ

पाठकीय पन्ना- 2

संपादकीय- 4

विचार / चिन्तन :

कितने राजनेताओं और अधिकारियों की औलादें फौज में हैं ?-रियर एयरमार्शल एम.एस. बाबा 5

न्याय-जगत :

कैसे होगा भ्रष्टाचार पर नियंत्रण ? -गुलाबचन्द कोटडिया 6

लघुकथा / लघुकहानी

मायके का सुख – राजेन्द्र प्रसाद 8

राजनीतिक नजरिया :

राजनीतिक गठबंधन का बदलता परिदृश्य -सिद्धेश्वर 9

समाचार-दर-समाचार : 11

चुनाव-समाचार : 13

कारगिल पर विशेष :

देश प्रेम की गाथाओं से लबालब शहीदों के परिजनों के उद्‌गार 14

कारगिल : सद्‌भावना यात्रा का एक दुःखद पड़ाव - डा०साधुशरण 17

उनके कल के लिए हमने अपना आज दे दिया 18

कारगिल युद्ध : क्या खोया क्या पाया -विनय कुमार सिन्हा 19

टाइगर हिल्स पर जब तिरंगा लहराया -सीताराम सिंह 19

कारगिल-समाचार : 20

कारगिल कविता / काव्य कुंज

बिन्देश्वर प्र० गुप्ता, रमाशंकर चंचल, डा.पुष्पलता भट्‌ट 'पुष्प', मधुर नागवान, डा.मधु धवन, प्रह्लाद श्रीमाली, राष्ट्रबन्धु अश्विनी कुमार आलोक आदि 21

नारी-जगत :

हिन्दू-मुस्लिम एकता की मिसाल -सिद्धेश्वर 24

पृष्ठ

समीक्षा :

सफेद चादर का लोकार्पण व समीक्षा 25

व्यंग्य :

चुनाव-तू-न आओ - प्रो०राम भगवान सिंह 26

बॉस का बॉस सुपर बॉस - डा. रेखा व्यास 27

सेहत-सलाह :

गर्मी और बच्चे – डा.आर.के.पी.सिंह 28

साहित्य समाचार : 29

शख्सियत :

डॉ०बाल शौरि रेड्डी : जीवन्त व्यक्तित्व - ईश्वर करुण 31

विज्ञान-जगत :

कम्प्यूटर क्यों और कैसा खरीदे?-सुधीर रंजन 33

नई खोज : - प्रस्तुतिः कुसुम कुमारी 33

कला-संस्कृति :

संस्कृति का स्वरूप -डॉ. बीरेन्द्र कुमार वसु 34

संस्मरण :

डील डॉल काया का वह गौरवशाली व्यक्ति गुजर गया -सिद्धेश्वर 35

चित्रकला एवं साहित्य की समर्पित प्राणसाधिका - प्रो. प्रफुल्ल कुमार 'मौन' 36

राजभाषा स्वर्ण जयंती :

हिन्दी देश-विदेश में - डॉ. हरिकृष्ण 37

भेंटवार्ता :

जापान में हिन्दी के ज्ञाता तेजी सकाता -चितरंजन भारती 38

हिन्दी रचनाकारों के सम्मान में संगोष्ठी - डा.मधु धवन 39

अकेली (कहानी)- गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव 40

देश-विदेश : 44

खेल-खिलाड़ी : 45

फिल्मावलोकन : 46

पत्रिका-परामर्शी

1. मान. न्याया. श्री बी. एल. यादव
वरिष्ठ अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय
2. पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि'
सुप्रसिद्ध साहित्यकार
3. श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव
अपर उपनियंत्रक-महालेखापरीक्षक
4. श्री जियालाल आर्य, भा.प्र.से.
राज्य निर्वाचन आयुक्त, बिहार
5. प्रो. रामबुझावन सिंह
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
6. कविवर गोपी वल्लभ सहाय
सुप्रसिद्ध गीतकार
7. श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा
पूर्व केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी
8. श्री अयूब खान
सुप्रसिद्ध समाजवादी

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

मनोमुग्धकारी प्रगट, ललित, परिष्कृत एवं मर्यादित

आपके सुयोग्य सम्पादकत्व में स्तरीय कलात्मक साज-सज्जा, नयनाभिराम आवरण एवं वैविध्यपूर्ण साहित्यिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक-सामाजिक सामग्रियों के साथ यह पत्रिका लोकप्रियता का परिधि-विस्तार कर रही है। उत्तरोत्तर इसकी मनोमुग्धकारी प्रगत, ललित, परिष्कृत परिवर्द्धित एवं मर्यादित प्रस्तुति से मैं बहुत प्रभावित और आशान्वित हूं। एक विचारोत्तेजक, सामाजिक रूढ़ि का प्रमाणिक-तार्किक खण्डन करनेवाले खास लेख के लिए मैं उसके लेखक **आचार्य बनारसी सिंह 'विजयी'** तथा उसको प्रकाशित करने के लिए आपको साधुवाद देना चाहूंगा, वह है **विश्व के प्रमाणिक धर्मग्रन्थों में श्राद्ध-कर्म नहीं**। आपका सारस्वत-व्रत समाज को सार्थक चेतना प्रदान करते हुए सतत् उपादेय सिद्ध हो-ऐसी मेरी शुभेषणा है। शुभास्तु ते पंथान:।

–ललित कुमुद, क्वार्टर-सी-16, रोड न०-8, पुनाईचक, पटना-23

राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत

राष्ट्रीय विचार पत्रिका के हर अंक से प्रभावित हो जाता हूं। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ को देखते ही मन मुग्ध हो जाता है। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत सामाजिक चेतना, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, हत्याकांड, बलात्कार, अपहरण का खुलासा कर पाठकों को यह नव चेतना जागृत करने के लिए प्रेरित करती है। **सिद्धेश्वर** जी का आलेख **रेणु की कथाओं में सामाजिक चेतना'** तथा **शेखर कुमार श्रीवास्तव** की **'कौन बदल गया'** कविता हृदय को छू जाने वाली है।सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तर भी अवश्य दें।

-मोहन महतो 'योगी', मदारपुर, दरभंगा

नारी पर विचारणीय आलेख

प्रस्तुत अंक में काव्यकुंज एवं ग़ज़ल के अंतर्गत अच्छी रचनाएं दी गई हैं साथ ही कहानी **'सौतेली मां का खौफ '** एवं लघुकथाएं भी अच्छी सामग्री है। बाल श्रमिकों की मुक्ति पर आलेख तथा भारत में नारी शोषण विचारणीय आलेख है।

डॉ. गौरी शंकर 'पथिक', 'पथिक कुटीर' जवाहर नगर, गली नं.-1, सतना(म.प्र.)

उम्दा और उदात्त प्रयास

आकर्षक आवरण और कलात्मक कलेवर सहज ही प्रभावित करता है। सचमुच वह एक उम्दा और उदात्त प्रयास है, इसके लिए इससे जुड़े तमाम लोग बधाई के पात्र हैं। अंक की कमोवेश सभी सामग्रियां पठनीय और प्रेरक हैं। जगह-जगह **राष्ट्रीय विचार मंच** की स्थापना करके जनचेतना एवं साहित्य चेतना की जो कोशिशें चल रही हैं, इसे सिद्धेश्वर जी तथा अन्य साथियों द्वारा किया जा रहा पुनीत कार्य ही कहेंगे। पुन: बधाई लें। आपलोगों के इस अभियान में मेरा यथासंभव सहयोग रहेगा।

संजय सिन्हा, पो.बा.नं.-164,आसनसोल

'सोने में सुगन्ध'

आपकी आस्वादवैविध्य से संवलित विषयों को बहुरंगता के साथ परिवेषित करनेवाली **राष्ट्रीय विचार पत्रिका** का अप्रैल-जून, 99 अंक प्राप्त कर परम परितोष हुआ। किसी भी पत्रिका का नियमित रूप से यथासमय प्रकाशित होना ही उसकी सर्वोपरि उपलब्धि मानी जाती है उसपर मुद्रण-प्रतिमान की समग्र विशेषताओं के साथ प्रकाशन तो **सोने में सुगन्ध** मुहावरे को प्रतिसूचित करती है। इस पत्रिका के मन-मिजाज के अनुरूप आलेख भेजने में मुझे गौरवानुभूति होगी।

डॉ०श्रीरंजन सूरिदेव, सिन्हा कॉलोनी, भिखनापहाड़ी, पटना-6

रूचिकर सामग्री

पत्रिका के टाइटल के अनुरूप ही भीतर के पृष्ठों में सामग्री है। जो रूचिकर होने के साथ-साथ राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत है।

मोहनदास नैमिशराय, नई दिल्ली

हमें खेद है

इस पत्रिका के 5 वें अंक के पृष्ठ 16 पर प्रकाशित **'अपनों से धोखा खाए मुलायम सिंह यादव'** शीर्षक लेख के द्वितीय पारा की प्रथम पंक्ति में भूल से शब्द **दोहरापन** की जगह **दोगलापन** छप गया है, जिसके लिए हमें खेद है। आलोचना के क्रम में भी हम अपनी शालीनता बनाए रखना पसन्द करते हैं।

- प्रधान संपादक

हर स्तंभ पठनीय

आपकी पत्रिका एवं **पतझर की सांझ** हाइकु काव्य-संग्रह में आपकी विद्वता को देखकर मैं काफी प्रभावित हुआ। आपकी साहित्यिक गरिमा, सीधा सादा सरल व्यक्तित्व एवं **"हाइकु विधा"** के त्रिवेणी संगम में स्नान करके मैं धन्य हो गया। हाइकु से पहली बार ही परिचित हुआ। पत्रिका के हर स्तंभ पठनीय है।

प्रभुदयाल खरे "गज्जे भैया", हास्य कवि, बरेली, रायसेन(म.प्र.)

उत्कृष्ट पत्रिका

सामग्रियों के चयन उनकी प्रस्तुति और इसकी छपाई, सफाई से बेहद प्रभावित हुआ हूं। लगता नहीं था कि अपने पिछड़े राज्य बिहार से भी ऐसी उत्कृष्ट पत्रिका कभी प्रकाशित हो सकेगी। आपने प्रकाशन से इस आशंका को निमूल सिद्ध करके रख दिया है।

परमानन्द दोषी, 30/13, गर्दनीबाग, पटना-2

प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में एक

इतनी सुन्दर शक्ल-सूरत वाली कोई पत्रिका बिहार से पहले कभी निकलते मैंने नहीं देखी। भविष्य में यही स्तर बना रहा तो बहुत जल्द ही देश की इनी-गिनी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में इसकी गणना होने लगेगी। अभी भी इसका वर्तमान स्वरूप देखकर लेखकों का इसमें स्थान पाने की लालसा जगेगी। कम से कम यह लालच तो मुझे अभी ही हो रहा है।

–सुरेन्द्र प्रसाद सिंह, मनोरमा सदन, पथ संख्या-10, राजेन्द्रनगर, पटना-16

पैनी दृष्टि का द्योत्तक

पत्रिका में लगभग प्रत्येक विषय पर लिखे गये उत्कृष्ट कोटि के लेख सामाहित हैं, साहित्य के अलावा इतिहास, राजनीति, अध्यात्म, समाज व अन्तर्राष्ट्रीय जानकारी के साथ-साथ कला-संस्कृति पर आधारित प्रेरक कथाओं व प्रसंगों को स्थान मिला है। इस प्रकार उत्तम कोटि की बन पड़ी वास्तव में सम्पूर्ण राष्ट्रीयता को समाये यह पत्रिका आपकी पैनी दृष्टि की द्योतक भी है।

भारत कुमार 'अतुल', 185, मथुरावाला, देहरादून

सभी लोगों के लिए रोचक सामग्री

मैं पत्रिका पढ़ने के बाद यह लिखने का लोभ संवरण नहीं कर सका कि व्यक्ति पर उसकी परिस्थितियों की छाया पड़ती है। पूछिये-कैसे? मुझे तो आपकी पत्रिका ए.सी-2 वह भी कमस्टॉप श्रमजीवी एक्सप्रेस जैसी लगी। श्रमजीवी एक्सप्रेस इसलिए कि इसमें पटना से गंतव्य तक इतनी भीड़ रहती है कि आपकी पत्रिका के विषयों की भीड़ जैसी। हर तरह के लोग हर तरह के विषय। खट्टे, मीठे, चटपटे। कभी इस खंड की बात सुनिये कभी उस खंड की। सभी रोचक सभी दिलचस्प और कलेवर ? इतनी साफ सुथरी। पदचाप तक सुन्दर, कलापूर्ण पहनावा। मैं ब्यूटी पार्लर वाले के हाथ चूमूंगा इस कम्पार्टमेंट में एकत्रित करने वाले सिद्ध पुरुष को ! **राष्ट्रीय विचार पत्रिका** में अराष्ट्रीय तलाशना, अविचार, कुविचार की छाया ढूंढ़ना यह शोधार्थियों के जिम्मे छोड़ना पड़ेगा।

-वीरेन्द्र श्रेष्ठि, कदमकुआं, पटना

संतुलित संपादकीय

आकर्षक कवर, संतुलित संपादकीय, विभिन्न बिषयों पर रचनाएं, लुभावना, शीर्षक। आपका आलेख '**रेणु की कथाओं में सामाजिक चेतना**' और प्रो०राम भगवान सिंह की व्यंग्य रचना 'कानून तोड़ने का कानून' स्तरीय है। कहानी से श्रेष्ठ लघुकथाओं, कविताओं में वीणा जैन की '**पर मिला क्या ?**' मर्मस्पर्शी है।

-भोलानाथ आलोक, नया सिपाही टोला, पूर्णिया

राजनेताओं के अपरिपक्व निर्णय

'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' का अप्रैल-जून, 1999 अंक गत सप्ताह प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। आवरण-पृष्ठ पर नजर पड़ी तो देखता ही रह गया। चित्र की परिकल्पना, चित्रांकन और रंग-संयोजन सभी इतना आकर्षक था कि कलाकार का हाथ चूम लेने को जी चाहता था। उन्हें मेरी ओर से बधाई देने की कृपा कीजिएगा।

आपका सम्पादकीय भी बड़ा प्रभावशाली लगा। सत्तालोलुप राजनेताओं के अपरिपक्व निर्णय एवं छिछली राजनीति ने देश की जनता पर असमय मध्यावधि चुनाव थोपकर जिस आर्थिक बर्बादी की तरफ देश को धकेल दिया है, उसकी जितनी भी भर्त्सना की जाय थोड़ी है। इस संबंध में आपने उचित समय पर निर्भीकतापूर्वक जो विचार व्यक्त किये हैं वह प्रशंसनीय है।

-कृष्ण कुमार राय, एस-2/51 ए, अर्दली बाजार, वाराणसी

राष्ट्रीय विचार पत्रिका का नया अंक अच्छा लगा। आशा करती हूं पत्रिका अपनी मंजिल पायेगी।

-वीणा जैन, कलकता

कलेवर आकर्षक

संपादकीय और अन्य स्तरीय रचनाओं के साथ-साथ पत्र के कलेवर ने सबको आकर्षित किया है जिसने भी देखा।

सियाराम प्रहरी, ईदगाह रोड, केशोपुर, जमालपुर (मुंगेर)

आवश्यकता है प्रतिनिधि व संवाददाताओं की

राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत इस वैचारिक त्रैमासिकी की राष्ट्रीय विचार पत्रिका के कलेवर, साज-सज्जा, आवरण आकर्षण के साथ इसकी स्तरीय सामग्रियों को भी मुक्तकंठ से सराहा है पूरे भारत के पाठकों और लेखकों ने। इसे देखते हुए संपादक-मंडल ने पत्रिका को और विस्तार देने का निर्णय लिया है। इसलिए देश के महानगरों के अलावा छोटे-छोटे शहरों-कस्बों के लिए **प्रतिनिधि** तथा **संवाददाता** की आवश्यकता है।

राजनीतिक सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विषयों से संबन्धित रचनाएं व घटनाएं भेजने में सक्षम तथा अनुभवी सज्जनों की सेवा के लिए अधोहस्ताक्षरी के निम्न पते पर लिखें अथवा दूरभाष पर संपर्क करें। पत्रकारिता में डिग्री या डिप्लोमा वाले को प्राथमिकता दी जाएगी।

प्रधान संपादक
राष्ट्रीय विचार पत्रिका
'बसेरा', पुरन्दरपुर,
पटना-1,
दूरभाष : 0612-228519

जरा इनका भी सुनिए

योजनाओं पर अधिक धन खर्च करने मात्र से गरीबी दूर नहीं हो सकती इसके लिए पंचायती राज संस्थाओं को और अधिकार देने की भी जरूरत है।

-अटल बिहारी वाजपेयी, प्रधानमंत्री

मैं उम्मीद करता हूं कि इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं में भी वेबसाइट विकसित किये जाएंगे। उन्हें भाषाई उपनिवेशवाद से सावधान रहना होगा। **-मुरली मनोहर जोशी**

अस्तित्व रक्षा के लिए जितनी भाजपा की हमें जरूरत है, उतनी ही भाजपा को हमारी जरूरत है।

- रामविलास पासवान

राजस्व संग्रह के आंकड़े देखकर लगता है कि शायद '**विशेष कारगिल टैक्स**' लगाने की नौबत न आये।

-यशवंत सिन्हा

गैसल रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए मैंने अपने आपको दंडित करने के फैसले के रूप में केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् से इस्तीफा दिया है।

-नीतीश कुमार

कर्नाटक में सीटों के लिए भाजपा ज्यादा लालची न बने।

-रामकृष्ण हेगड़े

'धारा बची तो विचारधारा भी बच जाएगी।' - शरद यादव

बिहार के अर्थतंत्र की 'खासियत' यह है कि इसमें कम से कम 25% 'कर लूट' की छूट प्राप्त है।

-सी.ए.जी.रिपोर्ट

मातृभूमि से बढ़कर नहीं है क्रिकेट

- कपिलदेव

कांग्रेस भाजपा गठबंधन का विकल्प नहीं बन सकती

- माकपा

संपादकीय

लगभग दो महीने से भी अधिक से भारतीय सैनिकों और पाक सेनाओं-घुसपैठियों के बीच चल रही गोलाबारी की समाप्ति की घोषणा की गयी। खबरों में यह बताया गया कि सभी घुसपैठिए वापस पाकिस्तान चले गए किन्तु पाकिस्तानी मीडिया ने कहा कि आतंकवादी घुसपैठिए नियंत्रण रेखा की तरफ नहीं लौटे। तो क्या वे कश्मीर की घाटी में चले गए ? इस नजरिए से भारतीय सेना को अपनी चौकसी में ढील नहीं बरतनी चाहिए। ऐसा लगता है कि आतंकवादियों ने अपनी रणनीति बदलकर अब कश्मीर घाटी में कहर बरपाने की रणनीति को अपना रहे हैं। कहा तो यह जाता है कि खतरनाक अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी बिन लादेन कश्मीर की घाटी में सक्रिय हैं। आतंकवादियों की धमकियां अब भी यही है कि वे चुप नहीं बैठेंगे और भारत के खिलाफ नए मोर्चे खोलेंगे।

खैर जो हो, कारगिल सरहदों पर गरजती तोपें अब शांत हो गयी हैं। भारत के साथ ईंट से ईंट बजाने का दावा करनेवाले घुसपैठिए भीगी बिल्ली की तरह भाग खड़े हुए। वैसे पाकिस्तान का कोई भरोसा नहीं है, वह किसी भी समय अकारण युद्ध छेड़ सकता है और कारगिल जैसी स्थिति पैदा कर सकता है। इसलिए उसकी हरकतों पर हर घड़ी चौकसी रखा जाना आवश्यक ही नहीं, अपरिहार्य है। हमारी तनिक शिथिलता व लापरवाही का वह नाजायज फायदा उठा सकता है। **कारगिल जैसी स्थिति पुनः कभी पैदा न हो, इसके लिए यह आवश्यक है कि भारत सतत सतर्कता बरते। हमारी चौकसी में कोताही के चलते ही पाकिस्तानी घुसपैठिए हमारी सीमा में घुस आए जिसकी जांच भारत सरकार को करनी है।**

हमें यह समझने में भूल नहीं करनी चाहिए कि पाकिस्तान का व्यवहार ***"मुंह में राम बगल में छूरी"* वाले कहावत को चरितार्थ करता है।** भारत से संबंधों के मामले में पाकिस्तान की करनी और कथनी में सामंजस्य न होने की बात पुरानी है। इस बार नया यह हुआ कि पाकिस्तान ने उपद्रव मचाने का बिल्कुल नया एवं अनूठा तरीका अपनाया और निश्चित रूप से भारत के लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति रही कि हमारे सुरक्षा सैनिकों को जब इस बात की भनक मिली तब तक काफी देर हो चुकी थी। हमारी फौज जब हरकत में आई उस समय तक कारगिल और द्रास की ऊंची चोटियों पर घुसपैठिए पूरी तरह अपने पैर जमा चुके थे अन्यथा उन्हें खदेड़ने में न तो इतना समय लगता और ना ही इतनी संख्या में हमारे सैनिकों को अपनी जान गंवानी पड़ती। पाकिस्तान की फितरत से वाकिफ होने के बावजूद उसकी दोस्ती पर भरोसा कर लेना भारत की भूल ही कही जाएगी, जिसका खामियाजा उसे सैकड़ों सपूतों की कीमती जान देकर चुकाना पड़ा। अब तो इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि घुसपैठियों में पाक सेना के जवान भी शामिल थे। पाक अधिकृत कश्मीर के प्रधानमंत्री **सुल्तान अहमद चौधरी** ने घुसपैठियों को हर प्रकार की सहूलियतें दी और भारतीय सीमा में घुसने के रास्ते और तौर तरीके भी बताए। भारत के प्रति पाकिस्तान के द्वेष और नफरत का अदांजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने जंग के मैदान में ध्वस्त बमवर्षक विमान मिग-21 के घायल भारतीय पायलट **अजय आहूजा** की गोली मारकर हत्या कर दी और युद्ध के दौरान लापता हुए जिन जवानों की लाशें भारत को सौंपी उनके जिस्म पर उन्हें घोर यातना दिए जाने के सुबूत मौजूद थे। यह जिनीवा प्रस्तावों का घोर उल्लंघन है जिसमें कहा गया है कि युद्धबंदियों की हत्या नहीं की जा सकती और न ही उनके साथ दुर्व्यवहार किया जा सकता है।

दूसरी ओर भारत सरकार ने कारगिल युद्ध की अवधि में जिस संयम और धैर्य का परिचय देकर विध्वंसक युद्ध में जाने से रोका, वह काबिले तारीफ है। हलाकि यह भी सच है कि भारत के बहुत से लोगों ने यह कहना प्रारम्भ कर दिया था कि इस बार हमारे सैनिकों को पाकिस्तानी सेना से आर-पार की लड़ाई लड़ लेनी चाहिए। खैर ऐसा नहीं होना भी अच्छा रहा। पाकिस्तान को भी अगर पूरी तरह जलील होकर घुटने टेकने पड़े तो इस का श्रेय न केवल पश्चिम की महाशक्तियों के दबाव को जाएगा वरन हमारे भारतीय सैनिकों की सूझबूझ तथा उनकी वीरता को भी जाएगा जिसके लिए वे हार्दिक बधाई के पात्र हैं। उन वीर सपूतों पर हमें नाज है तथा जिन वीर जवानों ने अपनी कुर्बानी देकर मातृभूमि की रक्षा की उन्हें शत्-शत् नमन।

कारगिल युद्ध के बाद हमारे सिर पर चुनाव युद्ध आ धमका। सत्ता हथियाने तथा कुर्सी की इस दौड़ में राजनीतिक दल एवं उसके नेता चुनाव की अवधि में कारगिल प्रकरण को क्या राजनीतिक रंग न देंगे ? क्या नेताओं की संवेदनहीनता और संज्ञा शून्यता के कुछ उदाहरण देखने को नहीं मिलेंगे? अनर्गल प्रलाप करते हुए हमारे नेता यह भी भूल जाएंगे कि उनके बयानों एवं हरकतों को उन परिवारों के लोग भी देख या सुन रहे हैं जिनके बेटों, पतियों, भाइयों ने कारगिल युद्ध में कुर्बानियां दी। यही नहीं, युद्ध में घायल सैनिक भी इस राजनीतिक कलाबाजी को देखें-सुनेंगे, जिन्होंने जान हथेली पर रखकर अपने वतन की रक्षा की। कैसा लगेगा उन्हें यह सब देख-सुनकर?

यदि चुनाव के दौरान पक्ष-विपक्ष तरह-तरह के अनर्गल अलाप बघारते रहे, एक-दूसरे पर छिंटाकसी करते रहे तो यकीनन यह कारगिल के शहीदों का अपमान होगा तथा पूरे देशवासियों को, जिन्होंने इस युद्ध के दौरान अपनी एकजुटता का परिचय दिया उनके दिलों को ठेस अवश्य पहुंचेगा। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि सभी राजनीतिक दल एवं उसके नेता और कार्यकर्त्ता प्रजातान्त्रिक मूल्यों-मर्यादाओं के तहत चुनावी प्रक्रिया को अपनाएं तथा एक स्वस्थ परम्परा का निर्वाह करें, यही समय का तकाजा है।

-सिद्धेश्वर

कितने राजनेताओं और अधिकारियों की औलादें फौज में हैं ?

❑रियर. एयरमार्शल एम.एस. बाबा

कितने नेताओं और नौकरशाहों के बेटे फौज में हैं ? नौकरशाहों के बेटे तो विदेश में पढ़ते हैं और फिर मल्टीनेशनल्स में ऊंची तनख्वाहों पर नौकरी करते हैं। नेताओं के बेटे सियासत करते हैं।.. फौज में कौन जा रहा है ? मिडिल क्लास और गरीब घरों के बेटे। ऐसी सूरत में जो लोग देश चला रहे हैं, उनका देश की हिफाजत करने वाली फौज के साथ रिश्ता जुड़े भी तो कैसे ?

यह बड़े दुख की बात है कि तपते रेगिस्तान में और खून तक जमा कर रख देने वाले लेह-लद्दाख और कारगिल जैसे इलाकों में सरहद की सुरक्षा के लिए तैनात जवान के परिवार को अपने बच्चों के स्कूल में दाखिले के लिए मुसीबतें उठानी पड़ती है, राशन कार्ड तक बनवाने के लिए उससे रिश्वत मांगी जाती है। यह हकीकत है, एक कड़ी हकीकत।

इस मुल्क की ट्रेजडी यही है कि जंग के समय तो हम फौजी को सिर आंखों पर बैठाते हैं लेकिन जंग के बाद उसे भुला देते हैं। उसे तब हम कहीं कोई 'प्राथमिकता' नहीं देते। रोजमर्रा के अपने छोटे-छोटे कामों के लिए भी उसे सरकारी दफ्तरों के चक्कर पर चक्कर काटने पड़ते हैं। सच कहूं तो मुल्क को अपना यह 'रवैया' बदलना होगा। सेना का मनोबल तभी कायम रह पाएगा।

आपको एक छोटा सा उदाहरण दूं। मैं पिछले एक साल से अपने मकान को **'फ्री होल्ड'** कराने के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण के चक्कर लगा रहा हूं। फीस जमा कर चुका हूं, पर काम अटका हुआ है। जानते हैं क्यों ? वहां बैठे दलाल मुझसे भी रिश्वत चाहते हैं। अब जब यह सलूक मेरे साथ है, जबकि मुझे लोग जानते हैं तब आप खुद ही सोच लीजिए कि आम जवान के साथ इन 'बाबुओं' का क्या रवैया रहता होगा।

मुझे एक खतरनाक संकेत भी दिखाई देता है। फौज में केवल मिडिल और लोअर क्लास (आर्थिक व सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से) के बच्चे जा रहे हैं और अपर क्लास अपने बच्चों को सुविधा की सुरक्षित नौकरियों में भेज रहा है। इस तरह फौज और इनके बीच एक गहरी खाई बनती जा रही है। यह खाई भविष्य में कभी खतरनाक भी हो सकती है। इसे पाटा जाना चाहिए और समाज के हर वर्ग का फौज से सीधा रिश्ता बनना चाहिए।

अजीब बात है देश चलाने वाले नौकरशाहों की ट्रेनिंग मसूरी में होती है और फिर वे ताउम्र एयरकंडीशंड कमरों में बैठे रहते हैं। वे क्या जानें कि फौज कैसे रहती है, कहां रहती है। इन नौकरशाहों की ट्रेनिंग कारगिल और राजस्थान के रेगिस्तानों में होनी चाहिए ताकि वे भी फौज को जान सकें।

अब देखिए, रक्षा मंत्रालय में एक आई.ए.एस. अधिकारी सचिव होता है। एक ऐसा आदमी जिसे फौज की एबीसीडी तक कुछ पता नहीं होता। उसके सामने एक लड़ाकू विमान खड़ा कर दो तो वह यह भी नहीं बता पाएगा कि इसका पहला सिरा कहां है और आखिरी कहां। वह आदमी रक्षा मामलों पर सबसे ताकतवर नौकरशाह होता है। अपनी तनख्वाह खुद बढ़ा लेने वाले यही बाबू लोग फौज की तनख्वाह बढ़ाने के प्रस्तावों पर अड़ंगा लगाते हैं। **यह है अंदर की तस्वीर।**

1971 की लड़ाई के हमारे कुछ जवान अभी तक पाकिस्तान के पास हैं। वे कहां हैं, कैसे हैं? यह जानने तक की तकलीफ यहां हमारे नेताओं और नौकरशाहों ने नहीं की। अब कारगिल की लड़ाई के जवानों को लेकर इधर देख रहा हूं कि काफी **'लिप सर्विस'** हो रही है। लेकिन सच यही है कि यह नेता और नौकरशाह इन जवानों को भी भूल जाएंगे, जिस तरह 71 के युद्ध के जवानों को भूल गए। यह रवैया खतरनाक है और इससे सेना के मनोबल पर सीधा असर पड़ता है।

प्रस्तुतिः अमिताभ अग्निहोत्री

सृजनहारों से

- रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किये जाने का प्रयास रहेगा।
- रचना एक तरफ टंकित या स्पष्ट लिखी होनी चाहिए। रचना के अन्त में उनके मौलिक, अप्रकाशित तथा अप्रसारित होने के प्रमाण-पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें।
- रचना के साथ पासपोर्ट/ स्टाम्प आकार की रचनाकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियां अवश्य संलग्न करें।
- यदि आप अस्वीकृत रचना वापस चाहते हैं तो कृपया अपना पता लिखा, डाक टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें।
- रचना भेजते वक्त यह अवश्य देख लें कि लिफाफा पर आवश्यक डाक टिकट लगे हैं या नहीं।

संपादकः राष्ट्रीय विचार पत्रिका

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001, दूरभाष-0612-228519

कैसे होगा भ्रष्टाचार पर नियंत्रण

अधिवक्ता श्रीराम पंचू के तेरह सुझाव

❑गुलाबचन्द कोटडिया

एक घर में 50 साल से अगर लोहे का पानी का पाइप लगा है तो जंग से उसमें छेद हो जायेगा। लोहे का गुणधर्म है जंग जकड़ना। उन छेदों को अगर बंद करना चाहें तो भी लम्बे समय तक एम सील या कोई लुगदी या विशेष पेस्ट उपयोगी सिद्ध नहीं होगा और न रिसाव रुकेगा। उसे तो बदलने से ही काम होगा।

पाइप तो एक प्रतीक है। हमारे भारतीय कानून भी ऐसे ही हैं। विशेषकर भ्रष्टाचार रूपी पाइप में इतने छेद हैं कि न तो केन्द्रीय जांच ब्यूरो, न आर्थिक एन्फोर्समेंट, न मुख्य सतर्कता आयुक्त न लोकपाल उसे रोक सकेंगे। जैन हवाला केस का कितना बवाल उठा। उच्च स्तर पर रिश्वत के केस कितने सामने आए परन्तु दिनांक 18/12/97 के फैसले से सब टांय-टांय फिस्स हो गए। डायरियों में बंद आंकड़ों को कोर्ट ने माना ही नहीं अब कोई घूस देता है तो इतना तो वह भी ख्याल अवश्य रखेगा कि नाम बदल कर रकम लाख या करोड़ के बदले एक या दो रुपये ही लिखेगा। श्री सुखराम व श्री लालू जी की डायरियों का भी यही हाल होने वाला है। रकम के बदले लिटर दूध न्यायालय पक्के सबूत के तौर पर हरगिज नहीं मानेगा। ऐसी हालत में व्यापारी जो दो नंबर का धंधा अपनी डायरियों में करते हैं उनका क्या होगा ?

भ्रष्टाचार के मामले सी०बी०आई०, ई०डी और जिस विभाग के अंदर आते हैं उसके सर्वेसर्वा भी वही मंत्री व सरकारी अफसर ही होते हैं जो स्वयं भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। राजनीतिक दखलंदाजी ही प्रजातंत्र व प्रशासन की सबसे बड़ी कमजोरी है। निजी या अपने दलगत स्वार्थ के लिए उच्चस्तरीय दबाव पड़ने से ये दोनों संस्थाएं स्वतंत्र रूप से काम नहीं कर पाती हैं और रिपोर्ट दबा दी जाती है।

सड़े पाइप को बदलना ही होगा यानी अब जितने भी घर बन रहे हैं वहां कठोर प्लास्टिक के पाइप लगाए जाते हैं। उसमें जंग लगने का डर नहीं होता। मतलब कानून को बदलना होगा और संविधान के अनुच्छेदों में सुधार करना होगा। मात्र अध्यादेश जारी करने से क्या होगा। उस पर कोर्ट में स्थगन आदेश भी लोग लेने की कोशिश करेंगे। इन कानूनी कमियों को दूर करने व छिद्रों को कैसे बंद किया जाए। इसके बारे में **मद्रास उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री श्रीराम पंचू ने तेरह सुझाव दिए हैं जो अत्यंत ही विचारणीय हैं।** साभार प्रस्तुत कर रहा हूं।

1. **जांच संस्थानों को स्वतंत्रता दी जाए।** उन पर अंकुश न लगाया जाए। राजनीतिक व सरकारी अफसरों की दखलंदाजी को रोका जाए क्योंकि भ्रष्टाचार के केसों में उनके व अभियुक्तों के संबंध पाए जाते हैं। जांच संस्थाएं पक्षपातरहित रह कर काम कर सके ऐसा स्वतंत्र वातावरण पैदा किया जाए।

2. प्रमुख पदों पर विराजे महानुभाव जो सांसद, विधान सभा सदस्य, पब्लिक सर्विस कमीशन, सेनाओं के सेनापति व उच्च, अफसर और न्यायाधीश के जांच के दायरे में नहीं आते उन पर केस चलाने हों तो उनके उच्च अधिकारियों व विभाग की अनुमति लेनी पड़ती है। मुख्यमंत्री या राज्यपाल से अनुमति लेना कठिन होता है जैसा कि उत्तरप्रदेश व बिहार में हुआ और अगर अनुमति मिलती भी है तो देर से। न्यायाधीशों को भी दायरे में लाना दुर्भाग्यपूर्ण होगा परन्तु जस्टिस आलीवर वेंडेल होम्स के शब्दों में हमारे पुराने अनुभव व समय की आवश्यकता को देखते हुए इन्हें भी ले लेना चाहिए। उन पर भी रिश्वत के आरोप लगते रहते हैं।

3. सरकारी कर्मचारी व अफसर के लिए नौकरी में प्रवेश के समय ही अपने व अपने रिश्तेदारों के जेवर, धन राशि, सम्पति व आय की घोषणा अनिवार्य कर देनी चाहिए नहीं तो पकड़े जाने के बाद हजारों बहाने व पुश्तैनी संपत्ति बता दी जाती है जिसको बेनामी साबित करने में मुश्किलें पैदा हो जाती है।

4. अभियोजन सरकारी वकील के अधीन व नियंत्रण में होती है। वे सवतंत्र नहीं होते। कोई सरकार बदलती है तो वह अपने हितार्थ कम विश्वसनीय व अक्षम अपने लोगों को नियुक्त कर पुरानों को बदल देती है।

अपराधी केसों में सरकार को ही अपराध सिद्ध करना होता है। उसके लिए सबूत उसे ही जुटाने होते हैं। अधिकांश केसों में वे हाजिर ही नहीं होते और उक्त केस में स्वयं की रूचि हो तो ढीला कर केस का दम तोड़ देते हैं। अनधिकृत मकानों के केस कोर्ट में दाखिल तो कर देते हैं मकान मालिक स्थगन आदेश ले लेते हैं। फिर वे केस चलते ही नही हैं क्योंकि सरकारी अभियोजन पक्ष को उसमें कोई रूचि होती ही नहीं है। प्राइवेट क्रिमिनल केस भी सरकार ही लड़ती हैं सरकारी वकील को क्या पड़ी है जो व्यक्तिगत नागरिक के लिए लड़े। पेशियों पर पेशियां पड़ती है और निरस्त कर दी जाती है।

5. किसी विधान सभा के सदस्य पर केस चलाना हो तो राज्यपाल की अनुमति आवश्यक होती है। इससे देरी होती है। राजनीति राज्यपाल भवन के बाहर ही नहीं, अंदर तक चली जाती है।

6. भ्रष्टाचार के केस में संवैधानिक मौलिक अधिकार व प्वाइंट ऑफ ला न्यायालयों से अपील, डिवीजन बेंच, सुप्रीम कोर्ट तक प्रसिद्ध वकील खींच ले जाते हैं। इस बीच शासकीय दल बदल जाते हैं और जनता की अदालत के नाम पर सारे केस खारिज कर दिए जाते हैं यह कहकर कि देश या प्रदेश हित में नहीं है। कानून का भंवर जाल ही इतना जटिल होता है।

7. निचले कोर्टों में केस चलते हैं और अपीलों पर अपील लम्बित हो जाते हैं। उपरी अदालतों में इतने केस होते हैं कि भ्रष्टाचार के केस सुनने के लिए समय नहीं है, न वे संपूर्ण ध्यान दे पाते हैं।

8. भ्रष्टाचार के केस निपटाने की समय सीमा नहीं होती।दिन व दिन सुनवाई नहीं होती, लंबी-लंबी पेशियां पड़ती हैं।

9. पब्लिक फंड जनता का पैसा या संपति दबाकर बैठे अभियुक्त मौन धार लेते हैं और अभियोगों का जवाब ही नहीं देते।

10. सबूत की परिभाषा तो वही है जो क्रिमिनल केसों में होती है। कई देशों ने इस विषय पर छूट ले रखी है। अपराध साबित करने के लिए अभियुक्त को भी अपराध का सबूत पेश करने की छूट मिलनी चाहिए।

11. कोर्ट में केस चलते समय अभियुक्त अपने सरकारी पद पर बना रहता है। वह साक्ष्यों को प्रभावित करता है अत: उन्हें अस्थाई कुछ समय के लिए सस्पेंड कर देना चाहिए।

12. जिन्हें दण्ड न मिला हो और मात्र अभियोग-पत्र ही दाखिल हुए हैं वे चुनाव में खड़े हो सकते हैं और पद पर भी बने रह सकते हैं। उनके केसों के निपटारे होते नहीं । उनका एक ही नारा है न्याय को अपना काम करने दो। यह कानून प्रक्रिया अभियुक्त के लिए बहुत ही अधिक सुविधाजनक व आरामदायक है।

13. सजा व दण्ड सुना देने के बाद उससे सम्पति जब्त व वसूल करने की लंबी प्रक्रिया होती है अगर संपति बेनामी नाम से खरीदी गई हो गई हो। इस प्रकार इकट्ठी की गई धन राशि उसकी कई पीढ़ियों तक चलती है क्योंकि उनका रूतबा व पहुंच उच्च राजनीतिक संबंधों तक होती है।

उपरोक्त मुद्दों के कारण भ्रष्टाचार के केस लुंजपुंज न्यायिक प्रक्रिया के कारण अभियुक्त बेदाग छूट जाता है। इन्हें सजा नहीं मिलती इसीलिए कानून में फेरबदल जरूरी है। अगर सरकार कानून को सख्त करने के प्रति गम्भीर है तो उसे कानून आयोग के द्वारा भ्रष्टाचार के विरूद्ध कड़े कानून बनाने होंगे। आयोग की अध्यक्षता ईमानदार स्पष्ट छवि वालों को दी जाए और उसके सदस्य चरित्रवान व बेदाग रिकार्ड वाले हों।

यह काम संसद का है जो गंभीरता व ईमानदारी से कानून बनाए व अमल में आए।❑

संपर्क: 469, मिन्ट स्ट्रीट, चेन्नै-600079

कारगिल युद्ध में मातृभूमि की रक्षा के लिए, जिन वीर सपूतों ने शहादत दी उन्हें रा.वि. पत्रिका परिवार की ओर से शत् शत् नमन और उनकी स्मृति को श्रद्धा सुमन।

-प्रधान संपादक

अमर जवानों हमें आप पर गर्व है

स्क्वा.अजय आहूजा

लेफ्टि०सौरभकालिया

ले.कर्नल आर. विश्वनाथन

कैप्टन पी.वी. विक्रम

मेजर मनोज तलवार

शहीद बच्चन सिंह

रायफलमैन जसवीर सिंह

सूबेदार भंवरलाल

सूबेदार सुमेर सिंह राठौर

मेजर विवेक गुप्ता

लेफ्टिनेंट हनीफुद्दीन

रायफलमैन रणवीर सिंह जाट

शत् शत् नमन

स्मृति को श्रद्धा सुमन

आपकी शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी

नायक चमन सिंह

नायक सुरेंद्र सिंह

मेजर राजेश अधिकारी

मेजर मारियप्पन

कैप्टन अमोल कालिया

स्क्वा. आर.पुंडीर

पायलट एस.मुहिलन

फ्ला.इंजी.एस.के.साहू

गनर पी.वी.एन.आर.प्रसाद

हवलदार यशवीर सिंह

सूबेदार हरफूल सिंह

रायफलमेन मंजीत सिंह

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा

लघु कहानी

'मायके का सुख'

❑ राजेन्द्र प्रसाद'मधुबनी'

''हे ये लीजिए---।'' प्रोफेसर प्रशांत चौरसिया की पत्नी रीता चौरसिया ने दवा फेककर कहा।

''प्रोफेसर सुधांशु ने दवा दिया और तुम फेक दी। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। इनका दावा है कि इस दवा को खाकर बीस में से बीस मरीज इनके द्वारा ठीक हुआ है। क्या तुम इक्कीसवां ठीक नहीं होगी.......?'' आंखें दिखाते हुए प्रोफेसर प्रशांत चौरसिया ने अपनी पत्नी रीता चौरसिया से कहा था।

हमेशा इधर-उधर की एक-दो पैसे की दवा लाते रहते हैं। छह महीने से मैं अंदर-ही-अंदर बीमार हूं। शरीर गलता जा रहा है और अच्छे डाक्टर से दिखाने के बदले में चुपपुटिया दवा ला देते हैं, मैं मर जाऊंगी तब अच्छा लगेगा। अभी कुछ दिन और मौज कर लें......।'' रीता अपने में मग्न हो, अपना दुखरा सुना रही थी।

''बहुत बोलने लगी हो....। अब शांत भी हो जाओ। नहीं तो....।'' प्रोफेसर प्रशांत चौरसिया दांत-कीचते हुए कहा था।

''नहीं तो क्या.....? ज्यादे-से-ज्यादे मार देंगे यही न और क्या कर सकते हैं....? शादी हुए तीन साल बीत गये हैं आपने क्या लाकर दिया है ? एक बेचारे सास-ससुर जी हैं जो किसी तरह हमारी आवश्यकता को पूरा करते रहते हैं, नहीं तो आपके भरोसे रहती तो बिना कपड़े का घूमा करती.......।'' आज रीता चौरसिया अपने मन में दबे गम को उड़ेलने में लग गयी थी।

''चुप रहती हो कि नहीं.....।'' आंखे दिखाते हुए प्रशांत चौरसिया कहा था।

''चुप रहूं.......? मैं ही थी जो आपके साथ रह गयी, दूसरी कोई रहती तो कब का छोड़कर चली गयी रहती......।''अपने आप पर घमण्ड करते हुए रीता चौरसिया बोली।

''तो तुम अब भी छोड़कर चली जाओ.....।

मैं वित्तरहित कालेज का प्रोफेसर, एक पत्रिका-से-दूसरे पत्रिका में भटकता पत्रकार तथा स्वतंत्र रूप से कहानी, लेख व फीचर्स लिखकर तुम्हें क्या दे ही सकता हूं......?'' प्रोफेसर प्रशांत चौरसिया अपनी मजबूरी बतलाते हुए स्पष्ट करने लगे थे।

''ऐसा था तो शादी क्यों किये.....?'' रीता चौरसिया उलाहना देते हुए बोली।

''मैं शादी की बातें पक्की होते समय तुम्हारे बड़े भाई से स्पष्ट कहा था कि अगर आपकी बहन हमारे कार्यों में मदद करते हुए माता-पिता की सेवा करने की क्षमता रखती हों तो शादी करें नहीं तो मैं **'पागल'** तक का एक्टिंग भी कर लूंगा। अगर मेरी पत्नी इस लायक नहीं रहेगी तो आपकी बहन जीते-जी मर जायेगी।'' प्रोफेसर प्रशांत चौरसिया शादी से पूर्व की यादों में खो गये थे।

''क्यों झूठ बोलते हैं? अगर ऐसा बोले रहते तो कभी हमारा भाई शादी नहीं होने देता, वह भी एक बोलिया हैं....।'' अपने भाई जी की बेइज्जती को सह नहीं सकी और उनके गुणों का बखान करने लगी।

''...तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूं ? क्यों नहीं कभी अपने भाई जी से पूछ लेती हो......? ऐसा क्यों नहीं कहती कि जब मैं शादी में दहेज के नाम पर एक पैसा की मांग नहीं किया था, यहां तक कि शादी में अपना कपड़ा तक खुद के पैसे से खरीदकर मंदिर तक में शादी करने की बातें कही और मेरे पिताजी एकलौता बेटा के मोह में सभी कुछ स्वीकार कर लिये तो तुम्हारे पिता और भाई यों चिपक गये जैसे अनमोल खजाना छूट न जाये। उनसे छह महीने का भी इंतजार नहीं किया गया। अगले सप्ताह ही शादी करने का दिन तय करने पर जोर देने लगे थे। उस समय उन्हें लग रहा था कि एक एम०ए० पढ़ा लिखा प्रोफेसर, लेखक, पत्रकार जैसा हीरा लड़का जिसका बिना दान-दहेज की शादी की बातें सुनकर कौन बेटी वाला लपक न लें ? ऐसा लड़का हाथ से छूट न जाय। उस समय लोभ व लालच में अंधा होकर भूल गये कि मैंने अपने बराबर के अपने कार्यों में मदद करनेवाली लड़की की मांग की है। वे तेरी जैसी अनपढ़ लड़की को मेरे गले में मढ़कर अनमेल शादी के बाद हाथ झाड़कर किनारे हो गये। ''प्रशांत चौरसिया ने कहा–।

रीता चौरसिया तनकर सीधी होती हुई बोली, ''क्या मैं अनपढ़ लड़की हूं। घर का कौन सा कार्य नहीं करती हूं बोलिये-----?''

''घर का कार्य तो नौकरानी सोकरीवाली भी करती है उसमें और तुममें क्या अन्तर है? क्या वह मेरी पत्नी बनकर रहने, घूमने-फिरने लायक है ? तुमसे थोड़ी सी ही तो प्रत्येक मायने में कम दिखती है----।'' प्रोफेसर प्रशांत चौरसिया ने अपनी पत्नी रीता चौरसिया को अपनी औकात दिखाने के ख्याल कहा।

''मैं आपके ऊपर भारी हूं तो मुझे मायके पहुंचा दें लेकिन इस तरह मुझे बेइज्जत नहीं करें----।'' रुआंसे चेहरा करके रीता चौरसिया बोली थी।

मैं कहां बेइज्जत कर रहा हूं। बेइज्जत तो तुम मुझे कर रही हो। अगर मेरी सोंच ऐसी रहती तो कब का मैं तुम्हें घर से निकाल दिया रहता, बहाना तो हजार मिल जाते। वैसे मेरी जितनी औकात है उस स्तर से तुम्हारा इलाज करा रहा हूं। वह तुम्हें पसंद नहीं है और मायके के धन-दौलत व वैभव पर घमंड करके इसका तिरस्कार करती हो। परहेज से दवा खाओगी तो कोई दवा बुरी नहीं हैं। अगर तुम्हारे मायके वालों को तुम्हारी जरा सी भी चिंता रहती तो इस अनमेल विवाह को नहीं करते। जब शादी कर ही दिये और अब जब दयनीय स्थिति देख रहे हैं तो तुम्हें भी अपने समकक्ष बनाने के लिए खुशी-खुशी इतना दे देते कि आज के कष्ट का आभास तक नहीं होने देते। अब तुम इस बात पर गौर करके अपने दिल में झांको कि तुम जिस **मायके की सुख** कि याद में हमेशा पड़ी रहती हो और मुझसे लड़ती-झगड़ती हो, वास्तव में मायके का सुख कहां है.....?''

संपर्क : फ्रेण्ड्स कालोनी, मधुबनी, बिहार

खैर !!!

❑ अशोक जोशी

था तो वह पढ़ा लिखा विद्वान, पर संयोग से ज्यों जन्म लेने के लिए उसे बेहतरीन मुहूर्त्त न मिल पाया था, उसी तरह जिस 'यूनिवर्सिटी' से उसने 'डिग्री' ली, इतनी अच्छी व ऊंची मिली कि तदनुसार वह न पा सका और अंत में किसी ग्राम में शिक्षक की **'सर्विस'** ही उसे स्वीकृत करनी पड़ी। खैर !

वहां भी, एक ही संस्था में बीस साल तक निष्ठा पूर्वक शिक्षक के रूप में सेवाएं देने के पश्चात् जब **'प्रिंसिपल'** का स्थान रिक्त हुआ और 'सिनियर मोस्ट' होने के कारण जब उसने-कुछ छोटी-सी तरक्की समझ उस स्थान को प्राप्त करने के दृढ़ प्रयत्न किये, तब भी उसे हताशा ही हाथ लगी। खैर !! पर हृदय विदारक तीव्र आघात उसे तब हुआ, जब 'प्रिंसिपल' के उस रिक्त पद पर और कोई नहीं, उसका अपना ही भूतपूर्व विद्यार्थी नया 'प्रिंसिपल' बन कर आया। और तो और पहले कभी जो उसके चरण-स्पर्श करता था, उसी ने आज शान से उससे हाथ मिलाया ! मन मसोसकर चूर-चूर हो गया उसका भीतरी शिक्षकत्व पर उसने बड़े धैर्य से धीरे से अपने आपको कहा-'मैं अपने 'प्रिंसिपल'का गुरु हूं... खैर !!!

संपर्क-संपादक, 'युगचिन्तन' (गुजराती)
मजेवडी, जूनागढ़, गुजरात

राजनीतिक गठबंधन का बदलता परिदृश्य

❑ सिद्धेश्वर

निर्वाचन आयोग द्वारा 13 वीं लोकसभा चुनाव के लिए तिथि की घोषणा के साथ ही राजनीतिक दलों में पैतरेबाजी बढ़ गयी है। सत्ता हथियाने की दौड़ में राजनीतिक गठबंधन बनने और बिगड़ने प्रारम्भ हो गए हैं। जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आता जा रहा है लोकसभा के 543 सीटों के लिए हो रहे चुनाव में कुर्सी पाने की लालसा से प्राय प्रत्येक राजनीतिक दल और उसके नेता सिद्धान्तों को ताक पर रखकर एक दूसरे से साठ-गांठ करना शुरू कर दिए हैं।

सोनिया गांधी के विदेशी मूल को लेकर हुए विवाद के कारण कांग्रेस से निष्कासित नेता शरद पवार, पी०ए० संगमा तथा तारिक अनवर के नेतृत्व में **राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक कांग्रेस** का गठन किया गया जिस का साथ दे रहा है मुलायम सिंह यादव का **समाजवादी पार्टी** तथा महाराष्ट्र का **रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इन्डिया**। भाजपानीत **राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन** से अपना सम्बन्ध विच्छेद करने के पश्चात् सुश्री जयललिता ने कांग्रेस का दामन थामा है तथा **तमिल मनीला कांग्रेस** ने हारकर पुन: अन्नाद्रमुक की सुप्रीमों सुश्री जया के आंचल की छांव का सहारा लिया है। पर बने-बनाए मकान को ध्वस्त करने तथा राजनीतिक तिकड़मबाजी के लिए मशहूर **जनतापार्टी के सुब्रह्मण्यम स्वामी** का सुश्री जयललिता से 36 का रिश्ता हो गया है। देखना यह है कि स्वामी जी अब किसकी नैया को डूबोने की सोच रहे हैं। बिहार में एकछत्र राज कर रहे **लालूजी** ने अपनी **राजद** की तकदीर कांग्रेस के साथ बांध दी है क्योंकि उन्हें बिहार में राष्ट्रपति शासन लागू न होने देने के लिए कांग्रेस की वफादारी को निभानी है।

इधर हाल में राजनीतिक गठबन्धन में एक बड़ा भूचाल जो आया है वह है **जनता दल** की टूट। वैसे सच कहा जाय तो जद में अब तक कई टूट हो चुके हैं और हर बार की टूट से वह पार्टी कमजोर होती गयी है। पर ऐसा लगता है कि इस बार की टूट ने उसे कमजोर करने के बजाय मजबूत ही किया है क्योंकि भाजपा के दो सहयोगी दल-**समता पार्टी और लोकशक्ति** अपना अस्तित्व समाप्त कर शरद यादव के नेतृत्व वाले जनता दल में विलय कर लिया है। बावजूद इसके कि दोनों पार्टियां न केवल सत्तापक्ष में थीं बल्कि विलय की घोषणा की तारीख में ताकत और प्रभाव के हिसाब से जनता दल से आगे निकल चुकी थीं। यही नहीं, इस एकीकृत जनता दल ने भाजपा नेतृत्व के **राष्ट्रीय**

जनतान्त्रिक गठबंधन के साथ चलने का एलान कर सभी दलों को हैरत में डाल दिया है। दूसरी ओर इस एकीकरण के विरोध में खड़े जनता दल के लोग पूर्व प्रधानमंत्री एच०डी० देवगौड़ा की अध्यक्षता में अपना वजूद कायम रखा है। इस एकीकरण में मजेदार बात यह है कि कर्नाटक के मुख्य मंत्री जे०एच० पटेल ने राजग के साथ चलना स्वीकार कर विधानसभा को भंग करने की सिफारिश के बाद राज्यपाल से उन्होंने मंजूरी भी ले ली है। सनद रहे कि पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा के साथ वैसे भी उनके संबंध अच्छे नहीं चल रहे थे। इसलिए पटेल ने लोकशक्ति को लेकर अब एकीकृत जनतादल के साथ ही अपने भाग्य को आजमाना उन्होंने उचित समझा। हलांकि कर्नाटक के इस घटना-क्रम से वहां एच०डी० देवगौड़ा के साथ रह गए पूर्व सूचना एवं प्रसारणमंत्री जययाल रेड्डी, एस०आर० बोम्मई इधर जनता दल के दूसरे खेमे में हैं पूर्व रेलमंत्री रामविलास पासवान के साथ जद की पूरी बिहार इकाई तथा समतापार्टी के जार्ज फर्नांडीस, नीतीश कुमार और लोकशक्ति के रामकृष्ण हेगड़े।

चुनाव के पूर्व इस एकीकरण को एक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम के रूप में देखा जा रहा है क्योंकि आगे चलकर यह तीसरी शक्ति के रूप में उभर सकती है। यही कारण है कि सहयोगी दलों के इस कदम से भाजपा बहुत प्रसन्न नहीं दिखाई देती है और यह स्वाभाविक भी है क्योंकि भाजपा क्यों चाहेगी कि उसका सहयोगी दल मजबूत हो, भले ही अन्य छोटे दलों के साथ गठबन्धन कर वह स्वयं मजबूत होना चाहेगी। पिछले दिनों तथा आज भी सुश्री ममता की तृणमूल कांग्रेस तथा बरनाला की अकाली दल के साथ भाजपा गठबंधन को आखिर आप क्या कहेंगे। हलांकि यह भी सच है कि गत अप्रैल में जॉर्ज फर्नांडीस ने जद अध्यक्ष शरद यादव से मुलाकात कर भाजपा गठबंधन में शामिल होने का सुझाव दिया था जिसे अटल जी ने भी हरी झंडी दी थी। फिर भी उत्साह दिखाने के बजाय भाजपा नेता सहयोगियों के इस जमात से असमंजस में दिखाई दे रहे हैं। कर्नाटक के मुख्यमंत्री जे०एच० पटेल के कदम से भाजपा के शीर्ष नेता तो नाखुश हैं ही, भाजपा की बिहार शाखा भी अप्रसन्न है। ऐसा लगता है कि इस नए गठजोड़ से भाजपा की मुश्किलों का इजाफा होगा। सहयोगियों के बीच सीटों का तालमेल सरल नहीं होगा। फिर भी यह उम्मीद की जाती है कि **भाजपा बिहार और कर्नाटक दोनों जगह जनता दल नेताओं के लिए सीट छोड़ेगी क्योंकि यह चुनाव अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर भाजपा के द्वारा लड़ी जा रही है। इसलिए चुनावी रणनीति भी वाजपेयी ही तय करनेवाले हैं। राजनीति पूरी तरह वाजपेयी और जार्ज की पकड़ में है। कई चुनाव बाद वाजपेयी ने**

चुनाव के तालमेल और रणनीति को अपने हाथों में लिया है। और यह भी स्पष्ट है कि अटल जी ने भाजपा गठबंधन को व्यापक बनाने की योजना बनाई है।

जनता दल के इस नए गठबंधन से पूरा राजनीतिक परिदृश्य ही बदल गया है। जो जनता दल पिछले दिनों वाजपेयी सरकार के विश्वासमत के विरूद्ध मत देकर उसे सत्ता से हटाने का प्रयास किया, वह अब भाजपा वाले राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबंधन का अंग होगा। दरअसल जद के सामने भी यह मजबूरी इसलिए हो गयी कि तीसरी शक्ति के छिन्न-भिन्न होकर खत्म हो जाने के बाद इसके विभिन्न घटक दल अपनी सुविधानुसार कांग्रेस और भाजपा के खेमे की शोभा बढ़ाने लगे। ऐसी स्थिति में अलग-थलग पड़े रहने से तो अच्छा है कि किसी खेमे के साथ जुड़कर अपने अस्तित्व की रक्षा की जाय, सो जनता दल ने किया। जद से अलग होने के बाद समतापार्टी ने भी तो आखिर यही किया था। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए उसने भाजपा का दामन थामा था। यह बात दीगर है कि समता पार्टी के भाजपा गठबंधन में जाने से भाजपा भी संभल गयी जिसके परिणाम स्वरूप उसका सेहत भी ठीक हुआ। आज तक केन्द्र में भाजपानीत सरकार के चलने में भी समता पार्टी को बहुत श्रेय जाता है। इसलिए जनता दल का राजग में शामिल होना चकित नहीं करता। जो लोग यह कहते हैं कि जनता दल का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप नष्ट हो जाएगा, वह यह भूल जाते हैं कि वर्षो से भाजपा के साथ रहकर भी समता पार्टी तथा लोकशक्ति का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप कहां जा पाया। बल्कि सच तो यह है कि अटल जी के लचीलेपन तथा उदारवादी प्रवृति से उत्साहित होकर समतापार्टी तथा लोकशक्ति जैसे सहयोगी दल भाजपा का वैचारिक विष निकालने में सफलता पा ली है। आखिर तभी तो भाजपा के राममंदिर, समान नागरिक संहिता और धारा 370 जैसे मुद्दे धरे-के-धरे रह गए। जार्ज फर्नांडीस, नीतीश कुमार तथा रामकृष्ण हेगड़े ने भाजपा के इन मुद्दों को मानने से स्पष्ट इंकार कर दिया और देखा जाय तो प्रारम्भ से ही समता पार्टी के शीर्ष नेता भाजपा के साथ सैद्धान्तिक मतभेद की बात बराबर करते रहे हैं। एकीकृत जद ने भी यह स्पष्ट कर दिया है कि भाजपा की विचार धारा से समझौता नहीं किया जाएगा। वैसे भी भाजपा पर लगे साम्प्रदायिकता के दाग तथा राजनीतिक अछूतपन अब धीरे-धीरे खत्म हो रहा है क्योंकि बड़े पैमाने पर गैर साम्प्रदायिक दल उसके साथ जुड़कर भाजपा की रीति, नीति और सोच पर गहरा असर डाल रहे हैं। संभवत: अब एकीकृत जनता दल के बाद यह प्रक्रिया और तेज हो जाये जो भाजपा के कट्टर पंथियों के लिए दुखदायी हो।

ऐसा प्रतीत होता है कि भाजपा के बढ़ते कदमों को थामने की रणनीति के तहत जनता दल परिवार की एकता की गयी ताकि भाजपा को राष्ट्रीय स्तर पर चुनावी तालमेल के लिए दबाव दिया जा सके। हलांकि जार्ज फर्नांडीस ने स्पष्ट कहा है कि एकीकरण का उद्देश्य राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन को मजबूत कर लोकसभा चुनावों के वाद **अटल बिहारी वाजपेयी** के नेतृत्व में ऐसी सरकार बनाना है जिसे पिछले सवा साल के अनुभव नहीं झेलने पड़े। इस संदर्भ में गौरतलब है कि पिछले लोक सभा चुनाव में समता पार्टी और लोकशक्ति ने अपने जनाधार वाले राज्यों के अतिरिक्त अन्य राज्यों में भी उम्मीदवार खड़े करने का निर्णय लिया था पर भाजपा ने उनके जनाधार वाले राज्यों से बाहर हिस्सेदारी देने से स्पष्ट इंकार किया था। इसे मद्देनजर, संभव है 13 वीं लोकसभा के चुनावों में भाजपा पर दबाव बढ़ाने की रणनीति के तहत जद का यह एकीकरण महत्वपूर्ण हो। हलांकि एकीकृत जद के प्राय: सभी नेताओं ने साफ कहा कि विलय भाजपा को दबाव में लेने के लिए नहीं किया गया है। किन्तु इतना सत्य है कि भाजपा के लोग इसी को लेकर दुविधा में पड़ गए हैं। भाजपा का शीर्ष नेतृत्व यानि संघ परिवार बहुत बारीकी से समाजवादियों की इस राजनीतिक चाल को भांप रहा है क्योंकि वे उनकी शक्तियों को बढ़ने देना नहीं चाहते और उनकी शक्ति नदी की धारा की तरह जब स्थिर हो जाएगी तो सहयोगी दलों के अपने अस्तित्व खतरे में पड़ सकते है।

इन राजनीतिक दलों के बदलते पूरे परिदृश्य पर एक नजर डालने से एक बात और स्पष्ट नजर आती है और वह है **भ्रष्टाचार से जुड़े या आरोपित दलों का एक होना** और दूसरी ओर **उसके विरोध में खड़े दलों का एक मंच पर आना।** आप गौर करें **बोफोर्स तोप सौदे** की दलाली में फंसे कांग्रेस के साथ तालमेल किया **है तांसी भूमि घोटाले** से लेकर दर्जनों घोटाले में आरोपित अन्नाद्रमुक की अब्बल अम्मा सुश्री **जयललिता** और दुनिया भर में **चर्चित चारा घोटाले** में आरोपित तथा अदालत का दरवाजा खटखटाते राजद के सुप्रीमो **लालू प्रसाद**। यह पूरा परिदृश्य आपके सामने खुली किताब की भांति आ रहा है जिसे कोई भी पढ़ सकता है। ऐसी स्थिति में आम मतदाता कहां जाये, यह एक अहम् सवाल है। कोई भी चुनाव आम मतदाता को वक्त देता है अपने प्रत्याशियों को परखने का। इसलिए उसकी जबावदेही बढ़ जाती है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि मतदाता काफी सोच-समझकर, नेताओं के झांसे में न आकर अपने मत का इस्तेमाल चुनाव में करे ताकि सुयोग्य प्रतिनिधि संसद तथा विधान सभाओं में उनका प्रतिनिधित्व कर सकें। ❑

शरद गुट जद (युनाइटेड)और देवगौड़ा गुट जद (सेक्यूलर) जद (युनाइटेड) को **'तीर'** व जद (सेक्यूलर) को **'ट्रैक्टर चलाता किसान'** शरद के नेतृत्व वाले जनता दल अब जद (युनाइटेड) तथा देवगौडा गुट जद (सेक्यूलर) के नाम से जाने जाएंगे। चुनाव आयोग ने जद (युनाइटेड) को **'तीर'** चुनाव चिन्ह तथा जद (सेक्यूलर) को **'ट्रैक्टर चलाता किसान'** चुनाव चिन्ह प्रदान किया।

विहित हो कि इसके पूर्व आयोग ने जनता दल के चुनाव चिन्ह **'चक्र'** को दोनो गुटों में नाम तथा चुनाव चिन्ह को लेकर हुए विवाद का अन्तिम निर्णय होने तक जब्त कर लिया है। किन्तु दोनों दलों को राष्ट्रीय दलों के रूप में अस्थाई मान्यता दी है जो अगस्त से अक्टूबर, 1999 तक होने वाले आम चुनावों और उपचुनावों लिए ही होगी। राष्ट्रीय पार्टी की मीन्यता मिलने से दोनों दलों को विभिन्न सुविधाएं और लाभ उठाने की इजाजत मिल गयी है जिस में दूरदर्शन और रेडियों पर नि:शुल्क चुनाव प्रचार की सुविधा शामिल है। खैर? आयोग ने जो किया हो पर जद (युनाइटेड) को एक बार पुन: तीर मारने का मौका तो अवश्य मिल गया है।

रा०वि० प्रतिनिधि दिल्ली से

सुनील गावस्कर को महाराष्ट्र भूषण सम्मान

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर को 1998 के **महाराष्ट्र भूषण सम्मान** से पुरस्कृत हुए। पुरस्कार की पांच लाख रुपये की राशि **गावस्कर ने प्रधानमंत्री रक्षा कोष** के लिए समर्पित कर दी। इन्होंने सम्मान समारोह में कहा-राष्ट्र इन शहीदों के बलिदान को कृतज्ञता के साथ हमेशा याद करेगा।

महाराष्ट्र भूषण का पहला पुरस्कार 1996 में नाटककार पी०एल० देशपाण्डे को और दूसरा 1997 में स्वर कोकिला लता मंगेशकर को दिया गया था। गावस्कर इस पुरस्कार को पाने वाले तीसरे व्यक्ति हैं। सनद रहे कि यह पुरस्कार महाराष्ट्र के व्यक्ति को किसी क्षेत्र में उसकी जीवन पर्यन्त उपलब्धियों के लिए दिया जाता है।❑

-अजय कुमार, मुम्बई से

विश्व की तीसरी सबसे बड़ी रेल दुर्घटना

मानवीय गलती का एक निकृष्ट नमूना

रेल मंत्री नीतीश कुमार का इस्तीफा मंजूर

विगत 2 अगस्त की रात अवध-असम एक्सप्रेस और ब्रह्मपुत्र मेल की सीधी टक्कर की रेल दुर्घटना विश्व की अब तक की तीसरी सबसे बड़ी रेल दुर्घटना है। प०बंगाल के जलपाईगुड़ी स्टेशन से 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित गईसाल स्टेशन के पास हुई इस भीषण टक्कर में मृतकों की संख्या लगभग 500 तथा घायलों की संख्या 1000 बतायी जाती है।

दुनिया की सबसे बड़ी रेल दुर्घटना भी भारत में ही जून, 1981 को बिहार के बदलाघाट तथा धर्मघाट रेलवे स्टेशनों के बीच तूफान के कारण घटी थी जिसमें एक ट्रेन के नदी में गिर जाने से 800 से ज्यादा यात्रियों की मृत्यु हो गयी थीं 1989 में पूर्व सोवियत संघ के यूराल क्षेत्र में दो ट्रेनों के गुजरते समय एक गैस पाइप लाइन में विस्फोट से कम से कम 575 लोगों की मौत हो गयी थी।

बिहार के किशनगंज से 20 किमी की दूरी पर घटी इस बार की दुर्घटना का सबसे दुखद और आश्चर्य जनक पहलू यह है कि दो ट्रैक के होते हुए भी अवध-असम एक्सप्रेस के गलत ट्रैक यानी उसी ट्रैक पर दूसरी ओर से आती ब्रह्मपुत्र मेल से सीधी टक्कर हो गयी जो सरासर मानवीय गलती की वजह से हुई जिसे रेलवे प्रशासन की गिरती कार्य संस्कृति का परिचायक कहा जाएगा। रेलमंत्री नीतीश कुमार ने भी रेलवे की इस मानवीय गलती को स्वीकारते हुए उन्होंने इसकी नैतिक जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है तथा केन्द्रीय मंत्रिपरिषद से त्यागपत्र दिया। प्रधानमंत्री की अनुशंसा पर राष्ट्रपति जी ने रेलमंत्री श्री नीतीश कुमार का इस्तीफा स्वीकार कर लिया। उधर प०बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने कहा कि गैसल रेल दुर्घटना के लिए रेलमंत्री सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं हैं।

गौहाटी से दिल्ली जा रही ब्रह्मपुत्र मेल तथा दिल्ली से गौहाटी जा रही अवध-असम एक्सप्रेस की इस दुर्घटना की एक और दुखद पहलू यह है कि इसमें मरने वालों में 100 सेना व केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों के जवान शामिल हैं।❑

रा०वि० संवाददाता

पंचायती राज संस्थाओं को अधिकाधिक अधिकार से ही देश के ग्रामीण व गरीब सुदृढ़

प्रधानमंत्री वाजपेयी ने ग्रामीण विकास कार्यों में समाज का सक्रिय योगदान बनाने का आह्वान करते हुए स्पष्ट किया कि योजनाओं पर अधिक धन खर्च करने मात्र से गरीबी दूर नहीं हो सकती। इसके लिये जरूरी है कि पंचायती राज संस्थाओं को अधिक से अधिक अधिकार वाला बनाया जाये। जिला ग्रामीण विकास एजेंसियों के परियोजना अधिकारियों के एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पूर्व में हमारा यह सोचना सरासर गलत रहा है कि योजनाओं पर अधिक खर्च करने से ही गरीबी का उन्मूलन किया जा सकता है। वास्तव में हमनें ग्रामीण विकास कार्यों में लोंगों की भागेदारी को सशक्त बनाने की ओर ध्यान नहीं दिया।

उन्होंने कहा कि पूर्व की गलतियों से सबक लेकर हमारी सरकार ने इस दिशा में एक नये कदम की शुरूआत की है। पहली बार पंचायत और ग्राम सभाओं को अधिकार युक्त बनाने की दिशा में कदम उठायें हैं। ग्राम सभा एक ऐसा आधार है जिस पर तीन स्तरीय पंचायती राज प्रणाली टिकी हुई है।❑

ज्योति बसु को अब बुढ़ापा का अहसास

पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने कहा है कि बुढ़ापा और स्वास्थ्य कारणों से वे 13 वें लोकसभा चुनाव के बाद वह अधिक समय तक अपने पद पर नहीं बने रहेंगे। पिछले 22 वर्षो से लगातार मुख्यमंत्री पद पर बने रहने का रिकार्ड बनाने वाले श्री बसु ने कहा उनके उत्तराधिकारी के चयन में पार्टी को कोई दिक्कत नहीं आएगी।

उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर कहा कि परिवर्तन जरूरी है तथा युवाओं को जिम्मेदारी लेने के लिए आगे आना चाहिए। मार्क्सवादी नेता की बढ़ती उम्र की वजह से उनकी गतिविधियों पर असर पड़ा है। अब यह संभव नहीं कि दूसरे राज्यों में जाकर चुनाव प्रचार करें। कांग्रेस की आर्थिक नीतियों पर उन्हें एतराज है।❑

कमलेश कुमार, कलकता से

जद का राजग में विलय उचित -करूणानिधि

तामिलनाडु के मुख्यमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के प्रमुख घटक द्रविड़ मुनेत्र कषगम के अध्यक्ष एम. करूणानिधि ने आज कहा कि जनता दल के शरद यादव धड़े को गठबंधन में शामिल करने में कुछ भी गलत नहीं है। श्री करूणानिधि गठबंधन की घटक पार्टियां समता पार्टी और लोकशक्ति के जनता दल के शरद गुट में विलय और इसे गठबंधन में शामिल करने के दल के प्रयासों के संबंध में पत्रकारों के सवालों का जवाब दे रहे थे। ❑

केन्द्रीय कर्मचारियों को प्रोन्नति का लाभ

केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 12 और 24 साल की सेवा करने पर उन कर्मचारियों को दो वित्तीय लाभ देने का फैसला किया है जिन्हें अपने पूरे सेवा काल के दौरान पदोन्नति का अवसर नहीं मिला है। यह योजना केवल **'बी'**, **'सी'** और **'डी'** समूह के कर्मचारियों / अधिकारियों के लिए ही होगी। इससे लगभग 42 लाख कर्मचारियों को फायदा पहुंचेगा तथा राजकोष पर हर साल 64 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा।

-डा०मेदनी, दिल्ली से

दो डाक टिकटों की कहानी

भारत सरकार के द्वारा वैसे दो वीर सेनानियों की स्मृति को ताजा रखने के लिए दो डाक टिकट जारी किया जो भारत की आजादी की लड़ाई से जुड़े रहे। उनमें से एक टिकट **मराठा योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज की माता जीजाबाई की** याद में है जिसे भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने जारी किया। जीजा माता के नाम से मशहूर रही जीजाबाई शिवाजी के सिंहासनारूढ़ होने और मुगलिया सल्तनत के खिलाफ मराठाओं के पीछे लोमबंद होने के लिए मुख्य प्रेरणा स्रोत रहीं।

दूसरा टिकट दक्षिण भारत के जाने माने हस्ताक्षर पी.एस.कुमार स्वामी राजा के नाम पर जारी किया गया है। ❑

कर्नाटक का काबिनी रीवर लॉज

विश्व के पांच सर्वोत्तम जंगल रिसॉर्ट

ब्रिटिश पत्रिका 'टेटलर' ने कर्नाटक के **राबिनो रीवर लॉज** को विश्व के पांच सर्वोत्तम स्पोर्टिंग लॉज में स्थान दिया है। अन्य चार हैं-ह्यूफा लॉज(ताउयो, न्यूजीलैंड), लोंदोलोजी गेम रिजर्व(दक्षिण अफ्रीका), ओंगावा गेम रिजर्व(नामीबिया) और केप डेनाली(अलास्का)।

काबिनी ऐसी झील पर स्थित है जहां आप अहले सुबह पक्षियों के कलरव का आनन्द ले सकते हैं। यहां आप मछली पकड़ने के भी लुत्फ ले सकते हैं। यहां वाकई में इकोटूरिज्म की अवधारणा को सच साबित किया जा रहा है।

जंगल लॉजेज एंड रिजॉर्ट लि०, जिसके स्वामित्व में काबिनी है के कार्यकारी निदेशक विनय लूथरा के कथनानुसार 1998-99 में इस जंगल लॉज में 16 हजार पर्यटक आए। इनमें चार हजार पर्यटक विदेशी थे और 50 देशों से आए थे। ❑

-रा०वि०संवाददाता बंगलोर से

तांसी भूमि घोटाले में जया के खिलाफ आरोप तय

तामिलनाडु राज्य नियंत्रित लघु उद्योग निगम की सहायक कम्पनी तांसी इनमेल्ड वायर्स के भूमि सौदा विवाद में न्यायमूर्ति पी० अन्बझगन ने सभी अभियुक्तों की खुद को निर्दोष बतानेवाली जयललिता की अपील रद्द होने के बाद यह आरोप जया के खिलाफ तय किये। तांसी मामले की सुनवाई के समय अन्नाद्रमुक सुप्रीमो सुश्री जयललिता और अन्य अभियुक्त खचाखच भरी अदालत में मौजूद थे। आरोप पत्र के अनुसार 1992 के सितम्बर में पंजीकृत हुए इस सौदे में संबद्ध भूमि की कीमत आंकी जाने और इसके परिणामस्वरूप पंजीकरण शुल्क तथा स्टाम्प शुल्क में कटौती के कारण खरीददार को लगभग 66 लाख रुपये का लाभ दिया गया।

जयललिता और शशिकला के अतिरिक्त इस मामले में मंत्री मो० आसिफ, पूर्व उपजिलाधीश स्टेम्प्स एस० नागराजन और पूर्व मुख्य मंत्री कार्यालय में सचिव कर्पूरसुन्दर पांडियन शामिल हैं। सनद रहे कि इस तांसी मामले में जयललिता और शशिकला के साझी फर्म जया पब्लिकेशंस को तांसी की जमीन सस्ती दर पर उपलब्ध कराई गई थी।

-रा०वि०संवाददाता, चेन्नै ❑

सी.ए.जी. रिपोर्ट: बिहार की वित्तीय बदहाली का खुलासा

रा.वि. कार्यालय संवाददाता

बिहार विधान मंडल के पटल पर प्रस्तुत बिहार सरकार के वित्तीय वर्ष 1997-1998 के रिपोर्ट में भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक ने तीखी आलोचना करते हुए कहा है कि बढ़ता हुआ राजस्व घाटा एवं बदतर हो रही वित्तीय स्थिति बिहार के सकल कुप्रबंध का द्योतक है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 31 मार्च, 1998 को समाप्त होने वाले वर्ष के अंत तक जहां राज्य सरकार की परिसम्पतियां 18177 करोड़ रुपये की थी वहीं दायित्व 23610 करोड़ रुपये के थे। उल्लेख्य है कि बिहार के राज्यपाल न्यायाधीश बी.एम. लाल की सख्ती पर राज्य सरकार द्वारा प्रस्तुत सी.ए.जी. के रिपोर्ट में स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा व परिवार कल्याण, राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम, बिहार पठारी विकास कार्यक्रम , मगध विश्वविद्यालय, इन्दिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान तथा वनों के राजकीय व्यापार आदि शीर्षक से अलग-अलग वित्तीय कार्यकलापों पर सरकार की बखिया उधेड़ी गयी है और करोड़ों रुपये के गबन आदि का खुलासा किया गया है।

इस रिपोर्ट में पिछले विधान सभा व लोकसभा के चुनावों पर हुए खर्च चर्चित धोती-साड़ी योजना, निबंधन शुल्क आदि की अनियमितताओं पर बिन्दुवार खुलासा किया गया है।

बिहार में एक और दिलचस्प अनियमितता का भंडाफोड़ हुआ है और वह है बिहार विधानसभाध्यक्ष देवनारायण यादव के साथ-साथ पूर्व विधान सभाध्यक्ष गुलाम सरवर, शिवचन्द्र झा तथा हिदायतुल्ला खां द्वारा सरकारी वाहन का उपयोग करते हुए भी निजी वाहन भत्ता का माहवारी भुगतान लेने जैसी अनियमितता। महालेखाकार(लेखा परीक्षा)-1, बिहार, पटना के लेखा परीक्षा दल ने इसे गंभीर मामला मानते हुए भविष्य में कानूनी कारवाई तक होने की चेतावनी दी है।

इस संदर्भ में उल्लेख्य है कि बिहार विधानसभा के वर्तमान अध्यक्ष देवनारायण यादव ने इस अनियमितता का पर्दाफाश होने पर राज्य कोषागार से भुगतान ली गयी राशि 70 हजार रुपये से अधिक हाल में पुन: कोषागार में जमा कर इस अनियमितता की संपुष्टि कर दी है।

बिहार के विधायकों द्वारा रेलवे में नि:शुल्क होने का मामला भी प्रकाश में आया है जिसमें करोड़ों रुपये की वित्तीय अनियमितता उजागर होने का अनुमान है।

खजाना भरा पर योजनाएं गतिहीन

बिहार सरकार के खजाने में पैसे की कमी नहीं होने के बावजूद भी योजनाएं गतिहीन रही, इसका रहस्योदघाटन सी०ए०जी० के रिपोर्ट में किया गया है। तोप मांगो तो बंदूक मिलने की उम्मीद जैसी नीति अपनाकर राज्य सरकार ने केन्द्र से ज्यादा से ज्यादा आर्थिक मदद तो ले ली, राज्य सरकारी मांग पर बंदूक की जगह योजना का तोप खरीदने का पैसा मिला पर तोप खरीदा तो समझ में आया कि उसके पास बंदूक की गोली खरीदने तक का पैसा नहीं है। सो तोप धार का धार रह गया। फिर तोप खरीदने के बजाय जो पैसा मिला, उसे खजाने में जमा रखा। खजाने में 'पैसा' निष्क्रिय पड़ा रहा और राज्य सरकार पर उस मूल धन का सूद चढ़ता गया।

सी०ए०जी० का निष्कर्ष यह है कि केन्द्रीय मदद से भी एक भाग को बचाकर उसका विचलन गैर योजना व्यय के खर्च को निपटाने या रिजर्व बैंक में रोकड़ सम्पति के संचय के लिए किया। यह केन्द्र सरकार द्वारा निगरानी के अभाव को भी प्रदर्शित करता है, रिपोर्ट में इस तरह की टिप्पणी भी गयी है।

राजनीतिक दलों को उद्योग समूहों के चंदे पर रोक लगायी जाए – सीताराम येचूरी

मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी के पोलित ब्यूरो के सदस्य सीताराम येचूरी ने कहा है कि राजनीतिक पार्टियों को उद्योग समूहों से चंदा उपलब्ध कराए जाने पर पूरी तरह रोक लगनी चाहिए। इसके बजाय सरकारी कोष बनाया जाना चाहिए अथवा चुनाव आयोग के अधिकार क्षेत्र में ही इस प्रकार का चुनावी कोष गठित होना चाहिए। वाणिज्य एवं उद्योग मंडल द्वारा आयोजित संगोष्ठी में **नए चुनाव एजेंडा की ओर** विषय पर श्री येचूरी ने ये बातें कहीं।

समाजवादी पार्टी के महासचिव **अमर सिंह** ने उक्त संगोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राजनीतिक पार्टियों को अपनी कथनी और करनी में अंतर समाप्त करना होगा केवल भाषण देने मात्र से काम नहीं चलेगा।❑

– रा.वि.संवाददाता, प्रो०राजेश नई दिल्ली से

भारत में सबसे ज्यादा राजनीतिक दल

भारत न केवल दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है बल्कि दुनिया में सबसे ज्यादा राजनीतिक दल भी भारत में ही है चुनाव आयोग के अनुसार यहां 657 पंजीकृत आमन्यता प्राप्त राजनीतिक दल हैं जो अलग-अलग विचारधाराओं, क्षेत्रों, जातियों, वर्गों और सामाजिक-आर्थिक कारकों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चुनाव आयोग ने इन दलों को **'राष्ट्रीय'** राज्य की और **पंजीकृत** दलों का दर्जा दे रखा है। सनद रहे कि जिस पार्टी को राज्य में डाले गए कुल वैध मतों का कम से कम चार प्रतिशत या राज्य की कुल सीटों में से 1/25 सीटें मिली हों, उसे राज्य की पार्टी या मान्यता प्राप्त दल का दर्जा दिया जाता है। जिस दल को चार या अधिक राज्यों में डाले गए कुल वैध मतों में से कम से कम चार प्रतिशत या इन राज्यों की कुल सीटों में से कम से कम 1/25 सीटें मिलती हैं, उसे राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता दी जाती है। उसका चुनाव चिन्ह देश भर में एक ही होता है। इस समय देश में छह राष्ट्रीय दल, 59 राज्य स्तर के दल हैं।❑

-रा.वि. संवाददाता, नई दिल्ली

सईद द्वारा नई पार्टी का गठन

पूर्व कांग्रेसी नेता मुफ्ती मोहम्मद सईद ने जम्मू-कश्मीर पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी नामक एक नई पार्टी का गठन किया है जिसका मकसद होगा कश्मीर में अमन-चैन लाना। इसके लिए आम लोगों की समस्याओं का संवैधानिक तरीके से समाधान निकाला जाएगा। सईद को इस पार्टी का अध्यक्ष चुना गया है।

पिछले दिनों सईद ने कांग्रेस पर यह आरोप लगाते हुए इस्तीफा दिया था कि इस पार्टी ने कश्मीर की जनता से बिना शर्त बातचीत करने के उनके आग्रह पर ध्यान नहीं दिया।❑

–रा. वि. कार्यालय संवाददाता

बाल ठाकरे चुनाव लड़ने व मताधिकार से वंचित

राष्ट्रपति के०आर०नारायणन ने उच्चत्तम न्यायालय के एक फैसले तथा चुनाव आयोग की संस्तुति के पश्चात् शिवसेना सुप्रीमो बाल ठाकरे को छह वर्षों तक चुनाव लड़ने तथा मतदान करने से वंचित कर दिया है। राष्ट्रपति और चुनाव आयोग के इस फैसले पर चुनौती देने का भी अब सवाल नहीं उठता है।

राष्ट्रपति ने अपना यह निर्णय 1987 में महाराष्ट्र विधानसभा के एक उपचुनाव के दौरान ठाकरे को धर्म के दुरुपयोग के लिए दोषी पाए जाने के आधार पर दिया। मुम्बई उच्च न्यायालय के फैसले के तहत बाल ठाकरे 11 दिसम्बर 1995 से चुनाव लड़ने के अयोग्य ठहराये गए हैं जो दिसम्बर 2001 तक प्रभावी रहेंगे। अधिसूचना जारी होने के बाद महाराष्ट्र की मतदाता सूची से बाल टाकरे का नाम तुरत हटा दिया गया है।❑

शहीद हनीफुद्दीन की मां भी चुनाव मैदान में

आगामी लोकसभा चुनाव में पूर्वी दिल्ली संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में कारगिल युद्ध में शहीद हुए कैप्टन हनीफुद्दीन की मां **हेमा अजीज** को उतारने की चर्चा से पुराने दावेदार परेशान हो गए हैं। इसी प्रकार नई दिल्ली क्षेत्र से चर्चित तथा बर्खास्त नौ सेनाध्यक्ष विष्णु भागवत की पत्नी **जिनेफर भागवत** का नाम लिया जा रहा है। ऐसा कहा जा रहा है कि प्रत्याशियों के चयन में दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित की अहम् भूमिका होगी।

दिल्ली के चुनाव में 'पिछड़े वर्ग की निर्णायक भूमिका के कारण **रामवीर सिंह विधूड़ी** टिकट के दावेदारों में सक्रिय नजर आ रहे हैं। वे पूर्वी दिल्ली से पहले भी चुनाव लड़ चुके हैं। करोलबाग से **श्रीमती मीरा कुमार** को टिकट मिलना तय माना जा रहा है।❑

-रा०वि० प्रतिनिधि डॉ०मेदनी दिल्ली से

ममता कुलकर्णी पटना से चुनाव लड़ सकती हैं!

खबर है कि सेक्स बम **ममता कुलकर्णी** ने फिल्मों के अतिरिक्त भी कुछ करने के इरादे से बिहार के **पटना संसदीय निर्वाचन** क्षेत्र से लोकसभा का चुनाव लड़ने का मन बना लिया है। कहा जाता है कि राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद के साथ ममता की घनी दोस्ती रही है और कई बार कई सन्दर्भों को लेकर लालूजी के साथ उनका नाम उछाला जाता रहा है।

ममता कुलकर्णी के राजद की टिकट पर पटना से लड़ने पर सुप्रसिद्ध अभिनेता तथा भाजपा नेता **शत्रुघ्न सिन्हा** को उनके मुकावले भाजपा से खड़ा किया जा सकता है क्योंकि श्री सिन्हा की बहुत पहले से इस संसदीय सीट से लड़ने की इच्छा भी रही है किन्तु यह भी कहा जा रहा है कि शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे पटना से ही अपनी पार्टी के निशान पर जाने-माने निदेशक **प्रकाश झा** को खड़ा करने का मन बना रहे हैं। हलांकि यह भी सच है कि इन दोनों अभिनेता-निदेशक में से कोई एक ही सैदान में रहेंगे। क्योंकि भाजपा और शिवसेना आपस में टकराना नहीं चाहेगी। खैर जो हो राजद के पूर्व सांसद **रामकृपाल यादव** तथा भाजपा के पूर्व सांसद डॉ. सी. पी. ठाकुर का क्या होगा ? ❑

पुण्य-तिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि स्वरूप एक स्मृति-अर्घ्य

चित्रकला एवं साहित्य की समर्पित प्राणसाधिका (स्व०)श्रीमती अंजू कुमुद

□प्रो०(डा०) प्रफुल्ल कुमार 'मौन'

[4.8.1954 - 25.8.1998]

बिहार के कस्बाई शहर सुपौल (अब जिला मुख्यालय) के एक प्रतिष्ठित मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी **अंजू कुमुद** कोई जन्म से ही चित्रकला या साहित्य से अनुरक्त महिला नहीं थीं। 8/7/1970 को इनका विवाह बड़े ही आदर्श तरीके से, आज के लोकप्रिय गीतकार-चित्रकार **श्री ललित कुमुद** से हुआ। इन्हीं के जीवनोद्देश्य, परिवेश और प्रोत्साहन के प्रभाव में स्वतः स्फूर्त रूप से अंजू जी ने संकल्पित होकर, एक सुन्दर गृहिणी का संघर्षपूर्ण दायित्व निबाहते हुए, बड़े अध्यवसाय से कम ही समय में चित्रकला एवं साहित्य दोनों क्षेत्रों में अपनी विशिष्ठ पहचान बनाई। क्रमशः इन्होंने ललित कला, शिल्पकला, छायाचित्रणकला तथा पुस्तकालय-विज्ञान आदि में बाकायदा डिप्लोमा स्तरीय प्रशिक्षण भी प्राप्त कर लिया और सभी साहित्यिक-कलात्मक सृजनात्मक कार्य में अपने पति का हर संभव तरीके से साथ दिया।

अधिकाधिक लड़कियां इन गरिमामय कलाओं की दीक्षा पाकर अपनी आर्थिक बुनियाद सुदृढ़ करते हुए आत्मविश्वासपूर्वक अपनी विशेष पहचान बना सकें- इस उद्देश्य में इन्हें अपने पति से भरपूर प्रोत्साहन, मार्गदर्शन तथा सहयोग प्राप्त था। परिणामस्वरूप राजकीय पंजीयन-मान्यताप्राप्त **'कला एवं सांस्कृतिक अनुसन्धान एवं विकास परिषद'**, पटना की सचिव के रूप में तथा उसकी प्रशिक्षण इकाई **'कला एवं छायाचित्रण अकादमी'**, पटना की क्रमशः कार्यकारी सचिव तथा अकादमिक निदेशक के रूप में इन्होंने लगभग 46 छात्राओं को दीक्षित किया, जिनमें से अधिक आज अपने बल-बूते पर अपनी आजीविका हासिल कर कला-क्षेत्र में भी शानदार नाम पैदा कर रही हैं।

नेपाल-भारत सांस्कृतिक-मैत्री-संघ की स्थापना काल में इन्होंने (डॉ०) शंकर दयाल सिंह, पत्रकारप्रवर जितेन्द्र सिंह, डॉ०पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा, प्रो०महेन्द्र प्र०यादव, प्रो०निर्मल कु०श्रीवास्तव प्रभृति की उपस्थिति में इन्होंने महज दस मिनटों के **'अपने जीवन के प्रथम भाषण'** से सबको अभिभूत कर दिया था। यह बात सन् 1971 ई० को है; तब से फणीश्वर नाथ 'रेणु', राष्ट्रकवि दिनकर, शंकरदयाल जी, जितेन्द्र जी, पद्मश्री उपेन्द्र महारथी, राधामोहन, श्रीधर बासुदेव सोहोनी, आनन्दी प्र०बादल, जयनारायण, श्याम शर्मा, राधेश्याम, सत्यनारायण, गोपीवल्लभ, पोद्दार रामावतार अरूण, हरेन्द्रदेव नारायण, बाल्मीकि प्र० विकट, रूद्र जी, रायप्रभाकर, मधुकर सिंह, डॉ० गंगेश गुंजन, प्रभास कुमार चौधरी, किरणकान्त, बालमुकुन्द राही, रामरीझन रसूलपुरी, डॉ०प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, राजमोहन झा, रामाश्रय, डॉ०शान्ति जैन, रवीन्द्र भारती, सिद्धेश्वर, प्रभृति साहित्य-कला, पत्रकारिता क्षेत्र के अधिकांश चर्चित लोगों का स्नेह-सान्निध्य इन्हें सुलभ रहा; जिससे अनुप्राणित हो कर इन्होंने कई क्षणिकाएं, गीत, मुक्तक आदि लिखे, कई सुन्दर चित्र स्वतन्त्र रूप से बनाये। कई पुस्तकों के आवरण तैयार किये। रेडियो से कला-विषयक इनकी वार्त्ताएं विशेष रूप से चर्चित हुई। इनके बनाये स्वतन्त्र एवं पति की सहभागिता में तैयार चित्र देश के कई प्रमुख शहरों और व्यक्तियों के पास हैं। चेन्नई में सुप्रसिद्ध उद्योगपति-विदुषी प्रेमा श्रीनिवासन के यहां की मिथिला-चित्रकारी(फ्रेस्को), गुडुआंचेरी के **'जय-प्रभा मेमोरियल'** में इनके तैल्य-चित्र ने इन्हें यथोष्ट ख्याति दी। डॉ०जगन्नाथ मिश्र के पास उच्च न्यायालय पटना, मिथिला विश्वविद्यालय, सेवा-सदन समिति(सलेमपुर, समस्तीपुर) में इनके अनेक यादगार चित्र दर्शनीय हैं। भितहरबा(चम्पारण) स्थित गांधी स्मारक-स्तूप इन्हीं चर्चित आदर्श कलाकार-दम्पति द्वारा अंतिम रूप से प्रारूपित हुआ। प्रो० डॉ० उपेन्द्र ठाकुर की प्रसिद्ध पुस्तक 'मिथिलाक चित्रकला' में अधिकांश चित्र स्वतंत्र रूप से अंजू जी के बनाये हुए हैं।

कवियित्री के रूप में 'क्षितिज-7'(गजलों का प्रसिद्ध संग्रह: सम्पादक-बसन्त), दिव्यांशु-किरण (मैथिली वार्षिक स्मारिकांक) आदि में अंजू जी की कुछ प्रतिनिधि गीति-रचना एवं गजल तथा मुक्तक प्रकाशित हैं; किन्तु अधिकांश का प्रकाशन अभी शेष है। 1996 ई० में 8 अगस्त को श्री ललित कुमुद जी के जन्म-दिन पर इन्होंने लगभग एकल साध्य से, अपनी जर्जर दैहिक अवस्था के बावजूद जो शानदार किन्तु अंतिम यादगार भेंट दी थी वह है-श्री ललित कुमुद जी की भीति-रचनाओं का प्रथम संकलन-**'मेरे हिस्से की धूप-छांह'**। इस अनुपम उपहार के लिए ललित जी इनके प्रति चिर-ऋणी रहेंगे तथा अपनी विलक्षणताओं के कारण अंजू जी चिरस्मरणीय।

अपने पति के साथ मिलकर अंजू जी ने मैथिली की पहली फिल्म **'ममता गाबय गीत'** का कला-निदेशन दिया, जो एक ऐतिहासिक घटना है। इसके बाद **'सिन्दूर का बंधन'**, **'नेम-प्लेट'**, प्रभृति कई अन्य हिन्दी फिल्मों के लिए इन्हें सादर अनुबन्धित किया गया। इनके आवास पर बराबर कलाकार -साहित्यकार, संस्कृति-प्रेमियों, विद्वानों का समागम बना रहता था, और अंजू जी, सबके प्रति अपने स्नेह-सम्मानासिक्त सौजन्य तथा व्यवहार कुशलता के लिए सदैव कृतज्ञतापूर्वक याद की जाती रहेंगी।

12-14 वर्षों से अत्यंत दुरूह परिस्थितियों से गुजरते, सभी जरूरी जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए, कई तरह से रोगाक्रांत अंजू जी का इनके पति ने अपनी आर्थिक औकात से बढ़कर यथासंभव उपचार करवाया, बारम्बार अस्पताल में भर्त्ती करवाया, शल्य-चिकित्सा करवाई, किन्तु एक्यूट अल्सरेटिव कोलाइटिस जैसी बीमारी का बहुत विलम्ब से यहों के चिकित्सकों को पता चला, जिससे ये कब का जा चुकी होती, किन्तु उत्कट जिजीविषा, कर्त्तव्य-बोध -कलानुराग अपने पति तथा तीनों बच्चों के प्रति असाधारण प्रेम के कारण, उन्हीं के मोह से बारम्बार काल के जबड़े से ये बेलाग निकल आती रही थीं। मौत इनके द्वार से बारम्बार निराश लौट जाती थी। अंततः 25 अगस्त 1998 ई० की रात 1.20 बजे के करीब चुपके से इन्होंने अपने प्राण देकर उसे भी कृतार्थ कर दिया।

23.08.98 ई० की रात अंतिम बार उन्होंने अपने पति से आग्रह करके उनकी कुछ पसन्दीदा रचनाएं सुनीं तथा कुछ घंटे जैसे-तैसे समय देकर एक लम्बी गीति-रचना अपनी ओर से तैयार कर उन्हें दी, जिसे उन्होंने स्वयं ही **'अंतिम कविता'** का शीर्षक दिया।

अपनी इस 'अंतिम कविता' के माध्यम से अंजू जी अंत-अंत तक अपनी जो छवि और छाप हमारे बीच रख गई, वह स्तुत्य, सात्विक-स्पृहायोग्य तथा चिर-प्रेरणाप्रद है। अकाट्य काल-कवलित इस पुण्य श्लोक कृतित्वपूर्ण मृदुल चिर-स्मरणीय व्यक्तित्वमय नाम-'अंजू कुमुद' के प्रति पटना के तमाम सुधी साहित्यकारों-कलाकारों की ओर से हम अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं-उनकी प्रथम वार्षिक पुण्य-तिथि के यादगार अवसर पर।

सौजन्यः ललित कुमुद, क्वार्टर न०सी-16, रोड न० 8, पटना-23

कारगिल : सद्भावना-यात्रा का एक दुखद पड़ाव

❑डॉ० साधुशरण

20 फरवरी 1999 को प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की लाहौर बस-यात्रा को विश्व ने एक ऐतिहासिक सद्भावना-यात्रा कहा। भारत और पाकिस्तान के बीच के संबंधों में मैत्री का वह ऐसा आयाम था जिससे दोनों पड़ोसी राष्ट्रों की जनता के बीच आवागमन द्वारा सद्भावना की कड़ी जुड़ रही थी। किन्तु पाकिस्तान की सियासी और सैन्य हरकतों ने इसपर तत्काल तो पानी फेर ही दिया। परंपरागत शत्रुता की मानसिकता पाकिस्तान अपने को मुक्त नहीं करा सका।

ऐसा नहीं है कि पाकिस्तान 1947-48 में कश्मीर में घुसपैठिए भेजकर उस विलय संधि को सम्मान दे रहा था जिसमें जम्मू और कश्मीर के पूर्व नरेश हरि सिंह ने हस्ताक्षर कर उस रियासत को भारत के साथ मिला दिया था। यह भी नहीं कि उसके बाद 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्ध में उसे कोई उत्साहवर्द्धक लाभ मिला था। रक्षा मद में पाकिस्तान के बजट में लगातार बेतहासा वृद्धि के कारण उसकी आर्थिक हालत खराब होती चली गई। सेना पर प्रजातांत्रिक रूप से चुने गए प्रतिनिधियों का पूर्ण नियंत्रण अभी तक वहां नहीं हो पाया है। उनका इतिहास भी इस बात का गवाह है। पाकिस्तानी जनता बदहाली के कगार पर पहुंच चुकी है।

लाहौर संधि और शिमला समझौता द्वारा लम्बित मामलों का द्विपक्षीय वार्त्ता द्वारा हल करने की बात कही गई है। दोनों राष्ट्रों की सेना के बीच झड़पें नहीं हों, इसके लिए एक नियंत्रण-रेखा का निर्धारण किया गया है। उस सीमा निर्धारण में दोनों ओर की सेना के वरीय पदाधिकारी उपस्थित थे, अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञ भी उसमें शामिल किए गए थे। नियंत्रण-रेखा पवित्र रेखा मानी जाती रही है। शिमला समझौता 1972 ई० में हुआ है। विगत 27 वर्षों में पाकिस्तान ने उस पर कोई आपत्ति नहीं की, उसे विवादित नहीं बताया। अटल जी की लाहौर-यात्रा के समय भी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने उनसे इसपर कोई चर्चा नहीं की। होता यह रहा था कि सितम्बर माह के बाद दोनों राष्ट्रों में से कोई भी राष्ट्र अपनी सैन्य चौकियां वहां नहीं रखता था। उस नियंत्रण-रेखा को आदर देने के कारण ही दोनों देशों के बीच कोई बड़ी लड़ाई नहीं हुई। पड़ोसी राष्ट्र, शांति की भावना, मित्रता आदि के साथ ही अब परमाणु संपन्न शक्तियों के बीच के संबंधों की मांग थी कि दोनों एक दूसरे से अच्छे संबंध बढ़ाते जायं।

किन्तु ऐसा नहीं हुआ लाहौर सद्भावना यात्रा के दो माह के भीतर ही कारगिल में पाकिस्तान ने घुसपैठिये भेज दिए इसमें मुजाहिद्दीन भी थे और पाकिस्तान सेना के नियमित जवान, अफसर भी। सभी अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से लैस। कारगिल को विवादित कहने के पीछे यह पाकिस्तान द्वारा नियंत्रण रेखा का मात्र उल्लंघन नहीं था, बल्कि निंदनीय षडयंत्र का एक घिनौना पहलू भी था। यदि पाक के इस अंजाम को भारत यूं ही नजरंदाज कर देता तो स्वतंत्र राष्ट्र होने की इसकी कोई युक्तिसंगतता नहीं रहती। अपनी संप्रभुता पर कोई भी राष्ट्र आंच नहीं आने देगा। 1999 के पूर्व शिमला समझौता वर्ष 1972 से कोई भी देश दिसम्बर माह से चौकियां खाली कर दिया करते थे। उंचाई और वर्फ पड़ने के कारण यह संभव नहीं था।

इस वर्ष जब सद्भावना यात्रा से मित्रता को प्रगाढ़ करने का अवसर आया था तो पाकिस्तान ने बाहर से मित्रता के दामन के भीतर कारगिल की शत्रुता का खंजर छूपाए था। ऐसी स्थिति को भारत ने कभी भी नहीं स्वीकारा है और न ऐसी गलती करने की इसे कोई बिवशता ही है। अत: सैन्य-कारवाई द्वारा घुसपैठियों को बाहर खदेड़ देने का निश्चय किया गया।

पाकिस्तान के साथ भारत की एक लंबी सीमा है जिसपर लगातार सैन्य चौकियां रखना संभव नहीं है। पाकिस्तान के साथ भारत की पंजाब में 554 किलोमीटर सीमा, गुजरात में 504 किलोमीटर सीमा, राजस्थान में 1038 किलोमीटर सीमा, पाक-अधिकृत कश्मीर में 750 किलोमीटर सीमा और इसके अलावा चीन के साथ भी भारत की सीमा 3149 किलोमीटर होती है

कारगिल में दोनों देशों की सीमा की लम्बाई 140 किलोमीटर की है। कारगिल क्षेत्र की उंचाई 4572 मीटर से लेकर 5181 मीटर तक की है। इस क्षेत्र की विशेष स्थिति को देखते हुए सेना का काम कठिन अवश्य था। लकिन कोई दूसरा विकल्प भी नहीं था। अत: 6 मई से उन्हें खदेड़ने के क्रम में लड़ाई शुरू हो गई। इस संघर्ष ने अंतर्राष्ट्रीय जगत् का ध्यान अपनी ओर खींचा, जो स्वाभाविक भी था। भारत सरकार ने 25 मई 1999 को वायुसेना को कारगिल सेक्टर में पाकिस्तानी घुसपैठियों को निकाल बाहर करने में थलसेना की मदद करने का निर्देश दिया और उसके अगले ही दिन टाईगर हिल पर सुबह से ही लड़ाकू विमानों ने हवाई हमले शुरू कर दिए। प्रारंभ में वायुसेना को सफलता नहीं मिली। संभवत: बीस से तीस हजार फूट की उंचाई पर उड़ान भर रहे हमारे पायलटों को सफेद वर्फ में लगाए गए सफेद टेन्ट को पहचान करने में कठिनाई आ रही थी । अत: बाद में अनेक उड़ाने भरकर आवश्यक चित्र और जानकारियां प्राप्त की गई, इनका गहन अध्ययन और विश्लेषण हुआ। तदुपरान्त 24-25जून और 27 जूल को आइगर हिल पर सही निशाने लगाकर दुश्मन की कमर तोड़ दी गई। टाइगर हिल एक सप्ताह से कम समय में कब्जा हो गया और हमारी सेना को बहुत कम नुकसान उठाना पड़ा। तोलोलिंग चोटी पर कब्जा करने में तीन सप्ताह लग गया था और इस कारवाई मे हमारे काफी सैनिक हताहत हुए थे। पूरी कारवाई के दरम्यान भारतीय सेना को नियंत्रण-रेखा पार करने की अनुमति नहीं थी। दुश्मन के सारे आपूर्ति ठिकाने नियंत्रण-रेखा के उस पार थे दुश्मन उंचाई पर स्थित रहने के कारण बड़े ही लाभदायक स्थिति में थे। वे उंचाई से हमारी गतिविधियों पर नजर रखते थे। उनका प्रयास था कि श्रीनगर-लेह राजमार्ग को भारतीय सेना के लिए जमीन पर जो एकमात्र राह थी उसे भारत के नियंत्रण से छीन लिया जाय, किन्तु भारतीय सैनिकों ने अपने अदम्य उत्साह, कौशल और जांबाजी दिखाते हुए दुश्मन को भारी मात दे दी। कई क्षेत्रों में घमासान लड़ाइयां हुई। भारतीय जवानों ने दुर्गम राह से उपर चढ़ते हुए , शस्त्रों से सुसज्जित दुश्मनों की गोलियां खाते द्रास, बटालिक, तोलोलिंग, टाइगर हिल आदि अनेक स्थानों को अपने पुन: कब्जे में लेकर हमलावरों को खदेड़ दिया। इस लड़ाई के 10 या 11 जुलाई 99 का अंत होते-होते दो ही क्षेत्र और बचे थे जिनपर विजय अभियान जवान लड़कर लेते कि पाकिस्तान की सरकार ने अपने मुजाहिद्दीनों एवं सैनिकों को 16 जुलाई की सुबह तक लौटा लेने की अपील की । दोनों देशों के सैन्य-संचालन के निदेशको के बीच भारतीय सीमा में बातें हुई और पाक के इस आग्रह को मेजर नेनरल जे.जे. सिंह ने स्वीकार कर लिया कि भारत विशेष प्रकार के अस्त्र का इस बीच नहीं प्रयोग करेगा एवं हवाई हमला बंद रखेगा। यह निर्णय सेना का था, राजनीतिक निर्णय नहीं। यह युद्धबंदी नहीं थी। 12 जुलाई तक भारतीय सेना के 398 जवानों एवं अधिकारियों ने कारगिल को मुक्त कराने में अपनी शहादत दी। लगभग 700 मुजाहिद्दीनों एवं पाक

सैनिकों के मरने की खबर भी उस समय तक आयी है।

आश्चर्य होता है कि पाक सेना द्वारा रसद, शस्त्र, कपड़े और गाड़ियों की आपूर्ति मुजाहिद्दीनों को करायी जाती है तब भी 11 जुलाई 1999 को पाक सरकार के अपने लोगों को लोहा लेने के निर्णय के बाद भी पाकिस्तान के उग्रवादी संगठन, अलबदर ने कहा कि हमलोग तबतक हथियार नहीं डालेंगे, जबतक पाकिस्तान के पंद्रह उग्रवादी संगठनों के कांउसिल द्वारा हमें वापस बुलाने पर निर्णय नहीं हो जाता है। इसी संगठन ने 14 जुलाई को एक भारतीय अफसर डी. आई. जी. की हत्या कर उनके आवासीय कॉलोनी में कुछ परिवार के सदस्यों को बंधक बना रखा था।

कारगिल संघर्ष में भारत का करीब 1500 करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है। इसके बाद भी 12 जुलाई 99 को मूल्य-सूचकांक में 223 अंकों का उछाल आया था जो एक रिकार्ड था। मुद्रा -स्फीति की दर 10 जुलाई 99 को 2. 03 रही जो पिछले 20 वर्षों में न्यूनतम थीं।

भारत सरकार की विदेश नीति की प्रशंसा सभी कर रहे हैं। पहली बार भारत को अंतर्राष्ट्रीय जगत में इतना बड़ा समर्थन पच्चास वर्षों में देखा गया। पाक की सहायता हेतु जिस अमेरिका ने अपना सातवां बेड़ा भारत के खिलाफ भेज रखा था, उसी अमेरिका ने पाक को स्पष्ट तौर पर घुसपैठिये कहा एवं उसे कारगिल खाली करने की अपील की तथा द्विपक्षीय वार्त्ता से अपने सभी प्रश्नों का हल करने के लिए कहा भारत भी यही कहता रहा है। पाक का मित्र बना पड़ोसी राष्ट्र चीन ने भी उसे समर्थन नहीं दिया। इंगलैंड, जर्मनी, फ्रांस आदि ने भी पाक घुसपैठियों को वापस बुलाकर शांति प्रयास के लिए पाकिस्तान को सलाह दी।

लेकिन देश के भीतर राज्य सभा का सत्र बुलाने, समय पर घुसपैठियों की पहचान नहीं करने के लिए सरकार से नाराजगी जताई। यह भी आशंका व्यक्त की गई थी कि अगला संसदीय चुनाव समय पर नहीं हो पायेंगे।

भारत के रक्षामंत्री ने कहा कि घुसपैठिये अप्रैल 99 में आए, मई में तुरत पता चला और साथ-साथ उन्हें खदेड़ने की सैन्य कारवाई शुरू कर दी गई। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने अपने सहयोगियों सहित प्रधानमंत्री से भेंट की और लौटने के बाद अपनी राय बनाई। निर्वाचन की तिथियों की घोषणा के साथ विरोधी दलों की यह आशंका भी दूर हो गई। 8 जुलाई 99 को पूर्व विदेश सचिव जे. एन. दीक्षित ने चेन्नै में कहा कि भारत में एक कामचलाऊ सरकार होने के कारण ही पाकिस्तान ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ की हैं यदि यह बात सच है तो देश के लोगों को यह एहसास अवश्य बनेगा कि श्री गिरिधर गोमांग, मायावती एवं कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी की राजनीतिक अदूरदर्शिता और अपरिपक्वता भारत राष्ट्र पर कितना बड़ा कहर ढाह सकती है। ऐसे भी प्रारंभिक दौर में ही कश्मीर को विवादित बना डालने का अंजाम राष्ट्र अबतक सह रहा है।

इतना होने के बाद भी भारत और पकिस्तान को शांति तो बनानी ही पड़ेगी, क्योंकि बकौल अटल जी पड़ोसी तो बदले ही नहीं जा सकते।

संपर्क : 'गीतिका', रोड नं.-2,
पत्रा.-केशरीनगर, पटना-24

उनके कल के लिए हमने अपना आज दे दिया

शहीद मौन स्वर में

कारगिल के युद्ध और उसमें भारतीय रणबांकुरों की वीरता की ऐसी अनेक कथाएं हैं जो कोहिमा में द्वितीय विश्वयुद्धके एक शिलालेख को चरितार्थ करती है, जब तुम घर जाओ, तो उन्हें हमारे बारे में बताना और कहना, **उनके कल के लिए हमने अपना आज दे दिया'।**

विपरीत मौसम तथा दुश्मन की जबरदस्त गोलाबारी के बीच 14 हजार फीट उंची तोलोलिंग चोटी और 16 हजार फीट उंचे टाइगर हिल के चारों ओर के भाग पर कब्जा कर लेना कोई मामूली उपलब्धि नहीं बल्कि भारतीय सैनिकों के साहस और बलिदान की अमर गाथा है। लेफ्टिनेंट कर्नल विश्वनाथ आनन्द अपनी टोली के साथियों के साथ घुसपैठियों के बंकर के करीब पहुंचकर और उनसे आमने-सामने की बंदूकों की लड़ाई में भीड़कर उनके मोर्चे से तीस-चालीस मीटर की दूरी तक पहुंचे तथा अकेले कम से कम पांच घुसपैठियों को मार वे वीरगति को प्राप्त हुए। इसी तरह 18 वें ग्रेनेडियर्स के मेजर आर.एस.अधिकारी ने भी पाकिस्तान के नियमित सैनिकों और घुसपैठियों के कब्जे से एक बंकर और एक चौकी को छीनते हुए अपना जीवन न्योछावर कर दिया। टाइगर हिल को कब्जा करने के इस अभियान में इन दो बलिदानियों का विशिष्ट स्थान है।

12 हजार से 18 हजार फीट तक की उंचाइयों वाली वर्फ से ढंकी पर्वत श्रृंखलाओं वाले कारगिल क्षेत्र में भारतीय वायुसेना तथा थलसेना ने एक तरह से नया इतिहास रचा है। कहा जाता है कि इस तरह का अभियान भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया में भी संभवत: पहली बार चलाया गया। कारगिल तथा उसके आस-पास के सैंकड़ों किलोमीटर के इलाकों द्रास, बटालिक, काकसर एवं मशकोह घाटी की विस्तृत पर्वत श्रृंखलाओं में यत्र-तत्र सैंकड़ों की संख्या में छुपे पाकिस्तानी सैनिक-घुसपैठियों को ढूढ़कर उनपर हमला करना कितना दुरूह काम है, इसकी कल्पना की जा सकती है। सचमुच भारतीय सैनिकों ने इतनी उंचाई वाले ऐसे वर्फीले पर्वतीय इलाके में अभियान चलाकर तथा अपनी कुर्बानी देकर विश्व कीर्तिमान स्थापित की है जिसकी जितनी सराहना की जाय, कम होगी। घुसपैठियों के कब्जे से भारतीय चौकियों को अपने पराक्रम से छुड़ाकर हमारी सेना ने काफी यश कमाया है। कारगिल की मुक्ति के बाद भारतीय सेना ने पाकिस्तान पर एक और बांग्लादेश थोप दिया है।❑

-रा०वि०कार्यालय संवाददाता

बड़े बेआबरू होकर ....

भारतीय सेना की वीरता, शौर्य और साहस से पस्त होकर कारगिल में पाकिस्तानी फौजों एवं घुसपैठियों को आखिर बेआबरू होकर वापस जाना पड़ा। पाकिस्तानी हुक्मरान कल तक जो जंग की भाषा बोल रहे थे उन्हें अपनी हार स्वीकार कर नियंत्रण रेखा को मानने के लिए बाध्य होना पड़ा। पूरी दुनिया से थू-थू होने के पश्चात् उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा कि कारगिल संकट पाकिस्तान ने ही पैदा किया था। हलांकि यह सच है कि अमरीकी सहित दुनिया के अनेक देशों का दबाव पाकिस्तान पर रहा तथापि यह समझना कि अमरीकी दबाव के चलते ही

पाकिस्तान अपनी फौजें वापस बुलाने के तैयार हुआ है, भारी भूल होगी। सच तो यह है कि भारतीय सेना के निर्णायक दबाव के चलते ही वह ऐसा करने के लिए बाध्य हुआ है। आज नहीं तो कल उन्हें जिंदा या मुर्दा वापस जाना ही था। भारत ने उन्हें वापस जाने के लिए चार दिनों का मोहलत देकर न केवल अपने संयम और अपनी उदारहृदयता का परिचय दिया है बल्कि भारत ने यह दिखा दिया है कि वह किसी से अनावश्यक युद्ध करना नहीं चाहता है तथा शांति के लिए प्रतिबद्ध है।

कारगिल युद्धः क्या खोया और क्या पाया

–विनय कुमार सिन्हा

लगभग तीन माह तक कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में चले युद्ध का आकलन किया जाय तो यह सवाल हमारे सामने आ खड़ा होता है कि हमने क्या खोया और क्या पाया। हमारे जांबाज सैनिकों ने दुर्गम बर्फीली पर्वत की श्रृंखलाओं में देह चीर देनेवाली हवाओं के बीच पाक सैनिकों एवं घुसपैठियों से न केवल लोहा लिया बल्कि उन्हें अपनी सीमा से बाहर खदेड़ा। ऐसा हमारे वीर सैनिकों ने अपनी जान हथेली पर रखकर किया। अधिकारिक आंकड़ा के अनुसार इस युद्ध में चार सौ सैनिकों को कुर्बानी देनी पड़ी। गैरसरकारी आंकड़ा तो एक हजार से अधिक है। याद रहे कि इसके पूर्व कुछ ही दिनों तक चले भारत-पाक युद्ध की अवधि में 1947 में 1103, 1965 में 2902 तथा 1971 के युद्ध में 3630 भारतीय जवानों व अधिकारियों ने शहादत दी थी। उन दिनों युद्ध सारी सीमाओं पर लड़े गए थे पर इस बार के युद्ध सिर्फ कारगिल क्षेत्र में लड़े गए। यही नहीं हमारे देश के लगभग दो हजार करोड़ रुपये खर्च हुए।

अब प्रश्न है कि मुझे मिला क्या? मिलने के नाम पर हम कह सकते हैं कि इस युद्ध के दौरान **हमें अन्तरराष्ट्रीय समर्थन मिला।** यह ठीक है कि वर्तमान परिस्थितियों अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अनुकूल वातावरण बनाना किसी भी समय की तुलना में आज आवश्यक है। **दूसरा लाभ हमें मिला कि इस देश के लोगों में लुप्त होती देशभक्ति की भावना में रूकावट ही नहीं आई बल्कि कारगिल युद्ध की अवधि में इस पूरे देशवासियों ने अपनी एकजुटता का परिचय दिया। क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी वर्ग, धर्म, जाति तथा भाषा के लोगों ने जवानों के पीछे खड़े होकर उनका मनोबल बढ़ाया। राष्ट्र प्रेम की जो भावना मृतप्रायः हो गई थी, एक बार फिर जाग उठी।** हजारों-हजार की संख्या में छोटे-छोटे नगरों-कस्बों में शहीदों को इस देश की जनता ने जो भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की उससे उनके मूक समर्थन का अहसास होता है।

अब प्रश्न यह है कि राजनयिक स्तर पर मिली जीत उन परिवारों के घावों को कैसे भर पाएगी जिनके घर के युवा सदस्यों ने इस जंग में अपने प्राणों की आहूति दी। कई मांगें सूनी हो गई। कई माताओं की गोद सूनी हो गई। इन परिवारों के लिए राजनयिक स्तर पर मिलनेवाली कामयाबी कितना महत्व रखती हैं। उनका कहना है कि हमारे परिवार के सदस्यों की कुर्बानी का मतलब क्या है? **क्या हर बार यही राजनीति होती रहेगी? हम गंवाते रहे केवल दुनिया की थोथी वाहवाही पाने और शांति दूत कहलाने के लिए।**

इस जंग के एक और पहलू पर विचार करना जरूरी है कि यह जंग पाकिस्तान के इलाकों पर कब्जा करने के लिए नहीं बल्कि अपने ही कारगिल क्षेत्र के लगभग 140 किलो मीटर के दायरे की जमीन पर पाकसैनिकों द्वारा किए गए कब्जे को खाली कराने के लिए यह जंग हुआ। **कारगिल युद्ध पाकिस्तान के भू-भाग पर नहीं बल्कि हिन्दुस्तान की धरती पर लड़ी गयी। युद्ध में विजय उसी को कहा जाता है जब दुश्मन की फौज को मार गिराया जाये और उसके इलाके पर कब्जा कर लिया जाये।** इस बार हमने अपने ही इलाकों को वापस लेकर हम वाहवाही बटोर रहे हैं। **सच कहा जाय तो कारगिल के युद्ध में हमने अपनी धरती की वापसी को गलतियों को सुधारना अथवा लापरवाही की सजा कह सकते हैं।**

संपर्कः पंचवटीनगर, दक्षिणी बाजार समिति, पटना-6

टाइगर हिल्स पर जब तिरंगा लहराया

❑ सीताराम सिंह

भारतीय सेना ने द्रास इलाके की सामारिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण टाइगर हिल्स से पाकिस्तानी सैनिकों और आतंकवादियों को मार भगाने के बाद वहां तिरंगा फहरा दिया। कारगिल सेक्टर में हुई घुसपैठ से लगभग आठ सप्ताह से जूझ रहे भारतीय सैनिकों की यह एक बड़ी सफलता है। इससे जहां श्रीनगर-कारगिल-लेह राजमार्ग शत्रु की गोलाबारी से तकरीबन सुरक्षित हो गया है, वहीं द्रास इलाके के अन्य स्थानों से घुसपैठियों को निकाल बाहर करने में सेना मजबूत स्थिति में पहुंच गई है।

18 वीं ग्रेनेडियर बटालियन के जांबाज सैनिकों ने इस महत्वपूर्ण चोटी पर कब्जा किया। इस कार्रवाई में सेना ने पाकिस्तान के 12 सैनिकों को मार गिराया जबकि तीन भारतीय जवान शहीद हुए। तोलोलिंग चोटी के बाद इस चोटी से घुसपैठियों को बेदखल करने वाली 18 वीं ग्रेनेडियर को सेनाध्यक्ष जेनरल वी॰ पी॰ मलिक ने **यूनिट प्रशस्तिपत्र** से सम्मानित किया है जबकि राष्ट्रपति के॰ आर॰ नारायणन ने भी इस सफलता पर जवानों को बधाई देते हुए कहा कि यह देश के लिए गौरव का क्षण है। रक्षा-मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस ने इस बड़ी सफलता की घोषणा अमृतसर छावनी में एक सैनिक सम्मेलन में की और कहा कि अब हम घुसपैठियों से अपनी शर्तें मनवाने में कामयाब होंगे।

थल सेना के प्रवक्ता कर्नल विक्रम सिंह ने संवाददाताओं को बताया कि टाइगर हिल्स पर तीन अनपेक्षित दिशाओं से हमला बोला गया जिससे वहां बैठे हमलावर सकते में आ गए और सैनिकों के सामने टिक न सके।

रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडिस ने अमृतसर छावनी में सेना के अधिकारियों एवं जवानों को संबोधित करते हुए जब कहा कि थल सेना अध्यक्ष वी॰पी॰ मलिक ने उन्हें सूचित किया है कि "टाइगर-हिल्स" पर लड़ाई जीत ली गई है तो भारतवासी प्रसन्नचित दिखे। श्री फर्नांडिस ने कहा था कि हमारी सेना अब कुछ भी कर सकने की स्थिति में है।

ऊंची पहाड़ियों के ऊपर रात्रिकालीन आकाश उस समय चकाचौंध हो गया जब भारतीय जवानों ने बोफोर्स तोपों और अन्य भारी तोपों से पाकिस्तानी सेना की नियमित सैनिकों और भाड़े के सैनिकों के नियंत्रण वाले ठिकानों पर गोलाबारी शुरू की। भारतीय जवानों द्वारा बोफोर्स के अलावा 130 एम॰ एम॰ और 105 एम॰ एम॰ की तोपों और मोर्टारों से शत्रु के ठिकाने पर भीषण गोलाबारी की। सेना के अधिकारियों ने बताया कि टाइगर हिल्स पर निर्णायक धावा बोलने के पहले जवानों ने आस पास की सभी पहाड़ियों को अपने नियंत्रण में ले लिया था और चोटी पर बैठे घुसपैठियों कि सप्लाई लाइनों को काट दिया था। भारतीय वायुसेना के लड़ाकू जेट विमानों ने शत्रु के ठिकाने पर भीषण बमबारी की। घुसपैठिए पिछले कुछ हफ्तों से इस महत्वपूर्ण ठिकाने पर जमे हुए थे।

टाइगर-हिल्स पर कब्जे के लिए भारतीय जवानों की दिल खोल कर तारीफ करते हुए राष्ट्रपति के॰आर॰नारायणन ने उम्मीद जाहिर की कि वे घुसपैठियों का पूरी तरह सफाया कर देंगे। उन्होंने कहा कि टाइगर-हिल्स पर फिर से कब्जा पूरे देश के लिए गर्व और संतुष्टि की बात थी। ऐसा हमारे जवानों की असाधारण बहादुरी और प्रतिबद्धता की बदौलत हो पाया। राष्ट्रपति ने उन जवानों को भी श्रद्धांजलि अर्पित की जो इस कार्रवाई में शहीद हुए।

वायु सेना के प्रवक्ता ग्रुप कैप्टन डी॰ एन॰ गणेश ने तालोलिंग के बाद टाइगर हिल्स पर कब्जे को वायु सेना और थल-सेना के बीच उच्च कोटि के समन्वय का उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि इन सफलताओं ने सेनाओं के संयुक्त अभियान की आवश्यकता को एक बार पुनः रेखांकित किया है।

संपर्कः कार्यालय, भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक 10, बहादुरशाहजफर मार्ग, नई दिल्ली

बोफोर्स तोप ने कहर बरपाया पाक सैनिकों पर

-रा.वि.संवाददाता

स्वीडन में निर्मित 155 एम एम की हॉवित्जर तोप जो बोफोर्स तोप के नाम से जाना जाता है, ने कारगिल की दुर्गम पर्वत श्रृंखलाओं में दुश्मन के मजबूत बंकरों को नष्ट करने में अपनी सर्वोच्चता सिद्ध की। एक दशक तक विवादों में घिरे रहने के बाद कारगिल में पाकिस्तानी घुसपैठियों के विरूद्ध ऑपरेशन विजय में बोफोर्स तोप ने झंडा गाड़ इसने खुद की भारत की सबसे प्रभावशाली हथियार के रूप में स्थापित कर दिया। यह तोप 3 राउंड प्रति 14 सेकेंड की दर से 42 किलोमीटर की दूरी तक मार कर सकती है। तकनीकी हवलदार मेजर **विपिन कुमार** के अनुसार इस तोप ने शत प्रतिशत सही निशाना साधा। पहाड़ी क्षेत्रों में टैंकों की मदद के बिना आर्टिलरी क्षमता का पूर्ण इस्तेमाल किया गया। बोफोर्स तोप की सहायता से चौबीसों घंटे गोलीबारी कर दुश्मनों को सारी रात जागने पर मजबूर कर दिया गया।

जब पाक सैनिको ने अपनी जान की भीख मांगी.....

"जब राह कठिन हो तो केवल मजबूती ही मुकाम तक पहुंचती है।" यह कहावत भारतीय सैनिकों ने चरितार्थ कर दिखाई जब उन्होंने **'आपरेशन विजय'** के दौरान दुर्गम लक्ष्य को हासिल करने के लिए शत्रुओं की गोलीबारी, मौसम की मार और दुर्गम पर्वतमाला तक को नतमस्तक कर दिया।

इस दौरान दूसरी राजपुताना राइफल्स के लेफ्टिनेंट प्रवीण तोमर का कथन है कि जब उनके नेतृत्व वाले हमलावर दस्ते ने द्रास सब सेक्टर में तोलोलिंग चोटी पर पाकिस्तानी सैनिकों को घेरा तो वह अपनी जान की भीख मांगने लगे और पाकिस्तानी सैनिकों ने उनके हमलावर दस्ते से कहा, **'अबकी बार जाने दो, अगली बार हिन्दुस्तान वापस नहीं आएंगे'**

शहीदों के परिजनों के लिए "सहारा संकल्प" अनुकरणीय

सहारा इन्डिया परिवार की ओर से **'सहारा संकल्प'** के तहत कारगिल में शहीद हुए देश के वीर सपूतों के परिवारजनों के लिए आर्थिक सहयोग देने का निर्णय न केवल शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि का बेहतर प्रयास है बल्कि उनका यह कदम अनुकरणीय भी है। इससे न केवल देश के सैनिकों को आत्मबल मिलेगा बल्कि देश के लिए शहीद होने वाले जवानों का भावनात्मक संरक्षण भी होगा।

उल्लेख्य है कि सहारा संकल्प के तहत लिए गए निर्णयानुसार कारगिल में शहीद हुए वीर सपूतों के परिवारजनों के भरण-पोषण, शिक्षा, चिकित्सा, शादी-विवाह तथा उनके जीविकोपार्जन का सारा दायित्व अपने कंधे पर उठाने के लिए 50 करोड रूपये की धनराशि निर्धारित की गयी है।❑

-रा०वि०प्रतिनिधि डॉ०मेदनी दिल्ली से

जवानों की जांबाजी की

एक अलग दास्तान

-रा०वि०कार्यालय संवाददाता

कारगिल मोर्चे से वापस हुए हर फौजी का अनुभव एक प्रेरणादायक कथा है लेकिन बिहार रेजिमेन्ट के सिपाही शत्रुघ्न की इच्छाशक्ति अवर्णनीय है। उसकी घायल अवस्था में ग्यारहवें दिन वापसी सबसे रोमांचकारी है। जिस टुकडी में शत्रुघ्न संभवत: प्वांइट 4268 की चोटी फतह करने उपर चढ़ा था, उसके सभी छह साथी शहीद हो गए थे। शत्रुघ्न के पैर में गोली लग गयी थी। स्थिति बिल्कुल प्रतिकुल देखते हुए वह भी अपने मृत साथियों के बीच मुर्दे की तरह लेट गया। हैरतअंगेज बात यह है कि वह चार दिनों तक बिना अन्न-जल के बिल्कुल मुर्दा बना रहा ताकि घुसपैठियों का ध्यान मृतकों पर से बिल्कुल हट जाय। तब वह इंच-इंच कर खिसकने लगा। कई दिनों तक इसी तरह थोड़ा-थोड़ा खिसकते हुए वह किनारे तक आया और एक रात मौका देखकर नीचे उतर गया। घायल अवस्था में वह ग्यारहवें दिन वहां पहुंचा जहां सेना की चिकित्सा टुकड़ी तैनात थी। यद्यपि उसकी स्थिति बहुत खराब हो गयी थी, फिर भी गोली हड्डी में नहीं घुसी थी इसलिए उसकी टांग बच गयी।

सेना के चिकित्सकों एवं अन्य शाखाओं की भूमिका एवं उसके साहस का भी जवाब नहीं जो अगली पंक्ति (इंफैन्ट्री) की टुकडी को चिकित्किय एवं अन्य सुविधाएं मुहैया कराने मोर्चे पर जाते हैं । चिकित्सक के साथ दो सहायक और दो स्ट्रेचर ढोने वाले लोग होते हैं। ये लोग मोर्चे के उतना ही पीछे छिपकर रहते हैं जहां घायल सैनिक आसानी से पहुंच जाए। यदि वह स्वयं आने योग्य नहीं होता है तो उन्हें स्ट्रेचर पर लादकर लाया जाता है। जिसके चारों ओर स्वयं मौत बरस रही हो उसी बीच जीवन दान देते हुए डाक्टरों तथा अन्य टुकडि़यों का साहस किसी से भी कम नहीं आंका जा सकता। यह कहा जा सकता है कि कुल मिलाकर सेना के सभी अंगों के बेहतर तालमेल से ही ऑपरेशन विजय सफल हो सका।

आश्चर्य किन्तु सच

मृत प्रभुदयाल जी उठा

शहीद जवान के दर्शन की चाह में

भोपाल के सिंहपुरा गांव के निवासी 70 वर्षीय प्रभु दयाल मिस्त्री गंभीर रूप से बीमार था। एक दिन उसका देहावसान हो गया। गांव के लोग एकत्र होकर उसकी शवयात्रा की तैयारी करने लगे। उसके शव को जैसे ही अर्थी पर रखा गया तो वह जीवित हो गया और उसने अपने परिवार के लोगों से कहा कि अपने गांव के कारगिल में शहीद हुए सतवीर के अंतिम दर्शन करने के बाद ही परलोक जाएगा। और सचमुच वैसा ही हुआ। वीर सपूत शहीद सतवीर का शव जब गांव पर आया तो उसके दर्शन करने के तुरंत बाद प्रभु दयाल मिस्त्री चल बसा।

-रा०वि० संवाददाता, भोपाल

कारगिल के प्रति .....

❑ बिन्देश्वर प्र०गुप्ता

पाकिस्तान ने युद्ध थोपा तो, भारत विजयी होगा
वाजपेयी का यह कथन, शत-प्रतिशत सही होगा।
चौथी लड़ाई हुई तो, तुम्हें फिर नया हिस्सा खोना पड़ेगा।
इस कलंक को, बड़े बेआबरू होकर, तुम्हें ढोना पड़ेगा।
वायुसेना ने, दुश्मनों के खेमे में, भारी तबाही मचायी।
नवाज सुन लो, इस बार होगी, आर-पार की लड़ाई।
भारत की जनता का, एक ही लक्ष्य है, पाकिस्तान पर विजय।
भारतमाता के लाड़ले, सपूतों-कारगिल के जवानों की, बोलो जय
जो शहीद हुए, अपने वतन की खातिर, अपने सुख चैन लुटाकर
उनके खून व्यर्थ नहीं जायेंगे, सीमा पर दुश्मनों को मिटाकर।
आज देश में संकट और परीक्षा की घड़ी है आई।
मत भूलो, बड़ी मुश्किल से, हमने यह आजादी पायी।
कश्मीर हड़पने की साजिश तुम्हारी, पूरी नहीं होने देंगे।
सिर पर कफन बांधे जवान, अब तुम्हें धूल चटायेंगे।
भारत की सीमा, पर दुश्मनों के हो रहे हैं, हौसले पस्त
यदि अब भी, नहीं चेता पाकिस्तान, तो हो जायेगा अस्त।
रूक ना सके, छलक पड़े नयन, आये शहीदों के शव को देखकर
मर-मिटने की हमारी ललक, और तीव्रतर हो उठी, शव को देखकर।
जमीन और आसमान, दोनों में ही, बेमिसाल हैं हम
युद्ध के मैदान में, अपने जौहर दिखाने में, कमाल हैं हम।
घुसपैठियों की वापसी से, कुछ कम मंजूर नहीं।
हमारा निर्णय अटल है, दीखती मंजिल दूर नहीं।
हमारे जवानों ने, घुसपैठियों को, और पीछे धकेला।
देख लो नवाज, तुम्हारा पाकिस्तान, दुनिया में पड़ गया अकेला।

संपर्क : रजिस्ट्रार हाऊस, न्यू करबिगहिया, पटना-1

सीमा रक्षा हर कीमत पर देश प्राण से प्यारा है

❑रमाशंकर चंचल

आज हिन्द के नवयुवकों का एक यही बस नारा है
सीमा रक्षा. हर कीमत पर देश प्राण से प्यारा है
आज हिमालय की चोटी भी गरज उठी
आज हिन्द सागर की लहरें गरज उठी
कुर्बानी की आवाजें हर तरफ उठी
भारत की सीमा रेखाएं बरज उठी
शांति दूत है माना हमको शांति ही गवारा है
पर दुश्मन चढ़ आये लड़ने को तो फिर क्या चारा है
आज देश के दीवानों की कब जगी
देशभक्ति गंगा-यमुना की लहर उठी
खून खोलता शिव-राणा से वीरों का
मचल उठा है धीरज भी अब धीरों का
अरे हठीले पाक न समझा, कैसा देश हमारा है
भारतीयों के रुद्रनेत्र ने क्षण में दुश्मन मारा है
समझ लिया क्या तूने हमको जापानी
नहीं सुनी क्या तिरंगे की बलि कहानी
बलिवेदी पर मर कर जीने वालो हम
है देश के अमर तूफानी सेनानी
राम-कृष्ण, सन्तों और सतियों का यह देश दुलारा है
इसीलिये ओ गिरगिट, भारत हिम्मत न कभी हारा है
रणचंडी बिजली सी देखो कड़क उठी
कर्णार्जुन की ये भुजाएं फड़क उठीं
रे रानी, लक्ष्मी, दुर्गा, बेधड़क उठी
महाप्रलय की आग समझलो भड़क उठी
अरे गुमानी! उदय हुआ बस मंगल का अब तारा है
बांध कफन सिर पर तुझको हम वीरों ने ललकारा है

संपर्क- 145, गोपाल कालोनी, झाबुआ, म०प्र०- 457661

जाओ आज सरहद पर जाओ

❑डॉ०पुष्पलता भट्ट 'पुष्प'

आज विदा की बेला में
प्रिय, कैसे रोकूं,
उमड़ रहे सैलाब को।
जानती हूं, दे रहा आवाज
कर्तव्य तुमको।
नहीं-नहीं, मेरे सेनानी,
आज न मेरे आंसू देखो
भारत मां का कर्ज है, तुम पर,
जाओ आज सरहद पर जाओ।
आग उगलना बंदूकों से
ऐसी, प्रियतम,
आज, हिमालय की चोटी से
शोले भड़कें।
देखे आज जमाना सारा
वीर प्रसूता, इस धरती के
हर सैनिक बेटे के भीतर
मन-मन भर बारूद भरा है।
आज किसी पापी ने रौंदा
भारत मां का पावन आंचल।
मां न दी आवाज तुम्हें
प्रिय जाओ, जाओ प्रियतम,
जाओ आज सरहद पर जाओ

संपर्क : कश्मीर में तैनात
एक कमांडेंट की पत्नी

चलो पुकारता है कारगिल

❑मधुर नागवान

खतरे हुआ आन की,
भारत की शान को।
कसम है हर जवान को-
अपनी मातृभूमि का,
छोड़ना न एक तिल।
चलो पुकारता है कारगिल
चलो...
जो मिले घुसपैठिया,
पैर उसके तोड़ दो।
कश्मीर पर निगाह डालो,
उसको फोड़ दो।
चलो पुकारता है कारगिल
चलो....
पाक के नापाक इरादों,
का ये जवाब हो
सिर न फिर उठा सके,
गर्दनें मरोड़ दो
फाड़ डाल छाती और,
खींच कर निचोड़ दिल।
चलो पुकारता है कारगिल
चलो....।

संपर्क: मुजफ्फरनगर,उ०प्र०

रोटी

❑राजेन्द्र 'मेहुल'

बात बड़ी छोटी है
किन्तु अर्थ में मोटी है
नींद उड़ा दी जिसने
ये दो वक्त की रोटी है
अमीर-गरीब सबके नसीब
इस खूंटे से बंधे हैं
किसी के हाथ छाले
किसी के खून से रंगे हैं
कहीं की धोती कहीं की
लंगोटी है
ये दो वक्त----
इस छोर से उस छोर तक
आदमी भागता है
बोझिल कदमों से शहर की
जमीं नापता है
बड़ी मुश्किल से आती झोली में
जैसे दुल्हन बैठी डोली में
मेहनत की बेटी है।
ये दो वक्त----
शाम जब ढलती है भूख करवट
बदलती है
कहीं व्यंजन कहीं रुखा
खि जाती है
किसी किसी को भूखा सुलाती है
धरा का दुर्लभ मोती है
ये दो वक्त---
आदमी चाहे गरीब का बेटा हो
या तख्ती ताज पे लेटा हो
कहीं हर्ष कहीं विषाद फैलाती है
कहीं दंगा कहीं फसाद कराती है
महाप्रलय की पोती है
ये दो वक्त ....
वक्त की सूई जाने कितने युग
गई निगल
पर उसके दांतों से ये फिसल गई
अमृत कलश इसने पिया
हलाहल आदमी को दिया
खुद काल की कोठी है
ये दो वक्त......
बस मिटता है आदमी
मिटता जाएगा
पियादे से फर्जी पिटता जाएगा
'मेहुल' जीवन किसान की
कैसी गोटी है
ये दो वक्त......

संपर्क: लेखा कार्यालय,जी.सी. एफ, जबलपुर (म०प्र०)

कोमल तंतु

❑डॉ० मधु धवन

सुनो!
यह धरती हमारी है
इस पर हमारे
दादा-परदादा ने
लहू बहाया है
इसे पुरखों ने
सींच अपने श्रमकण से
खूब फल-फूल उगाये हैं
इस पर
हमने पाया है
सत् चित् आनन्दभाव
इस पर चहकते हैं
खगवृन्द बार-बार
प्यार-ममता के गीत
गाये हमने अनेक बार
यह
ममतामयी धरती हमारी है
इसके भीतर
न जाने नफरत की
खानें, नाना वनस्पतियां
कहां से उग आयी हैं
हमने उखाड़ फेंके हैं
नफरत, घृणा-द्वेष
जलन के कांटेदार
जहरीले पौधे
खेद है
जितना उखाड़ते हैं
उतने ही
फिर उग आते हैं
जंगली घास की तरह।
सुनो!
इस पर मत दौड़ाओ
घृणा-द्वेष के जेट
मत गाड़ो ध्वज
और त्रिशूल
मत करो रक्तपात
और मनमानी।
हमारी धरती में
दिल है
होता है इसको
दुख से दर्द
सुख से हर्ष----
इसकी कराह
हमारा चैन छीन ले जाती है
मत करो कोई छेड़छाड़
क्योंकि
यह धरती हमारी है----।

संपर्क: के-3 अन्नानगर, चेन्नई

राष्ट्रकवि दिनकर के प्रति

❑अश्विनी कुमार आलोक

साहित्य गगन के प्रखर सूर्य उदयाचल तेरा गौरवमय
दिनकर दिन करकर तेजवान, हे क्रांतिदूत हे अमित अभय
धरती की अवध कहानी के संवेदी, स्रष्टा, कलाकार !
स्वीकारो मेरा नमस्कार !
जब चोर-उचक्के मंचों पर चढ़-चढ़कर गर्जन करते हैं
सब दलित, हीन, शोषित जन को बस बहलावों से हरते हैं।
तब आज अचानक संसृति में भीषण कोलाहल उठता है
कोई अंदर में रोता है, कोई बस खड़ा सुलगता है।
पर हवा नहीं है, चिनगारी बुझती-बुझती-सी जाती है
वाणी का सुर संधान करे धारा बहकर रुक जाती है।
ऐसे में तेरी आज हाय आती स्मृति है बार-बार ।
स्वीकारो मेरा नमस्कार !
परशुराम में राम नहीं, केतल परशु चिल्लाता है
दुर्भिक्ष-दुराग्रह-अग्नि काल भीषण'हुंकार' सुनाता है।
तब खड़ा पुरुरवा अति आकुल 'उर्वशी' को भला पुकारे क्यूं!
तब कालकूट-कण-व्याल-काल अपना निर्मोक उतारे क्यूं !
है कौन हवा में, पत्तों में, जो अपने-आप पनपती है
इस उमस भरी दोपहरी में'रसवंती' खड़ी कलपती है!
यह दूर देश का धुंआ अरे तोड़े 'संस्कृति-अध्याय चार' !
स्वीकारो मेरा नमस्कार !
हैं 'नीलकुसुम' ओ 'कुरुक्षेत्र' जीवन, जीवन के मूर्त्तरूप
उद्दाम चेतना का भस्वर वह पात्र्चजन्य मेरी अनूप।
गाया होगा चट्टानों पर चढ़ जब भी तुमने 'द्वन्द्वगीत'
तब सहमी हुई किनारों पर दिल्ली बोली हा ! हा ! अतीत।
वह भोली ग्राम्य सुशीला-सी रेणुका' रेती के फूलों' सी
सदियों से अलग-थलग रहकर है पास नदी के कूलों-सी।
वह व्योम कुंज की परी अरे सहती कैसे है यह प्रहार !
स्वीकारो मेरा नमस्कार !

संपर्क- प्रभा निकेतन, धरणी पट्टी, समस्तीपुर-848506

विश्वासघात का विश्वकप

❑प्रहलाद श्रीमाली

हालांकि पाकिस्तानी खिलाडियों ने खूब जोर मारा,
लेकिन फिर भी
क्रिकेट का विश्वकप लेने में
पाकिस्तान पिछड़ गया बेचारा।
विश्वस्तरीय योग्यता देखाते हुए उसके साथ
व्यवहारिक आचरण किया जाएगा।
यानी पाकिस्तान को सर्व सम्मति से
विश्वासघात का विश्वकप दिया जाएगा।
लेकिन उससे पहले
देश की सीमा की रक्षा के लिए बहे
भारतीय जवानों के खून की
एक-एक बूंद का हिसाब लिया जाएगा।

संपर्क:31, रघुनाथकुलु स्ट्रीट, पार्कटाउन, चेन्नई

आज के नेता

❑डॉ० बद्री कान्त झा

नेता की नजर है कुर्सी की
ओर।
जनता में यह मच गया शोर।।
लठ-लाठी पर जोर लगाता।
तरह-तरह हथकंडे अपनाता।
कानून की नजर न उनकी ओर।
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।
वोट समय वे वादा करते।
बाद में अपना मुख को फेरते।
उनकी करतूति है बेजोड़।
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।
बक्शा पर घात लगाते हैं।
वोटों को खूब चोराते हैं।
बलजोरी करने में बेजोड़।
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।
एक दूसरे पर कीचड़ उछालते।
मन की मैला नजर न आते।
आग लगाने में बेजोड़।
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।
पहले भी नेता होते थे।
जो देश की सेवा करते थे।
आज के नेता अनीति की ओर।
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।
घोटाले पर होते घोटाला।
भ्रष्टाचार पर लगे न ताला।
कारनामें होते बेजोड़।
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।
सत्ता हथियाते नोट कमाते।
परदे पर उपदेश सिखाते।
हमरी पार्टी बड़ा बेजोड़
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।
जिस पार्टी से खतरा पाओ।
झटपट उस पर चक्र चलाओ।
नाटक करने में बेजोड़।
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।
वह नेता सच्चा कहलाये।
जो जनता में प्रेम फैलाये।
जन सेवक हो बड़ा बेजोड़।
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।
क्या राम राज्य फिर आयेंगे।
जनता आनन्द मनायेंगे।
भारत माता करे किलोल।
नेता की नजर है कुर्सी ओर।।❑

संपर्कः 68/4 सेक्टर-एक, पुष्प विहार
एम०बी० रोड, नई दिल्ली-17

आज की राजनीति

डॉ०सहदेव सिंह 'पाचर'

सर्वोच्च न्यायालय में एक
वैश्यालय ने
ऐतिहासिक केस किया
अपने को प्रस्तुत किया,अपना
पक्ष पेश किया
हुजूर, जो काम हम लोग किया करते थे
वही काम आज की राजनीति कर रही है
हरही हाथी की तरह खेत चर रही है
यहां तक की अपने महावत से भी नहीं
डरती
फर्क इतना ही है कि हम लोग,
कोठा पर रहा करते थे।
और यह कोठी में रह रही है।

संपर्क : भभूआ, वार्ड नं०-11, कैमूर

मौत

पी.के.बंद्योपाध्याय

जनम का उम्र मौत,
एक प्रवेश द्वार
जहां आसूओं से सिक्त-
फिसलता हुआ जीर्ण
संसार प्रांगण।
सांस निकालने में
कोई क्रांति नहीं हुई,
पापी को मुक्त किया
मृत्यु पुरस्कार दे कर।
जीवन प्याला कर्म स्त्रोत में
बह रहा है,
लहर उठा तो प्याला
डूब गया।
उम्मीद लाशों की, कभी,
धन और बुद्धि सदस्य थे।
संसार जनसमुदाय में
भीख मांग कर
उम्मीद को पूरा किया।
देश की मौत विभाजन में,
इन्सान की लालसा में।
राजनीतिक दल-बदल में
कुसुम की मौत हवा से।
यह देह एक विरासत
आत्मा राजा एवम् योद्धा।
राजा मौत को चूमता है,
समझौता नहीं करता। ❑

संपर्क: स०मु०सु०अधिकारी, ईरिन, नासिक
रोड, (महाराष्ट्र)

आज नहीं तो कल ये बादल बरसेंगें

❑राष्ट्रबंधु

आज नहीं तो कल, ये बादल बरसेंगें
भावों के चौपाए मुक्त लगे फिरने,
थका हुआ चरवाहा चैन न पायेगा।
मुरली की ध्वनि यदि राधा ने सुन ली है,
व्याकुल अंतर कवि बन कर कुछ गायेगा।।
तपी हुई धरती बिजली बन कड़केगी,
कब तक प्यासे नैन तृष्णा से तरसेगें।
आज नहीं तो कल ये बादल बरसेंगें।
दिन बहुरेंगे कभी बहू के बीस भी,
उसको लेने आयेंगे फिर सावन में।
बारह बरस बाद धूए भी बदलेगा,
आशा अचल न रह सकती है जीवन में।।
पीहर की हर गली सुहानी लगती है
ज्वालामुखी खनिज तत्वों को इपरसेगें।
आज नहीं तो कल ये बादल बरसेंगें
तूफानों को सागर रोक नहीं पाया,
आंसू की बूंदों से गयी मिट्टी नहीं।
सहनशीलता अपनी सीमा तोड़ गा
किसी मोल पर मन की पीड़ा बिकी नहीं।।
काले बादल धवल अंक फिर से हरसेंगे।
आज नहीं तो कल ये बादल बरसेंगें।।

संपर्क- रामकृष्णनगर, कानपुर-208012

अंधियारे की कोख से

❑ब्रजबिहारी पटेल

अंधियारे की कोख से निकलेगा उजियास
फुरसत किसे जो देखता, फूल फूल के रंग।
रंग रंग के दिख रहे, अब लोगों के ढंग।।
किसको कब या किस तरह, यह समाज दे दण्ड।
सत्ता का सिरमौर जब, बना हुआ पाखण्ड।।
कर्मकाण्ड में आजकल, ऐसे कई प्रसंग।
ढोंग रचे जितना कोई, उतना रहे दबंग।।
कर्मचारी होने लगे, कामचोर मुँहजोर।
शहंशाह बजार के, हुये मुनाफा खोर।।
रंग बदल के खेल में, गिर गिट खा गये मात।
कालिख मुँह पर पुत गई, पडी कुएं में भंग।।
लोकगीत हतप्रभ हुये, ढोल मंजीरे झाँझ।
मन डूबा कुछ इस तरह, जैसे हो गई साँझ।।
रहा सत्य इस तरह अडिग, अंतिम समय अटूट।
तीन तेरह तिकड़म हुई, पडी फूट में फूट।।
इसी आस पर टिका हुआ, जीवन का विश्वास।
अंधियारे की कोख से, निकलेगा उजियास।।

संपर्क-जी.ए.डी/15 अधिकारी निवास (म०प्र०)

अरुणा आसफ अली: हिन्दू-मुस्लिम एकता की मिसाल

❑ सिद्धेश्वर

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने वाली वीरांगना श्रीमती अरुणा आसफ अली जीवन भर मुस्लिम कट्टरता के खिलाफ जूझती रही। कई मौकों पर मुस्लिम लीग से लेकर कांग्रेस व वामपंथियों की भी तीखी आलोचना करने से वह वाज नहीं आयी।

आजकल एक फैशन यह चल गया है कि हर राजनीतिक दल धर्मनिरपेक्ष होने का दावा करता है। यहां तक कि मुस्लिम लीग के नेता इब्राहिम सलमान सेठ ने भी कहा है कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग धर्मनिरपेक्ष पार्टी है। श्रीमती आसफ अली का मानना था कि हर बड़े राजनीतिक दल ने राजनीतिक फायदे के लिए समय-समय पर धार्मिक भावनाओं को भड़काकर आम जनता का इस्तेमाल किया है। खासकर चुनाव के दिनों में तो यह आमतौर में देखने में आता है। यहां तक कि वर्ष 1969 में मुस्लिम लीग को न केवल सरकार में शामिल किया गया बल्कि मालाबार क्षेत्र में मुस्लिम बहुल **मलपुरम** जिले का गठन किए जाने का आश्वासन दिया गया था।

महात्मा गांधी के **भारत छोड़ो आन्दोलन** के आह्वान पर श्रीमती आसफ अली ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कर जीजाबाई, लक्ष्मीबाई की कतार में अपने को खड़ा किया। इसके पूर्व वर्ष 1928 में आसफ अली जैसे प्रखर राष्ट्रवादी नेता से शादी कर हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल कायम कर श्रीमती अरुणा जी भारतीय इतिहास के पन्नों में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा गयीं। अपने लम्बे राजनीतिक जीवन में अपने सिद्धान्तों और मूल्यों से न तो उन्होंने कभी समझौता किया और न ही किसी पार्टी या विचारधारा से वह बंधकर रहीं। वे कभी भी किसी व्यक्ति की अंधभक्त नहीं बनी। यही कारण है कि उन्होंने कांग्रेस से लेकर सोसलिस्ट पार्टी और फिर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को अपनाया किन्तु बाद में उनका सबसे मोहभंग हुआ और सिद्धान्तों के लिए महात्मा गांधी से लेकर जवाहरलाल नेहरू तथा जयप्रकाश नारायण सरीखे नेताओं से भी वह लड़ती रहीं।

नेशनल बुक ट्रस्ट के द्वारा श्रीमती अली की 90 वीं जयंती के अवसर पर प्रकाशित उनकी जीवनी का लोकार्पण सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता तथा योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष प्रो०मधुदण्डवते ने किया। इस जीवनी के लेखक हैं **दी टाइम्स ऑफ इन्डिया** तथा **दी इन्डियन टाइम्स** से जुड़े वयोवृद्ध पत्रकार श्री एन०एस० राघवन। इस जीवनी में श्रीमती अरुणा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कुछ अनछुए पहलुओं की जानकारी मिलती है। 72 वर्षीय श्री राघवन, जो द्वितीय प्रेस आयोग के सचिव रह चुके हैं ने इस पुस्तक में श्रीमती आसफ अली के न केवल विशिष्ट योगदान पर प्रकाश डाला है अपितु उनके बारे में कई नयी जानकारियां प्रस्तुत की हैं। इस पुस्तक के अनुसार श्रीमति अरुणा जी ने मुस्लिम लीग की राजनीति का डटकर विरोध किया था और गांधी तथा नेहरू को भी खतरे की ओर आगाह किया था। ग्यारह जून, 1947 को भारत-पाक विभाजन के बारे में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का जो मौलाना आजाद द्वारा अनुमोदित प्रस्ताव पारित हुआ था उसके खिलाफ श्रीमती आसफ अली ने आवाज उठाई थी। उस समय श्रीमती अली दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष थीं। उन्होंने अपने समाजवादी मित्रों से कहा था कि कांग्रेस देश का बटवारा कर ब्रिटिश सरकार की चाल में फंस गयी है लेकिन नेहरू, पटेल और अन्य नेताओं के सामने उनकी एक न चली। श्रीमती अरुणा जी ने जब मुस्लिम लीग द्वारा उठाई गयी पाकिस्तान बनाने की मांग सुनी तो उन्हें डपटकर कहा-**अंग्रेज** तुम्हें पाकिस्तान दे सकते हैं लेकिन बाद में तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारे दुश्मन हिन्दू नहीं हैं जिनसे तुम अलग होना चाहते हो। बंगाल में जो मुसलमान अकाल से मर रहे हैं उन्हें श्रीमती अली ने मुस्लिम कट्टरवाद को तब चुनौती दी, जब उन्होंने श्री आसफ अली से विवाह कर हिन्दू-मुस्लिम एकता का परिचय दिया।

श्रीमती अरुणा आसफ अली ने धद्म धर्मनिरपेक्षता की भी आलोचना की। उन्होंने एक बार नेशनल हेराल्ड समाचार पत्र में एक लेख में लिखा था कि आजादी के लिए धर्मनिरपेक्षता (सेक्युलरिज्म) को अपनाने वाले देश के साथ धोखा हुआ। इस देश ने अपना अर्थ ही खो दिया है। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद हुए दंगों, बाबरी मस्जिद के विध्वंस और शाहबानो प्रकरण में कांग्रेस के रवैये को देखकर श्रीमती आसफ अली इस निष्कर्ष पर पहुंची थीं कि **धर्मनिरपेक्षता** के नाम पर देश में दोहरापन रहा है।❑

पति-पत्नी के रिश्ते में क्यों दीवार खड़ी हो जाती हैं?

❑अंजलि

भारतीय सामाजिक परिवेश में महिलाओं और पुरुषों की भागीदारी समान रूप से विभाजित की गयी है। जहां पुरुषों को इसका आर्थिक भाग सौंपा गया है, वहीं महिलाएं अपने घर, बच्चों और पति का दायित्व संभालती हैं। महिलायें अपने उत्तरदायित्व के दायरे में सिमटी रहती हैं। एक आम भारतीय घरेलू महिला की सोच अपने घर और उसके काम तक ही सीमित रही है। उसका अपना या अपने लिए कोई समय नहीं होता है। पर पति चाहता है कि पत्नी उसके लिए थोड़ा समय निकालकर उसकी देख-रेख करे। यह संभव नहीं हो पाता। जिसके फलस्वरूप पति-पत्नी के बीच विवाद खड़े हो जाते हैं।

दूसरी तरफ अगर पत्नी कामकाजी होती है और उन्हें ज्यादातर घर से बाहर ही रहना पड़ता है इसलिए पत्नी घर का आधा-अधूरा काम पति पर छोड़कर चली जाती है। जिससे कुढ़ते-घुटते पति एक दिन विरोध करने लगते हैं और झगड़े उत्पन्न हो जाते हैं। कुछ महिलाएं राजनीति में भाग लेती हैं। पर राजनीति में टिक पाना उसके लिए कठिन हो जाता है क्योंकि उसका चरित्र चाहे कितना ही साफ क्यों न हो, पुरुष उसके चरित्र पर प्रहार करने से बाज नहीं आते और अपनी पत्नी के चरित्र पर शंका करने लगते हैं।

कुछ संवेदनशील पुरुष स्त्री को स्वतंत्रता देना चाहता है, लेकिन कहीं वह उससे आगे न बढ़ जाय, इस हीन-भावना से भी वह पीड़ित रहता है। तो यह भी एक विवाद का कारण बन जाता है। इसलिए कहते हैं कि **पति-पत्नी का रिश्ता यदि आपसी विश्वास और सामंजस्य की बुनियाद पर नहीं टिका हो तो उसे दरकते देर नहीं लगती।**

महिला का नेतृत्व पुरुष से विशेष व्यवहार कुशलता की अपेक्षा करता है। पुरुष के लिए अपनी अभ्यस्त भूमिका से अलग होना मुश्किल है, इसलिए पत्नी हमेशा उसके स्वभाव पर तरस खाती है, इसीलिए उससे सलाह लेना कभी नहीं भूलती। जहां ऐसा नहीं होता, वहां विघटन का दौर शुरु हो जाता है।

आज महिलाएं भी अपने अधिकारों के प्रति चैतन्य हो गयी हैं और अपनी बराबर की सहभागिता की वे अपने पति से अपेक्षा करती है। हर कार्य में वह चाहती है कि उसका पति भी उसका साथ दे और जब पति वैसा नहीं कर पाता है तो दोनों में तनाव उत्पन्न होता है जिसकी वजह से दोनों के रिश्ते में दरार पड़ने लगते हैं।

हम एक ऐसे समाज में रह रहे हैं, जो तेजी से प्रगति की ओर अग्रसर है, ऐसे में भावानात्मक स्तर पर आपस में भेदभाव पैदा करने के बजाय हाथों में हाथ डाल, कदम से कदम मिला कर जीवन सफर तय करना होगा।❑

समीक्षा

सफेद चादर का लोकार्पण व समीक्षा

प्रस्तुति : मनोज कुमार

विगत 15 जुलाई, 1999 को वीरचन्द पटेल पथ स्थित सोनभवन स्काडा बिजनेस सेन्टर के सभागार में राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा आयोजित एक समारोह में मंच के अध्यक्ष तथा राज्य निर्वाचन आयुक्त श्री जियालाल आर्य, भा०प्र०से० के सद्यः प्रकाशित उपन्यास "सफेद चादर" का लोकापर्ण पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री बी०पी०सिंह ने किया। पुत्र अपने पिता की बात माने या न माने पर सास की बात बहू को माननी है, इस पंक्ति को अपने उदगार में व्यक्त कर न्यायमूर्ति श्री सिंह ने उपन्यास सफेद चादर की मूल भावना को उजागर करते हुए आज के समाज की नारी के असली रूप को सामने रखा। इसलिए स्त्रियों से जुड़ी जिन प्रथाओं को बदलना चाहिए था उसे हम नहीं बदल सके हैं, उन्होंने पुनः कहा।

समारोह के मुख्य अतिथि तथा देश के जाने माने आलोचक साहित्यकार डा० कुमार विमल ने कहा कि श्री आर्य ने अपने क्षेत्र अमेठी के जनपदीय जीवन में पाप्य कुरूपता और सुरूपता, दोनों को अपने उपन्यास में समानान्तर रखा है।

मंच के महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने इस अवसर पर आयोजित विचार संगोष्ठी के निर्धारित विषय "आज के समाज की नारी और सफेद चादर" का प्रवर्तन करते हुए कहा कि आज के मिथक ने न केवल स्त्री के पूरे के पूरे व्यक्तित्व का सतत् घेराव किया है अपितु प्रक्रिया को इतना स्वाभाविक, इतना मूलभूत और इतना सर्वव्यापी बना दिया है कि वह अपनी अपनी पराधीनता का अनुभव भी नहीं कर पाती। ऐसी स्थिति में सक्रिय हस्तक्षेप से व्यापक फेर बदल की गुंजाइश है।

उपन्यासकार श्री जियालाल आर्य ने उपन्यास की पृष्ठ-भूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनके गांव के आसपास के कुछ पात्र अपनी कथा लिखने के लिए उन्हें लंबे अरसे से मौन प्रेरणा दे रहे थे। उस पूरे कथा-वृत को ही बांधने का प्रयास इस उपन्यास में किया गया है।

समारोह के विद्वान अध्यक्ष डॉ० श्री रंजन सूरिदेव ने अपने अध्यक्षीय भाषण। में कहा कि यह उपन्यास वस्तुतः मानव के मनोभावों की जटिलता और उसके जीवनगत वैषम्य और संघर्ष की सम्यता का उपन्यास है जिसमें लेखक की भूमिका एक ऐसे 'कथा कोविद' की है, जिसे कथा कहने की विस्मयकारी क्षमता प्राप्त है।

यह उपन्यास सफेद चादर मूलतः एक भारतीय नारी की महनीय गौरवगाथा से मुखरित है। कथा वस्तु के पल्लवन के लिए कथाकार ने मूलकथा के साथ उपकथाओं और अन्तः कथाओं की भी योजना की है, परन्तु वे सभी अपेक्षित न होकर मूलकथा के पूरक हैं, जिनमें कामकथा भी है, स्वतन्त्रता-संग्राम और समाज-सुधार की भी कथा है और गाँव की गन्दी, ईर्ष्या द्वेष-दग्ध विध्वंसात्मक राजनीति में रस लेते पुलिसिया महकमे की भी प्रभावकारी कथा का विनियोग हुआ है। कुल मिलाकर, इस उपन्यास का मूल तत्व समाज में नारी, विधवा नारी की स्थिति का मूल्यांकन है वैसी नारी, जो पूरे आत्मविश्वास के साथ समाज की समग्र प्रताड़ना का निष्कम्प भाव से सामना करते हुए अपने को सर्व विजमिनी शक्ति की भूमिका में प्रतिष्ठित करती है। इस प्रकार, यह उपन्यास एक सोद्देश्य और सफल रचना है, इसमें सन्देह नहीं।

संगोष्ठी इस अवसर पर 'राजभाषा' पत्रिका के विद्वान संपादक प्रकाशित 'राजभाषा' पत्रिका के सम्पादक डॉ० कुणाल कुमार ने श्री आर्य की इस कथाकृति की विस्तार से समीक्षा प्रस्तुत करते हुए इसे अनेक संदर्भों में उपन्यास जगत की एक अनूठी उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि इस उपन्यास में समष्टिहित की व्यापक दृष्टि से सम्पन्न एक ऐसी सशक्त और सतत् संघर्षशील ग्रामीण विधवा नारी की कथा है, जो नारीमुक्ति की संभावनाओं को सहज सम्भाव्य बनाती है। घोर कायिक और मानसिक उत्पीड़न तथा अत्याचार के बावजूद श्री आर्य की नायिका की महती मानवीय संवेदना और समाजिक संचेतना किंचित कुंठित नहीं होती, अपितु भांति-भांति की कुरीतियों- कुत्साओं के विषदश से विमूर्च्छित मनुष्यता की मर्मन्तुहद जर्जरता को उन्मूलित करने का उसका उत्साह उत्तरोत्तर अदम्यतद होता जाता है।

संगोष्ठी के दूसरे वक्ता थे मगध विश्वविद्यालय के डॉ० शिवनारायण जिन्होंने इस उपन्यास पर अपनी समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारतीय समाज में विधवा स्त्री को कमजोर माना जाता है किन्तु कथाकार श्री आर्य ने अपने उपन्यास में इस अहसास को गलत ठहराया है। इस उपन्यास की एक विधवा ने परिस्थितियों को समझा और समाज से लड़ने और स्वयं जीने का रास्ता ढूंढा। पुरुषों द्वारा स्थापित मूल्यों की परिभाषा पर प्रश्न चिन्ह लगाती हुई उन तमाम स्थापित वर्जनाओं की दीवारों को ढाहती नजर आती है जिनमें उसे सदियों से कैद करके रखा गया था। उपन्यास की यह विधवा नारी आज की करोड़ों स्त्रियों के जेहन में उठते सवालों को अभिव्यक्ति दे रही है।

प्रारम्भ में मंच के उपाध्यक्ष डा.एस.एफ रब ने उपस्थित अतिथियों और प्रबुद्ध श्रोताओं का तहेदिल से स्वागत किया तथा अंत में मंच के आजीवन सदस्य श्री कामेश्वर मानव ने उनके प्रति आभार व्यक्त किया। समारोह एवं संगोष्ठी को नगर के जिन प्रतिष्ठित साहित्यकारों एवं प्रबुद्धजनों ने अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित कर आयोजकों का मनोबल बढ़ाया उनमें पत्रकार जितेन्द्र सिंह, समीक्षक डॉ. शिववंश पाण्डेय, गज़लकार के. के. विद्यार्थी, भू-वैज्ञानिक डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह तथा भा.प्र. सेवा के वरिष्ठ अधिकारी एवं साहित्यकार व्यासजी, सुभाष शर्मा, साहित्यकार नृपेन्द्रनाथ गुप्त, डॉ. नरेश पाण्डेय 'चकोर', प्रो. कैलाश स्वच्छन्द आदि का नाम उल्लेखनीय है।□

संपर्कः संयुक्त सचिव (साहित्य), राष्ट्रीय विचार मंच, पटना-1

व्यंग

चुनाव-तू-ना-आओ

❑प्रो० राम भगवान सिंह

बावन सालों की कड़ी मेहनत और पक्के इरादों से हमारा कृषि-प्रधान देश आज राजनीति-प्रधान देश हो गया है। कोई इसे उपलब्धि माने न माने हम तो स्वयं अपनी पीठ ठोंक रहे हैं। अन्न उत्पादन में आत्मा-निर्भरता के बाद राजनीति में नई-नई तकनीक का आविष्कार कर आज हम इसे पेटेन्ट कराकर निर्यात करने की क्षमता प्राप्त कर चुके हैं। यह बात और है कि हम बासमती चावल, जामुन, करेला और बैंगन को पेटेन्ट नहीं करा सके; लालची अमेरिका ने पेटेन्ट करा लिया। हम लोभी, लालची नहीं हैं। हमारे पास तो सारे धनों से उत्तम संतोष धन है। कहा गया है, **"जब आए संतोष धन, सब धन धूरि समान"**। हमें कोई चिंता नहीं। चिंता करने से चतुराई घटती है। देववाणी में एक सूक्ति है, **"संतोषात् परम सुखम्"**। इसलिए हम चावल और नीम-करेले जैसी चीजों को पेटेन्ट कराने की चिंता नहीं करते। हम तो अपनी राजनीति की नई तकनीकों को भी पेटेन्ट करने की चिंता नहीं करते, मगर अपनी अत्याधुनिक राजनीतिक तकनीक दुनिया को दिखा देना चाहते हैं। हम संसार को इस तकनीक का मुफ्त दान कर सकते हैं; आदिकाल से जगत गुरू जो ठहरे!

राजनीति को अब तक उद्योग का दर्जा कहीं नहीं मिला है, मगर हमने इसे अलिखित, अघोषित उद्योग बना दिया है। हमारी आबादी के समानान्तर यह उद्योग आतंकवाद की तरह फैल रहा है। इस पर मूल्य वृद्धि और मुद्रा स्फिति का अनिष्ट प्रभाव नहीं पड़ता। और सबसे बड़ी बात है, यह है सौ फीसदी स्वदेशी। इसलिए सारे के सारे दलवाले इसके समर्थक हैं और लघु उद्योग से लेकर बड़ी-बड़ी कम्पनियां स्थापित कर रहे हैं। इसके लिए न तो गारंटर की जरूरत पड़ती है और न ही सीडमनी की। जनतंत्र में जन ही धन है। जहां चार जन खड़े हो गए, एक राजनीति कम्पनी रजिस्टर्ड हो गई। एक तख्ती लगा दीजिए तो अच्छा, न लगाइए तो भी अच्छा। वैसे तख्ती न लगाने से खर्च बचता है क्योंकि दूसरे दिन कम्पनी का नाम बदलने पर दूसरी तख्ती लिखवाने की जरूरत नहीं होती। और फिर नाम में क्या है। रोज बदलिए, बस आप मत बदलिए। गिरगिट भी अपना रंग ही तो बदलता है, रहता तो वह गिरगिट ही है।

इन कम्पनियों का समय-समय पर मेला लगता है, जैसे बिहार के सौराठ का वर-मेला। इस मेले में सैकड़ों नौजवान दूल्हे सज-धजकर जगह-जगह बैठते हैं और उनके अभिभावक विक्रेता अपने दूल्हे की विशेषताएं बताकर खरीदारों से उसकी कीमत वसूलते हैं। खरीदार दूल्हे के रंग-रूप, कद-काठी, घर-परिवार, शान-शौकत देख-समझकर उसे खरीदते हैं। उसे चलाकर देखते हैं कि वह चलने लायक है कि नहीं; उसके दांत देखते हैं कि वे खाने के हैं या दिखाने के। उसी तरह उसके कान देखते हैं कि वह कान का पक्का है या कच्चा। उसकी नाक देखते हैं कि वह कितनी ऊंची है और उसकी आंख देखते हैं कि कितनी पैनी दृष्टि है उसकी। वैसे आंख का अंधा मगर गांठ का पूरा हो तो चल जाता है। दूल्हा चुनने का यह मेला वसंत ऋतु में आता है, फिर भी आज राजनीतिक दूल्हों के चुनाव के आगे फीका पड़ गया है।

हमारे यहां चुनाव क्या आता है, बरसात आ जाती है। कृषि की जान बरसात में बसती है तो राजनीति की जान चुनाव में। बरसात और चुनाव जुड़वां बहने हैं। आप लिंग पर मत जाइए। चुनाव प्रकृति से स्त्रीलिंग है। भाषा से पुल्लिंग है तो क्या हुआ? आज की स्त्री क्या जीन्स-पैंट नहीं पहनती? क्या उसके ब्वाय बॉब कट बाल नहीं होते? क्या उसके नाम मर्दाने नहीं होते? उसी तरह जान लीजिए **यह चुनाव भी बिना साड़ी की नारी है, बिना कुंतल की कामिनी है, बिना ओढ़नी की औरत है और बिना लाज की जोरू है।** हां, तो चुनाव बरसात की बहन है, वही रंग, वही ढंग, वही चमक, वही ठसक, वही गर्जन, वही आकर्षण। जैसे बरसात ऋतु चक्र के अनुसार आती है, वैसे ही चुनाव भी निश्चित कार्यकाल के बाद आता है। और जिस तरह बेमौसम बरसात आ जाती है, उसी तरह बेसमय चुनाव आ जाता है जैसे विवाह पूर्व संतान।

देश में चुनाव के बादल छाते ही खेतिहर नेताओं की बाछें खिल उठती हैं। मन में उम्मीदों के लड्डू फूटने लगते हैं। लगता है, सत्ता की प्यास और कुर्सी की भूख मिटाने के लिए स्वयं चुनाव देव चुनाव आयोग के निर्वाचन सदन में नेताओं के भाग्य-विधाता, हित रखवाला, दीन दयाला बनकर प्रकट हो गए हैं। कुर्सी शीशे के अन्दर रखे ताजमहल की तरह पारदर्शी दिखाई पड़ने लगती है। इस बुलेट-प्रूफ पारदर्शी बैलट बॉक्स को भेदकर और स्वयंवर जीतकर कुर्सी कन्या से वरमाला पहनने की आकांक्षा अंगड़ाई लेने लगती है। आकाश में हवाई जहाज और हेलिकॉप्टर बादल बनकर छा जाते हैं। विभिन्न दलों के नेताओं का गर्जन परस्पर टकराकर दिलों को दहला देता है। अपने-अपने विरोधी के प्रति उनके मौखिक प्रक्षेपास्त्र आकाश में बिजली की तरह कौंधने लगते हैं। आरोप-प्रत्यारोप की तलवार चमकने लगती है। और फिर ठंढ़ी-ठंढ़ी मौसमी हवा के झोंके शुरू होते हैं आश्वासनों की नमी से तर-बतर। महंगाई, गरीबी और भ्रष्टाचार से झुलसे तन-बदन को ठोस और स्वच्छ प्रशासन का सब्ज बाग कानों में सुमधुर संगीत घोल देता है, आंखों के आगे फिल्मी दृश्य की तरह स्वप्न लोक की रील चालू हो जाती है।

और तब शुरू होती है बरसात-पैसों की बरसात। गढ़े, तालाब भर जाते हैं और मेढ़क कार्यकर्त्ताओं की नन-स्टॉप टर्राहट शुरू हो जाती है। लोग रंग-बिरंगे झंडे-पताखे लहराने लगते हैं। जैसे बरसात में बच्चे कागज की नाव बनाकर अपने घर-आंगन में खेलते हैं, इस पैसे की बरसात में नेतागण जीप, कार और दोपहिया वाहन का सिंकारा लेकर निकल पड़ते हैं-चुनाव की बाढ़ में। इस बाढ़ में कभी-कभी भयानक लहरें उठती हैं और इस लहर पर किसी का बजरा नाचता हुआ किनारे पर आ लगता है तो अनेकों नावें चूर-चूर होकर गंगा लाभ हो जाती हैं। नौकावाले की मूल पूंजी भी डूब जाती है। इस बाढ़ में किसी-किसी को छोटी-बड़ी मछलियां मिल जाती हैं तो किसी-किसी की नौका ही उलट जाती है। कभी किसी को अपना ही साथी पानी में धकेल देता है। दूसरी ओर सफल नाविक अपने पानी के पैसे से नाव से स्टीमर और स्टीमर से जहाज खड़ा करता है और जहाजरानी का स्वामी हो जाता है।

चुनाव शब्द बड़ा ही अर्थ सूचक है। इस शब्द का पोस्टमार्टम करने से पता चलता है कि यह चूना और नाव के योग से बना है। चूंकि यह बरसात धर्मा है, इसलिए इसका राशि फल नाव है। चुनाव बरसात लेकर आता है, इसलिए जिसकी नाव इस बरसात में सलामत चलती रहती है, वह पार लग जाता है। ठीक इसके विपरीत, जिसकी नाव चूने लगती है, वह इस चुनाव की बाढ़ में डूब जाता है। निष्कर्ष यह है कि चुनाव की बाढ़ पार करने के लिए उम्मीदवार को ऐसी नाव की जरूरत पड़ती है जो चुए नहीं, उसमें गैंडे की खाल का अस्तर हो तो सबसे अच्छा। अन्यथा जिसकी नाव चू गई, वह व्यक्ति चूक गया। प्रश्न है, पैसे की बाढ़ में कौन सी नाव दो-चार कतरे से परहेज कर सकती है। ऐसी सपाट, सन्यासिनी, सोलह आने लोभशून्या नाव कहां मिलेगी जिसमें राई भर भी छेद न हो। सच तो यह है कि जिस तरह साधु-सन्यासी रूपसी अप्सरा को देख बेकाबू हो जाते हैं, उसी तरह नाव भी पैसे की बाढ़ में अपना संयम खो बैठती है।

एक बात और-चुनाव में अन्तर्निहित है, चूना। एक ओर जहां यह किसी के माथे तिलक-चंदन लगाता है, वहीं अनेकों को चूना भी लगाता है। प्यार का यही दस्तूर है-एकनिष्ठता। चुनाव को भी एक समय में एक से ही आसक्ति होती है। वैसे दूसरे चुनाव में अन्य अभ्यर्थियों के लिए पर्याप्त गुंजाइश रहती है। इसीलिए तो मदिरा की तरह कड़वाहट के बावजूद इसका नशा एक बार लग जाने पर उतारे नहीं उतरता। पर यह छोटी सी बात मेरी छोटी सी बच्ची सुधा क्या जाने जो अपनी तुतली आवाज में चुनाव को कहती है-तू-ना-आओ। अर्थात् चुनाव, तुम मत आओ।❑

संपर्कः अंग्रजी विभागाध्यक्ष
बी० एस० कॉलेज, लोहरदगा,- 835302

बॉस का बॉस सुपर बॉस

❑ डॉ०रेखा व्यास

मैं दोहरी मार का सताया हुआ बन्दा हूं। घर पर बीवी बॉस बनी है। घर पर बॉस होकर भी सुख नहीं और ऑफिस में बब्बर शेर सा बॉस रात दिन सवार रहता है। घर-बाहर के पचासों काम और जिन्दगी की तल्ख हकीकत से इतनी भी फुर्सत नहीं मिलती होती कि दो पल मनचाही कल्पना में ही झपकी ले लूं। ऑफिस में काम के बीच से या बॉस के बाहर होने की स्थिति में चुराये गये क्षण बस के निहायत अन्तरंग है मेरे। मेरी कल्पनाएं जिसमें में मनचाहा सोच सकता हूं कल्पना कर सकता हूं। वरना ऑफिस का टाइम बॉस रात का बीबी दिन का घर के काम और सुबह चार से सात का समय नल और शाम का समय टी.वी. और रोज का समय होमवर्क खा जाता है। फिर भी मैं बासी मिठाई पर बर्क लगने की भांति अपनी कल्पनाओं का संसार, लगाव ताजा और जिन्दा रहने की कोशिश करता हूं। कल्पना मेरी धोंकनी है जो मुझे प्राणवायु प्रदान करती है।

खैर साहब, उस दिन बॉस की बीवी ऑफिस आ धमकी सो वे चल दिये तो हम भी चल दिये कल्पना के गलियारे में । जाते-जाते अपनी अफसीरी और रौब-तौब बीवी को दिखाने की ललक में मुझे दिखा गये - "औ शर्मा सारे लेटर टाइप कर देना- कोई फोन आये तो लिखा देना और हां....।"

हमारी जान जाये इनका फाड़ा ठहरा। मैं मीठा बदला लेता हूं। "वो सर मिस मोना आये तो ...। बीवी बिदक जाती है वे अफसरी तेवर बताते हैं कह देना-उनके लिये फिलहाल हम कॉन्ट्रेक्ट नहीं दे पायेंगे-यह कहकर अफसर साहब याचना की मुद्रा में बीवी से बचाकर आंख मारते हैं । "

"बस यहां से हमें इस कल्पना का सूत्र मिल जाता है...।"

"मैं आधी तनख्वाह फूंककर ऊंचे ऊंचे पदों के लिये आवेदन करता हूं। पैंट की चेन इस बार भी चैन ही करती रह जाती है और उसका स्थान फिर तिरंगे पहन ले लेते हैं।

साहब आते ही में बॉस की हैसियत से पार्टी हुई जो साहब जादे मांगीलाल अभी एम.एल बने एम.एल.ए. से अकड़े अकड़े फिर रहे हैं। उन्हें केवल मांगी और डांट के दौरान गाली के साथ भोग्या कहूंगी। घर की सारी भडांस उसी पर निकालूंगा। घर के आलू प्याज से बच्ची की किताबें तक उससे मंगाऊंगा और अ हा हा तिस पर भी यदा-कदा-सर्वदा डांट-फटकार का पयारा पियानो बजाउंगा... घर से टिफिन लाने मेरा ड्राइवर करने ... जैसे सैंकड़ों कामों के बाद भी ऑफिस के काम का हिसाब देखूंगा।

कोई अदद प्रेमिका वाले मांगीलाल से अब तक का सारा बदला चुका लूंगा। समझता क्या है कोई रंग रूप पर मरती है उसके-हं कछुआ छाप शक्ल में मेढ़क छाप वाइस केमल कर शहर और ... सब पद-पैसे की करामात है।.. ऊंचा पद मिले तो सब फिरै आगे-पीछै।

दिन में सौ बार सर की माला न जपवा दूं तो नाम छोगा नहीं। दूसरे अफसरों से बात करते-करते मांगीलाल को टालमटोलते अफसरी दिखाऊं कभी-कभी उपेक्षापूर्वक हां हूं करते हुए उसे अपने मातहत होन`का अहसास दिला दूंगा वल्लाह बारम्बार में आइ कमिन सर.. का निनाद अनसुना करता हुआ उसे बारम्बार सुनने का सुख पाऊंगा।

ऑफिस मेरा होगा मैं ऑफिस का हूंगा...। चौबीस घंटे घर पड़ा-पड़ा यहां का अफसर कहलाउंगा...। क्या प्रेमिकाओं से हंसता-बतियाता आंख मार प्रेमिका का शह भरता हुआ बीवी को दो तीन घंटों में बार-बार फोन करता हुआ अहसास दिलाऊंगा कि डार्लिंग मैं कितना पत्नी व्रता हूं। और देखो सारे दिन ऑफिस में ही था. ..।

उधर मिस चीनू को जताऊंगा... देखा तुम्हारे लियें कैसा उल्लू बनाता हूं बीवी को ... तुम मेरे थोड़ा और करीब आ जाओ तो मैं एक झटके से ही उससे छुट्टी पा लूं।

लंच का वक्त मेरा अन्तरंग होगा। उस वक्त मैं सोया करूंगा। उनसे इंतजार करवाऊंगा जिम चीना और हमारा ध्यान रखने का ... हालांकि भीतर कुछ न मिलना नसीब हो पर मैं इस तरह अस्त-व्यस्त और कपड़े सम्भालता हुआ उसे अहसास दिलाऊंगी कि मैंने उसका हार्ट फोर्ट फतह कर लिया है।

आफिसीयल पार्टीज में उसे साथ ले जाऊंगा उसी से प्लेट जमवाऊंगा पर नहीं-नहीं कहीं वह भी अभी मेरी तरह ही कहीं उसमें थू दे तो .. ठीक है ये काम मैं ही कर दूंगा।

होली दीपावली मुफ्त में मनेगी साल में दो बार "बर्थ डे" मनाने से दोनों छोरियों की शादी की फिकर जाती रहेगी पर फ्रीज बड़ा लेना पड़ेगा वरना ...।

आये दिन ट्रांसफर की झनकी। पेट्रोल की छुट्टी।

आते जाते मांगी छोड़ेगा।

मुफ्त में सिनेमा पिकनिक और न जाने किस-किस का लुत्फ।

सभी जोर की चीख और टेबल पर डंडे की मार पड़ती है। चौंकता हूं सामने बॉस को देखता हूं। सिट्टी-पिट्टी गुम ... ये क्या हो रहा था- साले को दिखा दूंगा... ये क्या बड़-बड़ हो रही है-"

बहुत हो चुका मैं अभी तुम्हें टर्मिनेट करता हूं। मिस मोना लेटर टाइप करो... सुबह से 10 बजे से शाम तीन बजे तक बॉस के साथ गायब हुई मिस मोना मुस्तैदी से तुरन्त उस लेटर को टाइप करती है। मेरी सिट्टी-पिट्टी गुम ... एक पल लिये उसका भी ऐसी हालत बना देने की कल्पना से राहत मिलती है ... पांच बजते ही भाग आता हूं। घर आकर भूमिगत हो जाता हूं। थकावट से चूर चूर होकर गहरा सोता हूं... सुबह जोर से बीवी का बेलन पड़ता है अफसर के डंडे और वो भी टेबल पर पड़ने के अहसास का भान आ जाता है चौंककर हाथ जोड़कर उठ बैठता हूं. .. क्या बात है ? तुम्हारा बाप आया है... देखता हूं चपरासी टर्मिनेशन लेटर लेकर हाजिर होता है। मैं औरतों की तरह उसे छाती में खोंस लेता हूं। श्रीमती लपककर उसे दबाती हुई मसला जाता है बिल्कुल मेरी कल्पना की तरह दौरे हनीमूनी दौरे होंगे जिनमें काम की बातें दस मिनट और घूमने को दस दिन होंगे...।

संपर्क : 797-II एफ, तिमारपुर, दिल्ली

गर्मी और बच्चे

❑डा०आर०के०पी०सिन्हा

गर्भावस्था में बच्चे का तापमान मां के तापमान पर आधारित रहता है। गर्भ से बाहर आने पर बाहरी वातावरण की ठंढी या गर्मी का प्रभाव नवजात शिशुओं पर पड़ता है। तापमान नियंत्रण केन्द्र के अस्थिर रहने के कारण वातावरण के तापमान का असर इन शिशुओं में एक महीना तक होता रहता है, फलस्वरूप बच्चों को गर्मी या ठंढ से ग्रसित होने का अक्सर खतरा बना रहता है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, बच्चे शारीरिक रूप से विकसित होते हैं तथा मस्तिष्क के विकास के साथ तापमान नियंत्रण केन्द्र भी स्थिर रूप से काम करने लगता है। फलस्वरूप बाहरी तापमान का असर भी नियंत्रित होने लगता है, फिर भी अधिक गर्मी या अधिक ठंढक पड़ने से बच्चों पर इसका कुप्रभाव पड़ सकता है। ग्रीष्मकाल में, जो अभी चल रहा है, साधारण से अधिक वातावरण का तापमान बढ़ने से शरीर पर इसका दुष्प्रभाव पड़ता है जिसके कारण कोई भी व्यक्ति ग्रसित हो सकता है। हर साल सैकड़ों लोगों की मौत गर्मी से हो जाया करती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर अधिक गर्मी का शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव एवं बचाव की जानकारी देने की चेष्टा की जा रही है।

गर्मी के दिनों में पसीना चलने से शरीर से पानी तथा लवण बाहर निकलता है। इस वजह से शरीर में पानी तथा लवण की कमी हो जाती है जिसका प्रभाव शरीर के विभिन्न अंगों पर पड़ता है और उसका प्रभाव तरह-तरह के रूप में दिखाई पड़ता है।

जल एवं लवण का असंतुलन स्वस्थ शरीर में जल एवं लवण की मात्रा का संतुलन आवश्यक है। पसीना के रूप में जल तथा लवण का नुकसान भी अनुरूपता बनाए रखता है। परन्तु लगातार अधिक नुकसान होते रहने तथा समय पर उसकी प्रतिपूर्ति नहीं होने से शरीर में निम्नलिखित प्रभाव परिलक्षित होते हैं:-

(1)**गर्मी का अभाव** हो जाता है-इसमें प्यास ज्यादा लगती है तथा अनायास कमजोरी महसूस होने लगती है। ऐसी अवस्था में लवणयुक्त जल पीने से जल एवं लवण की कमी पर काबू पाया जा सकता है। यह स्थिति खतरनाक नहीं होती है तथा चन्द घंटों में गृह उपचार से ठीक हो जाता है।

(2)**गर्मी से ऐंठन:** पसीना के साथ अधिक नमक और कम पानी के नुकसान होने से मांसपेशियों पर दुष्प्रभाव पड़ता है, फलस्वरूप पैरों में ऐंठन तथा मानसिक परिवर्तन भी होने लगते हैं। शुरू की अवस्था में मिश्रित नमक का घोल, जो बना बाजार में मिलता है, के प्रयोग से इस पर काबू पाया जा सकता है परन्तु जब मानसिक बदलाव दिखाई देने लगे तब इन्ट्रवेनस जल से उपचार करना होता है। ऐसा उपचार अस्पताल में डॉक्टर की देख-रेख में कराना अधिक उपयुक्त होता है।

(3)**अधिक ज्वर** - उपरोक्त लक्षणों के अलावे मस्तिष्क में अवस्थित तापमान नियंत्रण केन्द्र के असंतुलित हो जाने के कारण शरीर का तापमान 102 डिग्री से 110 डिग्री तक चला जाता है। लवण युक्त इन्ट्रावेनस जल के अलावे रोगी को जल उपचार कराना जरूरी हो जाता है। यह अस्पताल में अनुभवी चिकित्सकों की देख-रेख में होना चाहिए क्योंकि उचित उपचार के अभाव में इससे जान का खतरा रहता है।

(4)**लू लगना** - शरीर का तापमान में रहना आवश्यक नहीं है। रोगी बेहोशी की हालत में रहता है। मस्तिष्क पर अन्य कुप्रभाव पड़ने की आशंका रहती है। यह बहुत ही संकटपूर्ण दशा है। इसका उपचार अस्पताल में अनुभवी चिकित्सक द्वारा ही किया जाना चाहिये। इसमें जान का खतरा ज्यादा होने की सम्भावना रहती है।

गर्मी का असर अन्ततः जीवन पर पड सकता है। इन्हीं बातों को आम लोगों तक पहुंचाने के ख्याल से यह प्रयास किया गया है। इलाज के अलावा बचाव पक्ष की ओर भी ध्यान देने की जरूरत है।

(1)**शरीर तथा सिर को ढक कर रखना**-कपड़ा बाहरी गर्मी के लिये बचाव का काम करता है। घर से बाहर जाने पर सिर तथा बदन कपड़ा से ढका रहना चाहिए।

(2)नमक/चीनी/नींबू का शरबत का पिला कर घर से बाहर भेजना तथा प्यास लगते ही लवण युक्त पानी पिलाना चाहिये।

(3)ठंढा वातावरण से गर्म वातावरण में तुरन्त नहीं जाना चाहिए।

(4)सतू का शरबत पीने से फायदा होता है।

संपर्क: 141,एम०आई०जी०, लोहियानगर, पटना-20, दूरभाष: 352343

+ सेहत-सलाह

आप अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का निदान राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हमारे स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ०एस०एन० आर्य से पा सकते हैं। समस्याएं निम्नलिखित पते पर भेजें।

डॉ०संतोष कुमार प्रभारी,
सेहत सलाह राष्ट्रीय
विचार पत्रिका, 'बसेरा', पुरन्दरपुर,
पटना-800001
दूरभाष : 228519

धूम्रपान से प्रतिवर्ष 35 लाख लोगों की मौत

धूम्रपान के खिलाफ जन जागरण में जुटी संस्था इण्डियन सोसाइटी आफ टोबैको एंड हेल्थ की कलकत्ता शाखा के महासचिव डॉ.एस.सी.कुंडू के अनुसार विश्व में धूम्रपान से प्रतिवर्ष लगभग 35 लाख लोगों की मृत्यु होती है। तंबाकू जनित बीमारी से प्रतिदिन 10 हजार व प्रति दस सेकेंड में एक मौत होती है। डा.कुंडू ने यह भी बताया कि सिगरेट पीने से कैंसर व हृदय रोग के अतिरिक्त कई जटिल बीमारियां होती हैं। अकेले भारत में हर साल सात-आठ लोगों की व रोजाना 2000 लोगों की मौत धूम्रपान से होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि यदि धूम्रपान का यह सिलसिला नहीं थमा तो जहां सन् 2020 तक सालाना एक करोड़ लोगों की मौत होगी वहीं विकास शील देशों के 70 फीसदी ।लोग भी धूम्रपान के शिकार होंगे।

कलकत्ता के पूर्व शेरिफ डाक्टर सुनील ठाकुर के अनुसार सिगरेट पीने से गले का कैंसर तेजी से बढ़ रहा है। गठिया भी धूम्रपान से होता है। इन्डियन सोसाइटी ऑफ टोबैको एंड हेल्थ के उपाध्यक्ष तथा यादवपुर विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति प्रो०मनीन्द्र मोहन चक्रवर्ती ने धूम्रपान के बढ़ते हुए खतरे से सावधान करते हुए कहा है कि जो लोग धूम्रपान नहीं करते वे भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित होते हैं।

-रा०वि० प्रतिनिधि कमलेश कुमार, कलकत्ता से

कारगिल युद्ध के अवसर पर

क्या रंगकर्मियों व साहित्यकारों ने दायित्व निभाया?

यह कहने में कतई संकोच नहीं कि कल तक यह महसूस किया जा रहा था कि भारतवासियों में देशभक्ति की भावना का जितना ह्रास हुआ है उतना और किसी चीज की नहीं। किन्तु कारगिल में जब पाकिस्तानी सैनिकों एवं घुसपैठियों ने हम पर जबरन युद्ध लाद दिया तो उसका उचित उत्तर उन्हें देना ही था। नतीजा यह हुआ कि हमारे वीर जवानों ने अपनी जांबाजी खुलकर दिखलाई। हमने यह भी देखा कि कारगिल युद्ध की अवधि में सारे भारतवासी एकजूट होकर भारतीय सैनिकों का न केवल हौसला बुलन्द किया बल्कि मुक्त हस्त से जिसे जितना बन पड़ा **राष्ट्रीय सुरक्षा कोष** अथवा **सैनिक सुरक्षा कोष** में दान दिया। केन्द्र एवं राज्य सरकार के कर्मचारियों-अधिकारियों, गैर सरकारी संस्थाओं एवं संगठनों ने भी खुले हृदय से अपने एक दिन के वेतन दिए। फिल्मी कलाकारों, चित्रकारों एवं खिलाड़ियों ने भी जवानों का पूरी आत्मीयता के साथ मनोबल बढ़ाया। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई के सभी तबकों ने अपनी एकजुटता का परिचय दिया। इस प्रकार कारगिल मुद्दे पर देश का हर तबका अपने-अपने ढंग से वीर सैनिकों के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। **पर क्या हम यह दावा कर सकते हैं कि देश के रंगकर्मियों व साहित्यकारों ने भी देश के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह किया ? क्या यह सच नहीं कि इस पूरी अवधि में खासकर देश की राजधानी दिल्ली के रंगकर्मियों व साहित्यकारों ने कारगिल मुद्दे पर मौन साध रखा ?**

सुप्रसिद्ध नाट्यकर्मी **सतीश आनन्द** का कहना है कि रंगकर्मी व साहित्यकार मौन साधकर अपने देश के प्रति उत्तरदायित्व से विमुख हो गए। उन्होंने कहा कि सन् 71 की लड़ाई में नाट्यकर्मियों ने पटना में नाट्य समारोह कर तथा कवियों ने नुक्कड़ नाटक का आयोजन कर सैनिकों का मनोबल बढ़ाया था। साहित्यकारों ने भी अपनी लेखनी चलाई थी। गीत व नाट्य प्रभाग ने भी गांव-गांव में जाकर जनता को जागृत किया था लेकिन इस बार साहित्यकारों-रंगकर्मियों के साथ-साथ केन्द्र सरकार का गीत एवं नाट्य प्रभाग भी सोता रहा। इस बार जबकि कारगिल प्रकरण दो महीने से भी अधिक चले पर किसी भी रंगकर्मी ने आगे बढ़कर एक शब्द भी नहीं बोला। हां, बिहार तथा पटना के कुछ साहित्यिक संगठन तथा उससे जुड़े साहित्यकारों ने पटना जं० गोलम्बर राष्ट्रभाषा परिषद और अन्य क्षेत्रों में तथा युद्ध समाप्ति की घोषणा के बाद डाक बंगला चौराहे पर सैनिकों के सहायतार्थ और शहीद जवानों की स्मृति में आयोजन हुए पर वह भी संतोषजनक नहीं। मात्र औपचारिकता का निर्वाह भर हो पाया। इसी प्रकार तमिलनाडु हिन्दी अकादमी, चेन्नै को दाद अवश्य देनी होगी जिसके तत्त्वावधान में विगत 21 जून, 99 को स्टेला मारिस कालेज, कैथिड्रल रोड, चेन्नै की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० मधु धवन के सौजन्य से स्थानीय अन्नानगर स्थित उनके निवास में आयोजित एक जीवन्त साहित्यिक-संगोष्ठी में कारगिल के वीर सैनिकों को उत्साहित किया गया।

पटना के श्री सुरेन्द्र प्र० सिंह एवं श्री सिद्धेश्वर और केरल के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री चन्द्रशेखर नायर के सम्मान में आयोजित इस संगोष्ठी में हिन्दी, तमिल, तेलगू, मलयालम तथा कन्नड़ इन पांच भारतीय भाषाओं के कवियों ने कारगिल पर एक कवि-गोष्ठी कर श्रोताओं को सराबोर किया।

समाज को दिशा-निर्देश देने का दावा करने वाले रंगकर्मियों व साहित्यकारों के लिए यह बहुत ही खतरनाक स्थिति है जिस पर उन्हें गंभीरता से मनन करने की जरूरत है।

-रा० वि० संवाददाता

छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन लंदन में

बड़ी कंपनियों के विज्ञापन अब हिन्दी में भी

ब्रिटेन में हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता के मद्दे नजर लंदन में आगामी 14 से 18 सितम्बर, 1999 तक छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन ब्रिटेन की हिन्दी समिति के तत्वावधान में होगा। इस समिति के संयोजक पद्मेश गुप्ता तथा ब्रिटेन के पार्क विश्वविद्यालय की भाषा विज्ञान की शैक्षणिक समिति के अध्यक्ष महेन्द्र वर्मा के अनुसार हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने की 50 वीं वर्षगांठ के अवसर पर इस सम्मेलन का आयोजन बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। मारीशस के हिन्दी भाषी प्रधानमंत्री के साथ-साथ ट्रिनिडाड, सूरीनाम, फिजी तथा नेपाल के प्रधानमंत्री के भी इस सम्मेलन में पधारने की उम्मीद है। इसके अलावा हिन्दी के जाने माने साहित्यकार भी सम्मेलन में बड़ी तादाद में जाएंगे।

आयोजक में ब्रिटेन की हिन्दी समिति के अलावा गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय, बर्मिंघम एवं भारतीय भाषा संगम पार्क भी हैं। श्री वर्मा ने बताया कि पिछले दो दशकों में ब्रिटेन में रहनेवाले हिन्दी भाषियों में अपनी नयी पीढ़ी को हिन्दी सिखाने की ललक बढ़ी है। उनके कथनानुसार ब्रिटेन के थार विश्वविद्यालय आक्सफोर्ड, कैम्ब्रीज, लंदन तथा पार्क में हिन्दी विषय का पाठ्यक्रम शामिल किया जा चुका है। ब्रिटेन में हिन्दी भाषियों की बड़ी तादाद को लुभाने के लिए ब्रिटिश टेलीकॉम तथा एस.एम.ए. मिल्क जैसी बड़ी कम्पनियां अब हिन्दी में विज्ञापन देने लगी हैं।

हिन्दी पर दो हाइकू

कब बनेगा
राष्ट्रभाषा शीघ्र ही
राष्ट्र प्राण भी?

हिन्दी सदैव
ढुलमूल नीतियों
का है शिकार

-सिद्धेश्वर

अगले अंक में

- **लौह पुरुष सरदार पटेल के जीवन के कुछ अनछूए पहलुओं पर विभिन्न विद्वानों के आलेख**
- **'रिक्शावाला' वाराणसी के सुप्रसिद्ध कथाकार कृष्ण कुमार राय की मार्मिक कहानी**
- **म०प्र० के आदिवासियों का गुणात्मक विकास (दिशा और परिसीमाएं) : भोपाल के सुपरिचित लेखक डॉ० महेन्द्र पटेल का शोध-पारक लेख**
- **अश्लील साहित्य का युवा मन पर पड़ते प्रभाव: रांची के युवा साहित्यकार के विचार**
- **रक्षा प्रणाली में कम्प्यूटर से जुड़े 'वाई-2 के' की समस्या पर दिल्ली के चर्चित स्वतन्त्र पत्रकार डॉ०शुभकंर बनर्जी का लेख**
- **इसके अतिरिक्त नारी जगत, न्याय जगत, समाज, खेल-खिलाड़ी, कला-संस्कृति आदि स्थाई-स्तम्भों पर रोचक एवं विचार प्रधान रचनाएं।**

कृपया सदस्यता ग्रहण कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

संपर्क: रा०वि०पत्रिका, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

साहित्य अकादमी भी इंटरनेट पर

देश के विभिन्न भाषाओं के लेखकों और उनकी कृतियों की जानकारी अब इंटरनेट पर जल्द ही उपलब्ध होगी। साहित्य अकादमी के इंटरनेट पर आने से पाठकों को यह सुविधा मिल सकेगी। अकादमी के सचिव के सच्चिदानंदन ने बताया कि अगले महीने अकादमी के बेबसाइट का औपचारिक उद्घाटन होगा।

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन का चौदहवां अधिवेशन सम्पन्न

बंगलोर के कोलाडा मठ में 14 जून, 99, को आयोजित अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन के चौदहवें अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कर्णाटक के राज्यपाल महामहिम खुर्शीद आलम खान ने कहा कि भाषा जोड़ने का काम करती है, तोड़ने का नहीं। हिन्दी हमारी राजभाषा है और यह अन्य भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ने में मदद करती है। **भाषा एक माध्यम है जिससे हम अपनी भावनाओं को दूसरे लोगों के पास पहुंचाते हैं।** सम्मेलन की अध्यक्षता डा.शान्तावीर महास्वामी ने की।

15 जून, 99 को **"भारतीय भाषाओं की उपेक्षा एवं राष्ट्रभाषा नीति"** पर विचार गोष्ठी जगदगुरू श्री सत्यानन्द पुरी की अध्यक्षता में हुई। उद्घाटन कन्नड साहित्य परिषद के अध्यक्ष एन०वासवराध्या ने किया। मुख्य अतिथि थे डा०नरेश पाण्डेय 'चकोर'। भाग लेने वाले अन्य वक्ताओं एवं अतिथियों में सर्वश्री डा०सतीश चतुर्वेदी, याशिमन सुल्ताना, डा०पूर्णिमा निगल'पूनम' आदि प्रमुख थे।

इस अवसर पर एक महिला सम्मेलन भी हुआ जिसकी अध्यक्षता श्रीमती निर्मला जोशी ने की।

16 जून को **"देवनागरी लिपि एवं राष्ट्रीय एकता"** विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी में सर्वश्री वीरेन्द्र श्रेष्ठि, जगदीश श्रीवास्तव, राम सुब्बा रेड्डी, आचार्य निशांतकेतु, जी०आर०महादेर्वया, सिद्धेश्वर, हसन अंजुम, रमेश त्रिवेदी, सतीश चतुर्वेदी, अनन्त रामनाथ, सुरेन्द्र प्र०सिंह आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर एक सर्वभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, छतीसगढ़ी, बुन्देली, अंगिका कन्नड़, तेलगू में सर्वश्री राजकुमार प्रेमी, परमेश्वर गोयल, मदन केसरी, सिद्धेश्वर, डा०नरेश पाण्डेय 'चकोर', राजू अरुण, नृपेन्द्रनाथ गुप्त, एच.विजय भास्कर, मोहन प्रेमयोगी, एच.सी.शांति रमैया, हेमाद्रि तनुजा, शकुन्तला बल्लभ प्यारी, डा०रंग गौरा, डा०सतीश चतुर्वेदी, वीरेन्द्र श्रेष्ठि, डा०शान्तावीर महास्वामी, कुमारी रश्मि शर्मा, याशिमन सुलताना नकबी, शिशु संदानेश, प्रभुदयाल खरे, डोडा रंगेवाडा, एच.सी. शान्तापीरैया, अन्नत रमैया, रमेश माहेश्वीर आदि ने अपनी रचनाएं सुनाई।

अधिवेशन के अन्त में कुछ साहित्याकारों को **'भारत भाषा भूषण, 'साहित्य श्री'** तथा **'समन्वय श्री'**, से सम्मानित किया गया।

प्रस्तुतिः डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', पटना

"कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जबतक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।" - एम०के० गांधी

'साहित्य हमेशा सच की खोज करता है'

-अशोक वाजपेयी

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय (वर्धा) के कुलपति एवं प्रसिद्ध कवि **अशोक वाजपेयी** का कहना है कि साहित्य हमेशा सच की खोज करता है परन्तु वह अपने खोजे गये सच पर संदेह भी करता है इसलिए साहित्य की यात्रा अनवरत चलती आ रही है। श्री वाजपेयी ने ये बातें युवा कवि विश्वरंजन के प्रथम काव्य संग्रह **'स्वप्न होना बेहद जरूरी है'** का लोकार्पण करते हुए कही। बिहार में भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी **विश्वरंजन** उर्दू के महान शायर फिराक गोरखपुरी के नाती हैं।

उन्होंने कहा कि **साहित्य हमेशा उधेड़बुन में रहता है कि सच आखिर क्या है।** साथ ही तुलसीदास का सच कबीर के सच की तरह नहीं है। जिस तरह धर्म अंतिम सच का साक्षात्कार करता है, उस तरह साहित्य के लिए कोई अंतिम सत्य नहीं होता। जिस दिन अंतिम सत्य उसे मिल जायेगा साहित्य सृजन बंद हो जायेगा।

दक्षिण भारतीय भाषाओं की पढ़ाई प्रारम्भ

देर से ही सही, पर भाषा की एकता स्थापित करने के लिए **पटना की दक्षिण भारतीय भाषा संस्थान** ने दक्षिण भारतीय भाषाओं की पढ़ाई निःशुल्क प्रारम्भ की है। संस्थान के अध्यक्ष-सह-निदेशक **अच्युतानन्द ठाकुर** ने बताया कि फिलहाल मलयालम तथा तमिल भाषाओं की पढ़ाई शुरू की गयी हैं। शीघ्र ही तेलगू और कन्नड भाषाओं की पढ़ाई भी प्रारम्भ की जाएगी।

पटना के मिलर स्कूल में आयोजित उद्घाटन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए बिहार के उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. विद्यासागर यादव ने कहा कि निश्चित ही इस कदम से दक्षिण भारत और हिन्दी प्रदेशों के बीच समन्वय स्थापित होगा। मलयालम तथा तमिल पढ़ाने की जिम्मेवारी जी. **वासुदेवन नायर** तथा **पी०पदमनाभन** को सौंपी गयी है। यह पढ़ाई प्रतिदिन शुक्रवार एवं शनिवार को संध्या 5 बजे से वीरचन्द पटेल पथ, पटना स्थित मिलर हाई स्कूल में होगी।

कसौटीः आलोचना त्रैमासिकी का लोकार्पण

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार व उपन्यासकार तथा बहुचर्चित उपन्यास **रागदरबारी** के रचनाकार श्री श्रीलालशुक्ल के मतानुसार समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में साहित्य समीक्षा व आलोचना की स्थिति निराशजनक नहीं है। ये विचार विगत 17 जुलाई, 99 को पटना कॉलेज के सेमिनार हॉल में **पुनश्च** द्वारा आयोजित आलोचना त्रैमासिक पत्रिका **कसौटी** के प्रवेशांक का लोकार्पण करते हुए उन्होंने व्यक्त किए। समारोह की अध्यक्षता कर रहे मलयालम भाषा के कथाकार तथा भा० प्र० से० के वरिष्ठ अधिकारी श्री एन०एस०माधवन ने कहा कि मलयालम भाषा साहित्य में आलोचना साहित्य की स्थिति भिन्न नहीं है।

कसौटी के सम्पादक तथा आधुनिक कविता के सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ० नन्दकिशोर नवल ने मात्र 15 अंक में निकलने वाली इस पत्रिका को आलोचना साहित्य के क्षेत्र में एक शुरूआत बताया।

प्रारम्भ में **पुनश्च** के अपूर्वानंद ने आगत अतिथियों का स्वागत किया।

रा.वि. संवाददाता, पटना

बालशौरि रेड्डी : जीवन्त कृतित्व व जीवन्त व्यक्तित्व

❑ईश्वर करुण

भारतीय हिन्दी वाङ्मय में डॉ० रेड्डी का नाम इतना घुल-मिल गया है कि लोग क्षण भर को यह भूल जाते हैं कि वे हिन्दीत्तर भाषी हिन्दी साहित्यकार हैं उनकी मातृभाषा तेलुगु है और उनका कर्मक्षेत्र हिन्दी विरोध के लिए चर्चित तमिलनाडु है। हिन्दीत्तर भाषी इस साहित्यकार का स्थान कितने ही हिन्दी भाषी साहित्यकारों से ऊपर है। डॉ० कमल किशोर गोयनका के अनुसार श्री बालशौरि रेड्डी हिन्दीत्तर भाषी हिन्दी साहित्यकारों में शायद सबसे प्रसिद्ध और सम्मानित हैं। 1948 से लिखना प्रारंभ करने वाले डॉ० रेड्डी मात्र देश भर में ही लोकप्रिय नहीं हुए वरन् विदेशों में भी उन्हें अच्छी ख्याति मिली है। ह्युस्टन(अमेरिका) के बाद मारिशस से लौटने पर वहां मिले राजकीय सम्मान, वहां के राष्ट्रपति द्वारा गये आतिथ्य हिन्दी के प्रति उनकी समर्पित निष्ठा का ही प्रतिफल है।

निश्छल और बच्चों जैसा निर्दोष चेहरा, प्रफुल्लित व्यवहार और सदैव मुस्कराने वाले डॉ० रेड्डी पहली ही दृष्टि में मिलने वाले को प्रभावित कर देते हैं। उनके व्यक्तित्व का एक पहलू आज भी बड़े से बड़े साहित्य के महारथियों को चकरा देता है; आप उनसे जब मिल रहे होते हैं एक क्षण को तो लगता ही नहीं कि आप एक राष्ट्रीय साहित्यकार से मिल रहे हैं जिसने 65 किताबें हिन्दी में लिखी हैं 25 से अधिक संस्थाओं ने जिन्हें पुरस्कृत किया हैं जिनकी पुस्तकों की भूमिकायें पं०हजारी प्रसाद द्विवेदी, दिनकर, शिवपूजन सहाय, रामकुमार वर्मा, वासुदेव शरण अग्रवाल, शिवमंगल सिंह सुमन ने लिखी हैं। 'साहित्य' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका में शिवपूजन सहाय जी ने सम्पादकीय लिखा है जो भारत के राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों से सम्मानित किये जा चुके हैं और जिन्हें हिन्दी लेखन के लिए अनगिनत पुरस्कार मिले हैं किन्तु ज्योंहि उनसे साहित्यिक चर्चा प्रारंभ होती है-वह व्यक्तित्व विराट में बदलने लगता है और फिर जो भाषा और उत्तर सुनने को मिलता है, उसके सामने स्वयं के बौना होने का एहसास होने लगता है। धारा प्रवाह प्राञ्जल हिन्दी में पांडित्यपूर्ण उत्तरों की श्रृंखलायें----लगता ही नहीं कि आप किसी हिन्दीतर भाषी से बातें कर रहे हैं। इस मायने में डॉ० रेड्डी के संदर्भ में हिन्दीतर शब्द अपनी प्रासंगिकता खो चुका है। हिन्दी साहित्य में मौलिक लेखन के लिए इस लेखक ने देश के अनेक प्रसिद्ध लेखकों का प्यार बटोरा, हिन्दी के पाठकों से पढ़े गये और पढ़े जा रहे हैं। इनके साहित्य पर 5 पीएच. डी. और 7 एम० फिल हो चुके हैं।

एक व्यक्ति के रूप में डॉक्टर बालशौरि रेड्डी सौम्य है, सरल हैं, अपनी सहजता एवं सरलता से सब को मोहित करने वाले हैं। अपनी समस्त साहित्यक साधनाओं और प्राप्त पुरस्कारों के साथ भी वे विनम्रता की मूर्ति हैं। ऐसी विनम्रता की मूर्ति, जिसका आचरण उनसे मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति उनके व्यक्तित्व के इस पहलू का कायल हो जाता है।

जीवन एवं सेवायें:

डॉ० रेड्डी का जन्म आंध्रप्रदेश के कडपा जिले के गोल्लल गूडूरु के एक मध्यमवर्गीय प्रतिष्ठित कुलीन परिवार में 1 जुलाई, 1928 को हुआ। 4 वर्ष की उम्र में ही मां गुजर गयी, पिता ने पुत्र के हित में विवाह नहीं किया। 'माई फादर ईज माई गॉड' कहते-कहते आज भी उनकी आंखें सजल हो जाती हैं। पिछले 42 वर्षो से मद्रास महानगर को ही अपनी कर्म भूमि बना रखी है।

प्रारंभिक शिक्षा नेल्लुर, कडपा, विजयवाड़ा आदि आंध्रप्रदेश के विद्यालयों में हुई। मैट्रिक उत्तीर्ण होकर शिक्षक प्रशिक्षण में भर्ती हुए। उच्च वर्गीय परिवार की सुभद्रा देवी जी से, जो स्वयं भी तेलुगु और हिन्दी की अच्छी ज्ञाता है, 14,जून,1951 में विवाह हुआ।

देवघर हिन्दी विद्यापीठ के स्नातक बने। हिन्दी की शिक्षा इलाहाबाद एवं वाराणसी में हुई। लगभग 10 वर्षो तक हिन्दी प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्राध्यापक एवं फिर प्रिंसिपल बने। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रकाशन एवं साहित्य विभाग में छः वर्षो तक संपादक का कार्यभार संभाला। तभी श्री नागीरेड्डी जी ने-**चंदामामा,** के हिन्दी संस्करण का संपादन भार सौंपा, लगभग 24 वर्षो तक वहां रहे, उसे छोड़ने के बाद भारतीय भाषा परिषद के निदेशक रहे, बाद में आंध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी के अध्यक्ष के रूप में उल्लेखनीय सेवाएं की। फिर **चमकता सितारा,** जिसकी स्थापना मद्रास में ईश्वर करुण एवं बी० पी० गोस्वामी ने की थी, के दैनिक के संपादन बने। 12 वर्षो तक दैनिक भारत प्रतिनिधि के रूप में समाचार लिखते रहे। सभा की प्रतिष्ठित पत्रिका आज के भारत और हिन्दी प्रचार समाचार के लिए उल्लेखनीय सेवाएं कीं।

हिन्दी के क्षेत्र में :- कडपा शहर के बाहर कच्ची कुटियों में चलने वाले जिस विद्यालय में यों कहें कि गुरुकुल में ये अध्ययन के लिए जाते थे, वह विद्यालय गांधी जी के आदर्शो का प्रतिबिम्ब था राष्ट्रभाषा का प्रचार-प्रसार उसका प्रधान ध्येय था, वहां के आचार्य अपने छात्रों की भाषण शक्ति तथा रचना शक्ति को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्न करते थे। वाक्-स्पर्धाओं के साथ-साथ **'ललकार'** नामक पत्रिका भी चलाते थे। जिनमें भाग लेकर रेड्डी जी अपनी प्रतिभा की परिचय दिया करते थे, स्कूली शिक्षा ने दिमाग के जो द्वारा खोल दिये उनमें से गांधीवादी राष्ट्रीयता की हवा यों बही कि राष्ट्रप्रेम का ही एक पक्ष बना-हिन्दी सीखना। हिन्दी सीखा भी तो बड़े ही मजेदार ढंग से । स्कूल का एक चपरासी था जो हिन्दी पंडित भी था उसी से हिन्दी शिक्षा प्राप्त करने का शुभारंभ, गुरुदक्षिणा स्वरूप अठन्नी देकर किया। हिन्दी सीखने की इच्छा को बल मिला, जब 1946 में दक्षिण भारत में हिन्दी शिक्षण की अग्रणी संस्था **दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा** की रजत जयंती में भाग लेने मद्रास आये महात्मा गांधी उस महोत्सव का उद्घाटन करने मद्रास पधारे थे। अपने अभिभाषण में उन्होंने जनता से अपील की। स्वतंत्र भारत की

राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा निश्चय की हिन्दी होगी। इसलिए देश के सारे नागरिकों को अभी से हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। उन्होंने विशेष रूप से राष्ट्रीय नेताओं कार्यकर्त्ताओं, महिलाओं और प्रचार में हाथ बंटाने के साथ उनसे दक्षता भी प्राप्त करने के उद्धेश्य से ही ये उतर भारत में पहुंचे। हिन्दी के वातावरण में रहने और अध्ययन करने लगे। वहीं ये स्व. कमला पति त्रिपाठी पं. गंगाधर मिश्र, ठाकुर प्रसाद सिंह, काशीनाथ उपाध्याय भ्रमर, बेधड़क बनारसी, श्री मती महादेवी वर्मा एवं सूर्यकान्त त्रिपाठी **निराला** जैसी महान विभूतियों की प्रेरणा तथा मार्ग दर्शन में हिन्दी सीखने लगे और फिर 1948 से ही इनकी रचनायें हिन्दी और तेलगु दोनों भाषाओं की पत्र पत्रिकाओं में स्थान पाने लगी।

आरम्भिक लेखन : डा. रेड्डी ने अपने लेखन यात्रा की शुरूआत पहले निबंधों से की, **ग्राम संसार**, नामक पत्रिका के लिए पहले बाल साहित्य से संबंधित रचनायें शुरु की। कमलापति त्रिपाठी जी के कहने पर तेलुगु संस्कृति में विवाह के विभिन्न रीति रिवाजों पर लिखा लेखन में महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में इनकी रचना **पंचामृत** को माना जा सकता है। पंचामृत (1954) तेलुगु के पंच महाकाव्यों की कथा हिन्दी में अनूदित की गई थी। यह प्रयास बहुचर्चित और सफल रहा नही लगता।

रचना संसार-मौलिक रचनाओं के उपन्यास : 1. शबरी 2. जिन्दगी की राह 3. यह धरती:ये लोग 4. भग्न सीमाएं 5. बैरिस्टर 6. स्वप्न और सत्य 7. प्रकाश और परछाई 8. लकुमा 9. धरती मेरी मां 10 प्रोफेसर 11. वीर केसरी 12. दावानल (विशेष-शबरी का नवीन संस्करण माटी की महक है)

ख. बाल साहित्य: 1. तेलुगु की लोक कथाएं 2. आंध्र के महापुरुष 3. सत्य की खोज 4. तेनालीराम के लतीफे 5. बुद्धू से बुद्धिमान 6. न्याय की कहानियां 7. आदर्श जीवनियां 9. आमुक्त माल्यदा 10. दक्षिण की लोक कथएं 11. तेलानी राम की कहानियां

ग. तेलुगू से संबंधित हिन्दी में साहित्य: 1. पंचामृत 2. आंध्र भारती 3. तेलुगु साहित्यका इतिहास 4. वीरेश लिंगम पंतुलु 5. तेलुगु साहित्य के निर्माता 6. स्वर्ण कमल।

घ. अन्य- 1. तामिलनाडु 2. कर्नाटक

हिन्दी और हिन्दीत्तर भाषाओं के बीच सेतुः

डा. बालशौरि रेड्डी के व्यक्तित्व का एक अति महत्वपूर्ण पहलू है कि वे एक और हिन्दीत्तर भाषा-भाषी उपन्यासकार, कथाकार, अनुवादक तथा पत्रकार के रूप में देश के प्रसिद्ध हिन्दी लेखकों पाठकों का भी प्यार मिला ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले तमिल साहित्यकार स्वर्गीय अखिलन् इनकी हिन्दी कृति तेलुगु साहित्य का इतिहास और हिन्दी से इनके किये अनुवाद तेर वेनुक(परदे के पीछे, मूल-लेखक: किशोर साही) के प्रकाशन समारोह में पधारे और इनकी प्रशंसा की दक्षिण के वाङ्मय को हिन्दी के विद्वान श्री रा०वीषिल नाथन तथा श्रीमती राजेश्वरी ने तमिल में इनके हिन्दी उपन्यास तेलुगु, कन्नड़, तमिल, गुजराती आदि भाषाओं में भी छप चुके हैं। कुछ कहानियां डोगरी, उर्दू, मराठी में भी अनूदित हुई हैं। केरल में भी इनकी रचनाओं की लोकप्रियता रही है और केरल की अग्रणी संस्था केरल साहित्य अकादमी ने इन्हें पुरस्कृत किया है।

डॉ० रेड्डी एवं समकालीन तमिल भाषी हिन्दी लेखकों डॉ० शेषण, डॉ०एन० सुन्दरम, डॉ०पी०के०बाल सुबह्मण्यम, श्री आर० शौरिराजन सहित दर्जनों लेखकों के बीच प्यार से पढ़े जाते हैं, सुने जाते हैं।

इनके व्यक्तित्व ने सेतु बनने का एक नया अध्याय अभी-अभी पिछले दिनों लिखा है, जब विष्णु प्रभाकर के पत्र से संवेदित होकर तमिलनाडु में पहली बार तमिलनाडु हिन्दी अकादमी का गठन इनकी अध्यक्षता में हुआ है और जिसके महासचिव के रूप में इन पंक्तियों के लेखक को चुना गया है। तमिलनाडु में हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता के व्यापक स्तर पर विकास के लिए एवं तमिलनाडु के हिन्दी लेखकों को राष्ट्रीय क्षितिज पर लाने, उन्हें प्रोत्साहित पुरस्कृत करने के उद्धेश्य से गठित **तमिलनाडु हिन्दी अकादमी के अग्रदूत** के रूप में डॉ० रेड्डी अभी भी अपना सार्थक योगदान देने में सक्रिय हैं।

. डॉ० रेड्डी के अनुसार **'हिन्दी संसार'** ने मुझे उचित सम्मान दिया है।' वहीं तमिलनाडु में 'हिन्दी-लेखक के रूप में लोग मुझे बड़े ही प्रेम और स्नेह से जानते और मानते हैं।

डॉ० रेड्डी हिन्दी और तेलुगु दोनों में लिखते हैं और इनके अनुसार इन दोनों भाषाओं की दो अलग पटरियां है जो समानान्तर चलती हैं। वे कभी टकराती नहीं। बचपन में मैंने संस्कृत और तेलुगु का अधिक अध्ययन किया था। हिन्दी और तेलुगु में वर्णमाला, व्याकरण और शब्द भंडार की पर्याप्त समानता है। तेलुगु में लिखते समय मुझ पर हिन्दी हावी नहीं होती। हां एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा पर मूल भाषा की थोड़ी छाया प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में पड़ सकती है। इनके अनुसार ये दोनों भाषाऐं मेरे सृजनात्क लेखन के दो नयन हैं जिनके आलोक में मैं अपने पाठकों के बीच पहचाना जाता हूं।

सर्वाधिक सफलता किस विधा में ?

डॉ० बाल शौरि रेड्डी के रचना संसार का विस्तार उनके द्वारा लिखे दर्जनों कहानियों, कई एकांकियों, दर्जनों उपन्यासों, कुछ कविताओं (कुछ इसलिए कि लिखी ही कम) मौलिक लेखों, संस्मरणों तक फैला है। बाल-साहित्य का अध्याय अलग है। तेलुगु साहित्य का इतिहास एवं तेलुगु वाङ्मय का अनुवाद सीखी।

प्रसिद्ध समालोचक डा.आर.के. जैन जिन्होंने उनके बारहों उपन्यास की समीक्षात्मक टिप्पणी करते हुए लेख लिखा है उनके उपन्यासों को औपन्यासिक शिल्प के धरातल पर श्रेष्ठ मानते हैं।

उनके उपन्यास **'धरती मेरी मां'** (1969) को एक सशक्त एवं अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक उपन्यास मानते है। उनके अनुसार 'मूलत: यह उपन्यास भारत की वैज्ञानिक चेतना के साथ-साथ वसुधैव-कुटुंबकम जैसी व्यापक सामाजिक चेतना में भी अपनी भव्य परिणति से साक्षात्कार करती है। इसी उपन्यास के आमुख में डा. शिवमंगल सिंह सुमन लिखते हैं 'राष्ट्र के नव-निर्माण की वैज्ञानिक चेतना को बड़े ही सहज भाव से प्रस्थापित किया गया है।

हिन्दी को अपने जीवन का पाथेय मान लेने वाले इस महान व्यक्ति के लिए **'हिन्दी किसी एक प्रदेश विशेष की भाषा नहीं यह समग्र देश की भाषा है।** आज की समस्याओं के लिए उनका समाधान है **'हम सबसे पहले स्वयं को भारतीय समझें। पहले हम भारतीय हैं, हमारा एक देश है, हमारा एक संविधान है, उनसे बाद ही हम अपने राज्य, नगर एवं ग्राम के निवासी है।**

संपर्क : 30/10 पार्सन कार्तिक अपार्टमेंट, पी.ए. कोईल स्ट्रीट, वडपलनी, मद्रास-26

राजभाषा स्वर्णजयंती के अवसर पर

हिन्दी देश-विदेश में

❑डॉ० हरिकृष्ण प्रसाद गुप्त 'अग्रहरि'

विश्व की भाषाओं में हिन्दी का तृतीय स्थान है, और आशा की जाती है कि इसका क्षेत्रफल प्रतिदिन विशाल होता जायेगा। **हिन्दी भारत की शान है, इसकी बिन्दी है।**

विश्व के 31 देशों के लगभग 110 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान कार्य होते हैं। भारत के मात्र 83 विश्वविद्यालयों में ही हिन्दी का पठन-पाठन होता है। सम्पूर्ण भारत में 179 भाषाएं हैं, जिनमें हिन्दी प्रमुख है। इस तरह सम्पूर्ण भारत में 544 बोलियां या उपभाषाएं हैं, जिनमें हिन्दी प्रमुख बोली है।

उपकुलपति **सर आशुतोष मुखर्जी** के सहयोग व **पं०सकलनारायण शर्मा** की अध्यक्षता में एम०ए०(स्नातकोत्तर) हिन्दी की कक्षाएं सर्वप्रथम कलकत्ता विश्वविद्यालय में सन् 1810 ई० में प्रारम्भ हुई। वैसे खड़ी बोली हिन्दी का श्रीगणेश कलकत्ता में ही हुआ था और शनै:-शनै उसका उ०प्र०, बिहार, मध्यप्रदेश और अन्य प्रान्तों में प्रचार-प्रसार होने लगा। हिन्दी का प्रथम व्याकरण "डच" भाषा में हालैण्ड निवासी श्री जॉनजेसुआ केटकल ने **'हिन्दुस्तानी भाषा'** शीर्षक में सन् 1685 ई० में लिखा था।

भारत में सर्वप्रथम हिन्दी में प्रकाशित पुस्तक **'बंगला के व्याकरण'** है; जिसे सन् 1778 ई० में फोर्ट विलियम कालेज के प्राध्यापक **श्री नेयनिल ब्राटी** ने लिखा था। इसकी मात्र एक प्रति इस समय केन्द्रीय सचिवालय, नई दिल्ली के ग्रंथागार में सुरक्षित है। इस भारत में नागरी लिपि व हिन्दी जानने, बोलने, पढ़ने व लिखने वाले लगभग 42 करोड़ लोग है। **'हिन्दी साहित्य सम्मेलन-प्रयाग', नागरी प्रचारिणी सभा-काशी, केन्द्रीय पुस्तकालय और पंतनगर कृषि वि०वि०, नैनीताल** में पूर्व नागरी लिपि में लिखित-पाण्डुलिपियां अमूल्य निधियों के रूप में आज भी सुरक्षित हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने पहली बार साढ़े तीन आने मूल्य का डाकटिकट 21 नवम्बर सन् 1947 ई० को जारी किया था। इस पर राष्ट्रीय ध्वज के चित्र के साथ दांए हिस्से में **'जय हिन्द'** छपा हुआ था।

'हिन्दी व्याकरण' के लेखक **कामता प्रसाद** गुरू है, यह सन् 1920 ई० में काशी से प्रकाशित हुआ था। सन् 1924 ई० में हिन्दी प्राध्यापक विलियम प्राइस ने **'हिन्दी'** और **'हिन्दुस्तानी'** का विभेद किया। अमीर खुसरों ने हिन्दी शब्द भारतीय के लिए और हिन्दी शब्द केन्द्रीय भाषा के लिए प्रयोग किया है।

तैमूरलंग के प्रपौत्र के समय सन् 1424 ई० में शरफद्दीन यज्दी ने **जफरनामा** लिखा, इसमें **'राव'** को हिन्दी शब्द माना गया। सन् 1333 ई० में **इब्नेबतूता** ने 'हिन्दी' शब्द में प्रयोग किया और छठी सदी के कुछ पूर्व से ही ईरान में. 'नवाज-ए-हिन्दी' का प्रयोग भारत की भाषाओं के लिए होता रहा है। वैसे **'हिन्दी'** शब्द में प्राचीनतम प्रयोग सातवीं सदी के अन्तिम चरण में **'निर्शाथ चूर्षि'** नामक ग्रंथ में मिलता है। **बंगलोर में बननेवाली कम्प्यूटर हिन्दी साहित्य 16 भारतीय भाषाएं पढ़ा सकता है और अनुवाद भी कर सकता है।**

14 सितम्बर, 1949 ई० में हिन्दी राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। **'हिन्दी शब्दानुशासन'**(हिन्दी व्याकरण' के लेखक आचार्य किशोरी दास वाजपेयी है) हिन्दी का प्रथम व्याकरण सन् 1876 ई० में सैमुएल कैलॉग (अमेरिका) ने इलाहाबाद में प्रकाशित किया था। हिन्दी का नवीनतम व अद्यतन मानक व्याकरण डा०आल्मन, प्रो०दीम शिस्स मास्को अहिन्दी भाषी ने लिखा है। अनुवादक श्री योगेन्द्र पाल हैं। रादुगा प्रकाशन मास्को(रूस) से यह 693 पृष्ठीय ग्रंथ प्रकाशित हुआ है।

सिन्धुघाटी सभ्यता के निर्माता हरम्मणों ने आक्षरित चिह्न से लेकर प्राचीनत्तम वर्णात्मक लिपि का आविष्कार किया था। इस आविष्कार में नागरी लिपि के अंकन भी हैं। देवनागरी लिपि के टाइप और मुद्रण का कार्य सर्वप्रथम हालैण्ड में हुआ।

सबसे अधिक अमेरिका के 35 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन होता है। अमेरिका में सर्वप्रथम पैनसिलवैनिया विश्वविद्यालय में हिन्दी का अध्यापन कार्य प्रारम्भ हुआ था। 'वकर्ले विश्वविद्यालय' के दक्षिण: एशिया विभाग में हिन्दी भाषा का कार्य पीएच०डी० स्तर तक होने लगा है। इस प्रकार अमेरिका के पैंतीस विश्वविद्यालय में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन होता है।

इंगलैण्ड में लन्दन, कैम्ब्रिज एवं यार्क विश्वविद्यालय में हिन्दी का उच्चस्तरीय अध्यापन कार्य होता है। जर्मन में कार्ल मार्क्स वि०वि० लाइपिंग और मार्टिन लूथरकिंग तथा हार्ले विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन कार्य होता है। यहां के हाईडेलवर्ग वि०वि० में पीएच०डी० तक सुविधा उपलब्ध•है। वोन विश्वविद्यालय(जर्मनी) के भारतीय विद्या विभाग में हिन्दी के अतिरिक्त ब्रजभाषा और अवधी पढ़ाने की सुविधाएं हैं।

इसी तरह हंगरी की राजधानी शहर बुडापेस्ट स्थित विश्वविद्यालयों और दूसरा शहर डेब्रेशन के विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा का पठन-पाठन होता है। ज्ञातव्य हो कि इस पंक्ति के लेखक स्वयं अपने उच्च अध्ययन हेतु एक दशक तक हंगरी में प्रवास किया था। उसने सन् 1968-1977 तक कुछ हंगेरियन युवक-युवतियां को नि:शुल्क हिन्दी पढ़ाने में योगदान किया था और सन् 1980 ई० में भारत स्थित हंगेरियन दूतावास का हंगेरियन सूचना एवं सांस्कृतिक केन्द्र, जनपथ-नई दिल्ली-ने उनकी हिन्दी में हंगेरियन जनजीवन-संस्मरण के विषय में-**'हंगरी देश और देशवासी'** नाम से पुस्तक प्रकाशित करायी जो काफी लोकप्रिय रही है।

पोलैण्ड के वारसा विश्वविद्यालय के **'प्राच्य विद्या विभाग'** में हिन्दी का अध्यापन चलता है तथा वहां के हिन्दी विभाग की प्राध्यापिका तातियांना तो हिन्दी पर शोधकार्य कर चुकी हैं। उसी तरह सांस्कृतिक ऊर्जा के धनी प्रो० मारिया क्षिश्तोफ बृस्की-हिन्दी के अनन्य भक्त हैं जो कई वर्षों तक पोलैण्ड के राजदूत बनकर भारत में रहे हैं। उन्होंने दो सौ वर्ष प्राचीन एक मोलस्की महाकाव्य का हिन्दी में अनुवाद कराया था। इतना ही नहीं अनुवाद के क्षेत्र में उन्होंने मनुस्मृति तथा वात्स्यायन के कामसूत्र का मोलस्की भाषा में अनुवाद किया। प्रेमचन्द की कहानियों तथा सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के नाटक का भी प्रो०(डा०)ओदनेल स्मेकल हैं जिन्होंने दिल्ली से डाक्टरेट भी किया है, जो कई वर्षों तक भारत में चेकगणराज्य के राजदूत भी रह चुके हैं तथा गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह-हरिद्वार में मुख्य अतिथि भी रह चुके हैं। इन पंक्तियों के लेखक को उनका स्नेह-सौहार्द सन् 1969, सन् 1971 और सन् 1972 ई० में-प्राहा (प्राग) में मिला था जिसकी भरपूर-स्मृतियां आज भी ताजी हैं। बेल्जियम के स्टेट गेण्ट विश्वविद्यालय के इण्डोलोजी विभाग में हिन्दी, संस्कृत और प्राकृत भाषा की पढ़ाई होती है।

इसी प्रकार हालैण्ड के लेइडेन तथा उत्रैख्त विश्वविद्यालयों, रूमानियों के बुखारेस्ट एवं याशिनगर विश्वविद्यालयों, स्वीडन में-उम्मसला एवं स्टौकहोम वि०वि० में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन होता है। इसी प्रकार **डेनमार्क के कावेल हावन कोके विश्वविद्यालय, युगोस्लाविया** में जाग्रेव तथा बेलग्रेड विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। इतना ही नहीं, जापान में टोकियो, ताकूशेकू, ओसका, ओतनी बुद्धिस्ट तोकाई, क्योता, चुओगाइकुन, तेशों आतेमो-विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन होता है।

इसी प्रकार चीन में बीजिंग विश्वविद्यालय के प्राच्य विभाग में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन होता है। कोरिया, थाईलैण्ड, बैंकाक, बर्मा, नेपाल, सिंगापुर, मारिशस, फिजी,त्रिनिदाद,गुएना आदि देशों में आज भी हिन्दी भाषा का अध्ययन-अध्यापन होता है।

इतना ही नहीं रूस के सेन्ट पेटेर्सबुर्ग में हिन्दी भाषा की पढ़ाई होती है। वहां की प्राध्यापिका विक्टोरिया शिविना विजया है जिनसे इस पंक्ति के लेखक साक्षात्कार सन् 1977 में कर चुका है।उसी तरह स्कूल ऑफ औरिन्टिल एण्ड अफ्रिकन स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ लन्दन(यू०के) की हिन्दी प्राध्यापिका डा० हाइडी मावेल्स से भी इस पंक्ति के लेखक अपने इंगलैण्ड भ्रमण काल में सन् 1975 और सन् 1977 ई० में मिल चुका है।

सम्पर्क- 'अग्रहरिभवन', पो०-भेलाही, पूर्वी चम्पारण-845305(बिहार)

हिन्दी दिवस के अवसर पर

जापान में हिन्दी के ज्ञाता तेजी सकाता

❑ चितरंजन भारती

जापान के हिन्दी विद्वानों में श्री तेजी सकाता का नाम आदर से लिया जाता है। जापान के तकुशोकु विश्वविद्यालय में वह गत तेईस वर्षों से हिन्दी का अध्यापन कर रहे हैं। भारतीय लोककथा और मध्यकाल के कुछ कवियों का भी उन्होंने जापानी भाषा में सुंदर अनुवाद किया है। भक्तिकाल के कवियों की भांति सरल-सहज स्वभाव वाले श्री सकाता अपनी बात छोटे-छोटे वाक्यों में, नपे-तुले अंदाज में करते हैं। प्रश्नों पर विवाद पसंद नहीं करते और जिस प्रश्न का उत्तर नहीं देना होता, उसे विनम्र भाव से टाल जाते हैं। राजनीतिक टिप्पणियों से साफ बच निकलते हुए वह सिर्फ साहित्यिक बातों में ही रूचि लेते दिखे। भले ही उनकी पोषाक सादगीपूर्ण हो, मगर उनके व्यक्तित्व में विद्वता और विनम्रता कूट-कूट कर भरी है। **उन्हें अपने हिन्दी ज्ञान पर गर्व है। साथ ही यह अफसोस भी कि भारतीय लोगों में हिन्दी के प्रति सम्मान की कमी है।** उनकी खड़ी बोली हिन्दी का उच्चारण एकदम साफ और स्पष्ट है। हिन्दी के प्रति समर्पित श्री सकाता अभी बहुत कुछ का हिन्दी से जापानी में अनुवाद करने की इच्छा रखते हैं।

गत दिनों कलकत्ता में आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय लेखक संघ के सम्मेलन में भाग लेने के लिए वह आये हुए थे। कथा-लेखिका डॉ० प्रभा खेतान के आवास पर उनसे हुई मुलाकात कब बातचीत से भेंटवार्ता में बदल गई, पता ही न चला। हालांकि समयाभाव था, फिर भी वह बातचीत में रूचि लेते दिखे। बीच-बीच में वह विभिन्न भाषाओं के लेखकों से औपचारिकताएं निभाते और जापान के अंग्रजी भाषा के विद्वान श्री योशिकिची फुराई और बंगला भाषा के विद्वान डॉ० काजुओ आजुमा से जनसत्ता के संवाददाता के लिए दुभाषिए का भी काम करते। रात्रि भोज के साथ ही बातचीत भी चलती रही। व्यस्तता के उन क्षणों में भेंटवार्ता के कुछ चुने हुए अंश----

प्र०-हिन्दी के प्रति आपके मन में अनुराग कैसे जगा?

उ०-भारत के प्रति मेरे मन में भक्ति बहुत पहले से ही थी। फिर हिन्दी तो यहां की राष्ट्रभाषा है, बहुसंख्यकों की भाषा है। मैंने हिन्दी को अपना विषय लिया था, हमारे हिन्दी के प्रोफेसर क्यूआ तोई इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पढ़कर वापस आये थे। उन्हीं का मैं छात्र था। वह कक्षा में मामूली जानकारी ही दिया करते थे। लेकिन हिन्दी में मेरी रूचि को देखकर वह मुझे विशेष सहयोग दिया करते थे। मुझे चुनी हुई पुस्तकें पढ़ने को दिया करते थे।

ऐसी ही एक किताब थी-हजारी प्रसाद द्विवेदी की **'हिन्दी साहित्य की भूमिका'**। वह बहुत कठिन किताब थी। फिर भी मैंने उसे पढ़ा। लेकिन उस वक्त ठीक से समझ नहीं पाया था। लेकिन हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रति मेरे मन में श्रद्धा जग गई और मेरा उनसे भेंट करने को मन करने लगा।

प्र०-फिर भेंट किये या नहीं?

उ०-1963 ई० में मैं काशी हिन्दु विश्वविद्यालय में हिन्दी से एम०ए० करने को आ गया। मगर तब वह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय छोड़कर पंजाब जा चुके थे। द्विवेदी जी न सही, मगर उनके शिष्य श्री शिवप्रसाद सिंह से भेंट हुई। उन्होंने मेरी बड़ी सहायता की।

प्र०-और द्विवेदी जी से----?

उ०-उनका घर तो बनारस में ही था, सो वह बनारस आते-जाते रहते थे। मैं अपने सहपाठी श्री मैनेजर पांडेय और राममोहन पांडेय के साथ उनसे मिलने जाया करता था। वह बहुत ही शांत स्वभाव के व्यक्ति थे। आदमी घर का हो अथवा बाहर का, सभी से वह बहुत ही आत्मीयतापूर्वक मिलते थे। मैंने उनका सान्निध्य टुकड़े-टुकड़े ही सही, अच्छा पाया। वह कभी चीखते-चिल्लाते नहीं थे। मुझे कविन्द्र रविन्द्र से मिलने का सौभाग्य नहीं मिला। मगर मुझे लगता है, जैसे मैंने हजारी प्रसाद द्विवेदी के माध्यम से कविन्द्र रविन्द्र को जान लिया।

प्र०-आपको यह भारतीय लोककथाओं पर काम करने को कैसे सूझी? यह तो बड़ा ही श्रम-साध्य कार्य है?

उ०-द्विवेदी जी कहा करते थे कि अगर जीवंतता देखनी है, तो उसे लिखित साहित्य के अलावे लोककथाओं के माध्यम से भी जानो--- गांवों में अगर जाओगे, तो वहां के लोक-साहित्य को मौलिक रूप में पा सकोगे। वहां वह विपुल मात्रा में बिखरा पड़ा है। तो, हमारे साथी थे-श्री मैनेजर पांडेय। उसने मुझे अपने गांव आने का न्योता दिया। मैं उनके गांव गया और फिर तो उधर अक्सर ही आने-जाने लगा। मुझे तब गांवों को समझने का भरपूर मौका मिला। मैंने बोलियों का सर्वेक्षण किया। फिर लोककथाओं में मेरी रूचि बढ़ती गयी। मैं उन्हें संकलित भी करने लगा। खड़ी बोली के अलावा भोजपुरी, अवधी और ब्रज के लगभग डेढ़ हजार लोककथाओं का संकलन इन बोली-क्षेत्रों में जा-जाकर किया। फिर उन सभी का जापानी में अनुवाद किया, जो चार खंडों में छपा है।

प्र०-आपके यहां आने के कुछ ही समय पूर्व भारत-चीन युद्ध हुआ था। उस वक्त कैसा माहौल था?

उ०-बहुत तनाव था। लोग गुस्से में रहते थे और मुझे **"चीनी"** समझकर अक्सर ही मुझपर पीछे से पत्थर फेंक देते थे।

प्र०-आप हिन्दी से एम०ए० करके वापस कब लौटे?

उ०-नहीं, मैं एम० ए० की डिग्री प्राप्त नहीं कर सका। मुझे परीक्षा देने का समय नहीं मिला। दरअसल मैं जापान सरकार से प्राप्त छात्रवृत्ति पर यहां आया था। मेरी यहां रहने की अवधि समाप्त हो चुकी थी। सो मुझे मार्च 1965 ई० में मजबूरन लौट जाना पड़ा।

मेरे मन में तैर रहे इस प्रश्न को कि "फिर यह प्राध्यापकी की नौकरी कैसे मिली?" को जैसे ताड़ते हुए वह बोले-दरअसल हमारे यहां जापान में डिग्री को विशेष महत्व नहीं दिया जाता। वहां प्रतिभा और अभिरूचि पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

प्र०-आपने लोककथाओं के अलावा हजारी प्रसाद द्विवेदी और प्रेमचंद साहित्य का भी अनुवाद किया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य पर भी कुछ काम किये हैं क्या?

उ०-आधुनिक हिन्दी साहित्य की ओर मेरा कम ही ध्यान रहा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य पर मेरे गुरूभाई श्री तोफियो तनाका विशेष काम कर रहे हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य पर अगर आपके मन में कोई प्रश्न है, तो मैं उसका उत्तर नहीं दे सकूंगा। इस संबंध में तो श्री तोफियो तनाका ही उत्तर दे सकते हैं।

थोड़ा ठहरकर वह पुन: बोले- हिन्दी तो आपके घर की चीज है। मगर हमारे लिये नहीं। सो हमें तो मिल-जुलकर ही काम करना होता है। वैसे भी एक विदेशी भला अकेले कैसे सारा काम कर लेगा? सो मैंने मध्यकाल और लोककथाओं को आधार बनाया, तो तोफियो तनाका ने आधुनिक हिन्दी साहित्य को। सूरदास का मैं अनुवाद कर रहा हूं, तो कबीर पर मेरा छोटा गुरूभाई श्री केन हाशीमोता काम कर रहा है।

प्र०-और तुलसी पर?

उ०-अच्छा प्रश्न पूछा आपने। तुलसीदास उत्तर भारत के अत्यंत लोकप्रिय कवि हैं। प्रोफेसर तोशियो तनाका के साथ मैं भी तुलसीदास पर काम कर रहा हूं।

प्र०-जापान में हिन्दी के पाठकों की क्या स्थिति है?

उ०-उनकी संख्या तो कम है। मगर जो हैं, वह अच्छे पाठक हैं।

प्र०-आपके यहां कौन सी पत्रिकाएं पढ़ी जाती हैं?

उ०-'धर्मयुग' और 'हिन्दी इंडिया टूडे' विशेष तौर पर पसंद की जाती हैं। 'सरिता' पत्रिका हिन्दी जाननेवाली महिलाओं में विशेष तौर से लोकप्रिय है। वैसे एक बात कहूं, महिलाएं पुरुषों से ज्यादा पढ़ती हैं।

प्र०-क्योंकि वह घर पर रहती हैं, जिससे उन्हें ज्यादा समय मिलता है।

उ०- ठीक बात है। फिर भी मैं कहूंगा कि वह बहुत कुछ जानने को उत्सुक रहती हैं। द्विवेदी जी कहा करते थे कि नारी आदर की पात्र हैं।

प्र०-क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि अब आदमी के पास पहले की तरह वक्त नहीं रहा? जो वक्त है भी, वो टी० वी० कल्चर लिये जा रहा है?

उ०-ऐसा तो है ही। आदमी के पास अब वक्त कहां! वह पिस रहा है, घिस रहा है। उसी में से वह वक्त निकाल ले, तो यह उसकी बड़ी उपलब्धि है। दरअसल आज लोग ज्यादा पैसा कमाने के चक्कर में, घर का रास्ता तक भूलते जा रहे हैं। अब मनुष्य ज्यादा स्वार्थी हुआ जा रहा है।

प्र०-सिनेमा, टी०वी० आदि के बारे में आपके क्या विचार है?

उ०-टी०वी०, सिनेमा आदि से तो लोग रास्ता ही भूलते हैं। मगर यह भी सही है कि वह शीघ्र ही रास्ता पहचान भी लेते हैं। इससे घबराना कैसा? यह तो बाहरी चमक-दमक है, जो शीघ्र ही उतर भी जाता है।

प्र०-हिंदी से जापानी भाषा में अनुवाद तो हो ही रहे हैं जापानी भाषा से हिंदी में अनुवाद की क्या स्थिति है?

उ०-वह भी हो रहा है मगर बहुत कम।

प्र०-ऐसा क्यों?

उ०-भारत में जापान प्रेमी तो बहुत हैं। मैं महसूस करता हूं कि यहां जापान के बारे में लोगों की जानने-समझने की बहुत उत्सुकता है बात ये है कि भारत-जापान भाषिक-सांस्कृतिक आदान-प्रदान बहुत देर से शुरू हुआ। आप अभी तो नहीं मगर बीस साल बाद हिंदी में अनुदित जापानी-साहित्य की समृद्धि देख सकेंगे। अभी तो यहां भारत में सिर्फ दिल्ली विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में ही जापानी-भाषा सीखने की सुविधा है।

प्र०-और काशी हिंदू विश्वविद्यालय में?

उ०-नहीं, वहां जापानी सीखने की सुविधा और व्यवस्था नहीं है।

प्र०-हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने की बात चल रही है इसमें आप क्या व्यावहारिक कठिनाइयां पाते हैं?

उ०-हिंदी पहले भारत की भाषा तो बने बाद में वह स्वमेव अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन जायेगी।उस बात को तो अभी छोड़ना ही ठीक है। **पहले हमें अपना घर देखना चाहिए फिर बाहर की सोचनी चाहिए।**

संपर्क : क्वार्टर नं० बी०-165, न्यू टाउनशिप, पंचग्राम-788802 (असम)

तमिलनाडु हिन्दी अकादमी द्वारा

हिन्दी रचनाकारों के सम्मान में संगोष्ठी

अध्यक्ष डा. बालशौरि रेड्डी *तथा डा. एन.चन्द्रशेखरन नायर श्री सिद्धेश्वर* को सम्मानित करते हुए

विगत 21 जून, 1999 को **तमिलनाडु हिन्दी अकादमी** तथा **अनुभूति** के संयुक्त तत्वावधान में **डॉ०मधु धवन** के सौजन्य से चेन्नै के अन्नानगर(पू०) स्थित उनके निवास सं० के० 3 में एक यादगार संगोष्ठी का आयोजन अकादमी के अध्यक्ष तथा हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार **डॉ० बालशौरि रेड्डी** की अध्यक्षता में किया गया जिसमें केरल के मलयालम भाषी तथा हिन्दी के रचनाकार डॉ०एन० चन्द्रशेखरन नायर तथा बिहार के यशस्वी कथाकार श्री सुरेन्द्र प्र० सिंह और रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य श्री सिद्धेश्वर को शॉल भेंटकर तथा चन्दन की मालाओं से सम्मानित किया गया। इस संगोष्ठी में विभिन्न भारतीय भाषाओं के सुपरिचित रचनाकारों ने सम्मानित साहित्यकारों के हिन्दी साहित्य की समृद्धि में किए जा रहे योगदान की चर्चा की। अध्यक्ष **डॉ० बालशौरी रेड्डी** ने **राष्ट्रीय विचार मंच** तथा **राष्ट्रीय विचार पत्रिका** के माध्यम से उत्तर तथा दक्षिण को जोड़ने के श्री सिद्धेश्वर जी के सतत प्रयास की सराहना की।

इस अवसर पर उपस्थित तमिल, तेलंगू, कन्नड़, मलयालम तथा हिन्दी के लगभग चालीस कवियों ने कारगिल युद्ध तथा विभिन्न विधायों में अपने काव्य-सुधा-रस का पान सुधी श्रोताओं को कराया। अतिथि कवि श्री सिद्धेश्वर ने जापानी विधा हाइकु के अपने काव्य-संग्रह **पतझर की सांझ** से रोचक तथा राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत कुछ कविताएं सुनाई जिसे लोगों ने काफी पसन्द किया।

जिन अन्य कवियों ने इस अवसर पर काव्य-पाठ किया उनमें कविवर डॉ०एम० शेषन्, आशुतोष मनुज, गुलाब चन्द कोटडिया, धर्मेन्द्र कुमार गुप्त, बी० एलुमलै, आर० पार्वती, नलिनी मेहता, डॉ० कमला विश्वनाथन, प्रह्लाद श्रीमाली, चुन्नी लाल शर्मा, डॉ०ए०बी० साई प्रसाद, र० शौरिराजन, डॉ०विद्या शर्मा, दाक्षायणी मेनन, पी० के० इन्दिराबाई, प्रदीप मेहता, अनुरंजन, डॉ० मधु धवन तथा शिवानन्द धुत्रे आदि का नाम उल्लेखनीय है। दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै के मानसेवी प्राचार्य डॉ०पी०के० बालसुब्रह्मण्यन ने अपनी ओजपूर्ण शैली में संगोष्ठी का संचालन कर इसे जीवन्त बनाया। हिन्दीतर भाषाओं खासकर उतर तथा दक्षिण की भाषाओं के साथ समन्वय

स्थापित करने तथा लोगों में राष्ट्रीयता की भावना भरने के ख्याल से स्थापित **राष्ट्रीय विचार मंच** की तमिलनाडु शाखा के गठन तथा उसके मुख-पत्र **राष्ट्रीय विचार पत्रिका** के दक्षिण भारत में विस्तार के सवाल पर उपस्थित सभी साहित्यकारों एवं प्रबुद्धजनों ने इसे शीघ्रातिशीघ्र कार्यान्वित करने का अनुरोध **मंच के महासचिव तथा पत्रिका के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर से किया गया।**

समारोह के अन्त में अतिथियों एवं कवियों के लिए साहित्यिक-भोज का आयोजन किया गया।

-डॉ० मधु धवन, रा०वि०ब्यूरो प्रमुख, चेन्नै

राष्ट्र चेतना की तीन हाइकु कविताएं

1. चेतना भरो
भर सको अगर
तो जनता में

2. सीचती सदा
देश की जड़ो को ही
राष्ट्रचेतना

3. कशिश एक
आज भी मेरे मन
हो राष्ट्र एक

❑ सिद्धेश्वर

अकेली

□ गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

जयन्ती को डाक में दो पत्र मिले। एक अम्मा का था, सोचा पहले उसी को खोले। अम्मा ने लिखा था कि पापा का स्वास्थ्य अब पहले से बहुत अधिक गिर गया है और चलना फिरना भी कठिन होता जा रहा है, किसी भी इलाज से कोई भी लाभ अभी तक दिखाई नहीं दे रहा है और जैसा कि वह जानती है पापा के रिटायर हो जाने के बाद से पैसों की तंगी और भी बढ़ गई है। पेंशन और भविष्य निधि के कागज अभी तैयार नहीं हो पाये हैं उसी से और भी परेशानी उठानी पड़ रही है। और फिर अन्त में गर्मी की छुट्टियां शुरू हो जाने पर भी जयन्ती घर क्यों नहीं आई, इस बात का उलाहना देते हुये उसे बहुत प्यार भेजा था।

बेचारी अम्मा-जयन्ती सोचने लगी, जितना लिखा है उससे कहीं अधिक जो नहीं लिख पाई उसी की विवशता जयन्ती को भीतर तक कितना भेद गई उसे देखने को अम्मा वहां होती तो शायद समझ पाती कि गर्मी की छुट्टियों के लिए कालेज बन्द हो जाने पर भी जयन्ती घर क्यों नहीं गई। घर . . . हां चारदीवारों और छतों से घिरा हुआ, ईंट-गारे-सीमेन्ट के मेल से बना हुआ एक ऐसा ढांचा जसके भीतर रहकर धूप-बारिश और सर्दियों से बचा जा सकता है और कभी-कभी अपने व्यक्तित्व के असली स्वरूप को बाहरी दुनिया के लोगों की निगाहों से बचाया जा सकता है। जयन्ती सोचने लगी कि जिस घर में वह कितने ही वर्षों से रहती चली आ रही है और जिसे वह बचपन से ही अपना मानती आ रही है, इधर कुछ वर्षों से वही बिल्कुल पराया लगने लगा है और एक अहसास कहीं भीतर तक बैठ गया है कि मजबूर अम्मा के असहाय चेहरे और बीमार पापा की बेजुबान आंखों के अतिरिक्त उस घर में ऐसा कुछ भी नहीं रह गया है जिसे अपना कह सकने की खुशफहमी लेकर वह जी सके। जैसे घर के साथ जुड़े होने के बावजूद भी दरवाजे और खिड़कियों का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता उसी प्रकार केवल जन्मना उस घर का एक अंग होते हुए भी जयन्ती ने एक स्वतन्त्र सदस्य के रूप में अपनी पहचान उसी समय से खोनी आरम्भ कर दी थी जब से पांच वर्ष पूर्व पापा अचानक बीमार पड़ गये थे और उनकी बीमारी पर आने वाले दिन पर दिन बढ़ने वाले खर्चों के लिए अम्मा प्रकाश भैया और प्रेम की कमाई पर निर्भर रहने लगी थी। जयन्ती को याद है जब पापा अचानक बीमार पड़े थे उस समय वह कालेज की नौकरी में बरकरार थे। शुरू में डाक्टर कुछ समझ नहीं पाये कि बीमारी का कारण क्या है और तरह-तरह के प्रयोग करते रहे, काफी समय बाद जब मेडिकल कालेज में जाकर दिखाया तब मालूम हुआ कि पापा की असली बीमारी क्या है-डाक्टरों ने कहा कि इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है, बराबर दवाओं के प्रयोग से बीमारी नियंत्रण में रह सकती है, लेकिन यह भी बताया कि धीरे-धीरे रोगी अंपगु सा हो जाता है। और पापा के साथ यही हुआ, बहुत शीघ्र ही वह चारपाई से लग गये और उनका चलना फिरना बहुत मुश्किल होने लगा। इसी कारण पापा को लम्बी छुट्टी लेनी पड़ी और बाद में नौबत यहां तक आई कि उन्हें बिना वेतन के छुट्टी लेनी पड़ी। कुछ समय तक तो कालेज के लोगों की सहानुभूति बनी रही और यदा-कदा वे उन्हें देखने भी आते रहे, किन्तु बाद में कालेज ने पापा को रिटायर कर देने की नोटिस भेजने की धमकी देना आरम्भ कर दिया। अन्त में विवश होकर पापा ने अपने कुछ मित्रों की सलाह पर स्वैच्छिक रिटायरमेंट ले लिया। और तभी से जयन्ती देखती चली आ रही है अम्मा और पापा की स्थिति में आमूल परिवर्तन। उसे याद है पापा उसे बेहद प्यार करते थे और जैसा उनकी बेजुबान आंखों से लगता है अब भी करते होंगे। पापा उसे प्यार से गुड़िया कहा करते थे। पर वही गुड़िया कैसे पहले केवल जयन्ती और फिर कमाई करने वाली मशीन और बाद में कभी-कभी प्रयोग में आने वाला एक बेकार फालतू बर्तन बनकर रह गई थी-एकदम अकेली, उपेक्षित। किसी को भी उसके विषय में सोचने का समय नहीं था या कोई भी उसके लिए सोचने या कुछ करने की आवश्यकता नहीं महसूस करता था-शायद सबने यह मान लिया था कि जयन्ती जहां भी है ठीक है और उसका भूत, वर्तमान और भविष्य सब कुछ उसी बिन्दु पर समाप्त हो जाते हैं जहां उसके वर्तमान ने उसे ला पटका था। उसके आगे न तो कुछ होना है, और न ही इसके लिए किसी प्रयास की अपेक्षा है एम०ए० करने के बाद से ही जयन्ती कालेज की नौकरी करती चली आ रही थी और उन कठिन परिस्थितियों में संयोग से उसका स्थानान्तरण घर से दूर इस छोटे से शहर में हो गया था और तभी से वह अकेली ही कालेज के छात्रावास से लगे आवास को लेकर रहती चली आ रही है और बहुत कम ही घर जाने की सोचती है।

* * * * * * * * * *

यही सब सोचते-सोचते कितना समय बीत गया जयन्ती को ध्यान ही नहीं रहा और शायद उसी अवस्था में कितनी देर और रहती, यदि दरवाजे की घंटी न बजी होती। बरतन साफ करने वाली दाई होगी-सोचकर उठी और दरवाजा खोल दिया। जब दाई किचेन में चली गई तब उसने दूसरे पत्र को उठाया। यह पत्र कुछ अपरिचित सा लगा, लिखाई पहचान नहीं पाई जयन्ती। खोला तो मालूम हुआ कि पत्र जोशीजी का है। जोशीजी-यानी कि कालेज के संस्कृत के अध्यापक जोशीजी। कुछ आश्चर्य सा हुआ उनका पत्र पाकर क्योंकि गर्मी की छुट्टियों के लिए जिस दिन कॉलेज बन्द हो रहा था उस दिन जो भी घटना घटी थी उसके बाद भी जोशीजी उसे पत्र लिखने का उपक्रम करेंगे जयन्ती को यह विचित्र सा लगा। उसे सहसा पिछली मई में कॉलेज के स्टाफ रूम में हुई वह घटना याद आ गई। उसने जोशीजी से इस प्रकार के अप्रत्याशित व्यवहार की आशा बिल्कुल नहीं की थी। उस कालेज में वह लगभग तीन वर्षों से पढ़ाती चली आ रही है और उतनी अवधि से वह जोशीजी को भी जानती आई है।

संस्कृत साहित्य और व्याकरण की शिक्षा की प्राचीन परम्परा को पकड़कर चलने वाले विरले व्यक्तियों में से जोशीजी भी एक थे और एक सज्जन और सच्चरित्र व्यक्ति की जो छवि अभी तक उन्होंने विद्यार्थियों में अर्जित की थी उसके सन्दर्भ में उनका उस दिन का व्यवहार बहुत ही बचकाना और लज्जाजनक था। मई की उस दोपहरी में स्टाफ रूम में खड़ी हुई जयन्ती का चेहरा क्रोध और आक्रोश से तमतमा उठा था और उसे लगा था कि जैसे उसे सरे-बाजार अपमानित कर दिया गया हो। जयन्ती ने चाहा था कि उठकर अपने आवास पहुंच जाय और कमरा बन्द कर फूट फूटकर रोने लगे।

जोशीजी-सब इसी नाम से जानते थे-वैसे उनका पूरा नाम विनायक जोशी था। पहले ही दिन से कालेज के सभी लोगों ने उन्हें जोशीजी कहना आरम्भ कर दिया था और अभी तक उन्हें उनके पूरे नाम से कोई नहीं पुकारता है। जयन्ती भी उन्हें जोशीजी ही कहती चली आई है। कालेज के स्टाफ रूम में लगभग दो बार तो प्रतिदिन मुलाकात हो ही जाया करती थी। इसके अतिरिक्त कालेज के वार्षिकोत्सव के समय नाटक या अन्य किसी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के संचालन करने के संबंध में जयन्ती कई बार जोशीजी के नजदीकी सम्पर्क में आई थी। चालीस के आस-पास की आयु, पारम्परिक संस्कृति प्राचार्यो की सामान्य तस्वीर से अलग हट कर ही थे जोशीजी। बहुत ही गम्भीर, स्वाध्यायरत और प्रतिबद्ध किस्म के व्यक्ति लगते थे। चाहे

छात्राएं हों या शिक्षिकाएं, जोशीजी का स्वभाव सदा आदर का ही रहता था और सम्वाद के समय उनकी आंखें बराबर नीचे ही रहती थीं।

परन्तु उस दिन अचानक यह क्या हो गया कि उन्हीं धीर-गम्भीर जोशीजी ने बिना किसी पूर्व सूचना के बड़े ही विचलित स्वर में जयन्ती के सामने उसके प्रति अपने मन में पल रहे प्रेम की कथा कह डाली थी। उसे याद है जोशीजी ने कहा था-

"जयन्ती जी। अब तो कालेज बन्द हो रहा है, गर्मी की छुट्टियों के लिए। मैं आपसे काफी समय से एक बात कहना चाह रहा था, पर संकोच हो रहा था। यदि आप आज्ञा दें तो कहूं।"

जयन्ती ने बिना कुछ सोचे समझे कह दिया था-

"हां हां जोशीजी, कहिए क्या बात है, निःसंकोच कहिए।"

यह घटना स्टाफ रूम की थी और उस समय संयोग से वहां अन्य कोई उपस्थित नहीं था। जोशीजी थोड़ा पास खिसक आये थे और बहुत ही धीरे-धीरे उन्होंने कहा था-

"जयन्ती जी जो बात मैं आपसे कहने जा रहा हूं यह यदि आपको बुरी लगे तो एक पागल व्यक्ति का प्रलाप समझ कर क्षमा करने की कृपा करेंगी।"

जयन्ती इस लम्बी चौड़ी भूमिका से कुछ सशंकित हो उठी थी और सोचने लगी थी कि जोशीजी जाने कौन सा रहस्योद्घाटन करने जा रहे हैं जिसके कारण वह बुरा मान सकती है; फिर भी कुछ शिष्टाचारवश और कुछ उत्सुकतावश उसने कहा था-

"जोशीजी, आप निडर होकर कहिये। मैं सुनने को तैयार हूं।"

और तब आरंभ हुआ था जोशीजी का प्रेम निवेदन। लगभग पांच मिनट तक वे बोलते रहे थे। भाषा में जो भी कोमलता और अभिव्यंजना की सामर्थ्य हो सकती है उसका प्रयोग करते हुए उन्होंने जो कुछ कहा था उसका सारांश केवल यह था कि जोशीजी का इस संसार में आगे-पीछे कोई नहीं है और जैसा कि उन्हें पता चला है कि जयन्ती अभी तक अविवाहित है, इधर कुछ महीनों से वे उसे मन ही चाहने लगे हैं और उनका प्रस्ताव था कि यदि जयन्ती उसके साथ विवाह बन्धन में बंध जाने की स्वीकृति दे दे, तो उनके जीवन की सबसे बड़ी कमी पूरी हो जायेगी। हजारों कड़कती हुई बिजलियां जैसे एक साथ जयन्ती के शरीर पर गिर पड़ी थीं या जैसे गरम-गरम पिघला हुआ सीसा किसी ने उसके कानों में उड़ेल दिया था। कुछ क्रोध कुछ अपमान और विवशता के मिले-जुले भावों के नीचे दब सी गई थी जयन्ती। जोशीजी का प्रेम निवेदन इतने अप्रत्याशित ढंग से हुआ था कि यद्यपि जयन्ती को सहसा बहुत क्रोध आया था फिर भी पता नहीं क्या सोच कर बिना कुछ कहे हुये केवल तनी हुई भृकुटि और आग्नेय नेत्रों के माध्यम से अपने भावों का प्रबल संकेत देती हुई उन्हें स्टाफ रूम में छोड़कर वह बाहर चली आई थी।

यह ठीक है कि जयन्ती अब युवावस्था के गुलाबी दिनों को बहुत पीछे छोड़कर पैंतीस वर्ष की दहलीज पर खड़ी थी और घर की जैसी परिस्थितियां चल रही थी, उनकी पृष्ठभूमि में अम्मा के रोने-कलपने और लम्बी बीमारी के कारण चारपाई से लगे पापा के चेहरे पर बिछी हुई विवशता के सिवा घर के किसी अन्य सदस्य के मन का एक छोटा-सा कोना भी ऐसा नहीं था जहां आत्मीयता की छाया का भी अहसास हो सके। और फिर विवाह के विषय में सोचना उसने आज से वर्षों पहले तभी छोड़ दिया था जब उसके साथ विवाह करने के मनीष के प्रस्ताव को एक सिरे से अम्मा, पापा, दीदी और प्रकाश भैया ने इस हिकारत से ठुकरा दिया था जैसे उसने सारे परिवार का घोर अपमान कर दिया हो और वह भी केवल इसलिए कि मनीष सजातीय नहीं था। जयन्ती तब छोटी थी शायद बीस-बाइस के आस-पास रही होगी। पर उसे वह सब बहुत अच्छी तरह याद है। बहुत रोई थी वह, कई दिनों तक घर में कोहराम सा मचा रहा था और सब लोग एक सिरे से उसे ही दोष दे रहे थे। दीदी जो ससुराल से पहली बार लौटी थी, उसने भी जयन्ती को बहुत समझाया था और भविष्य में एक अच्छे सजातीय लड़के से विवाह करवाने के विषय में ठोस वायदे भी किये थे। प्रकाश भैया ने भी कहा था-

"भूल जाओ जयन्ती, ऐसा भी कहीं हुआ है हमारे खानदान में-घबराओ नहीं, अब बहुत जल्दी ही उससे कहीं अच्छा लड़का ढूंढ कर तुम्हारी शादी करा दूंगा।"

आश्वासन कितने निरर्थक थे, जयन्ती यह बहुत जल्दी जान गई थी क्योंकि दीदी को बहुत दिनों तक अपने मेंहदी भरे हाथों पर सोने की मोटी-मोटी परतें चढ़ाये रहने के एकमात्र काम से फुरसत ही नहीं मिल पायी थी और प्रकाश भैया के अनुसार जयन्ती के लिये एक योग्य वर खोज पाना कठिन ही नहीं, एक अति महंगा काम था और प्रेम अपने आपको बहुत दिनों तक उस प्रकार के बड़े कामों के लिए बहुत कच्ची उम्र का समझता रहा। और इस प्रकार धीरे-धीरे बीस-बाइस वर्ष की जयन्ती अपनी आयु की गडारी खींचते-खींचते कब उस अवस्था में पहुंच गई जहां उसके ठंडे खून के लावे ने भी उबाल मारना बन्द कर दिया-यह पता ही नहीं चला।

यद्यपि इस घटना के बाद से जयन्ती के मन में विवाह के प्रति तनिक भी रुचि नहीं रह गई थी किन्तु उसके विवाह हो जाने से पापा और अम्मा इस संबंध में कुछ न कर पाने के कारण उत्पन्न अपराध भावना से मुक्ति पा सकेंगे इसी विश्वास से वह धीरे-धीरे किसी से भी विवाह करने को अपने को तैयार करने लगी थी।

* * * * * * * *

जयन्ती सोचती है जीवन में सब कुछ चाहने भर से ही नहीं हो जाता। नहीं तो मनीष को पाकर भी क्या वह उसे सदा के लिए खो देती। जयन्ती कालेज में बी०ए० में पढ़ती थी जब मनीष से मिली थी, वह भी एम०ए० फाइनल वर्ष में था। मनीष और जयन्ती कब और कैसे एक-दूसरे के पास आ गये इसका ज्ञान उन्हें तब हुआ जब एक बार प्रकाश भैया ने उन दोनों को केन्टीन में साथ-साथ बैठे देख लिया था और घर आकर उन्होंने उसे टोका था। तभी जयन्ती ने जाना था कि वह मनीष को कितना अधिक चाहने लगी थी और मनीष उसके जीवन का अभिन्न अंग सा बन गया था। जिस अप्रत्याशित ढंग से जयन्ती और मनीष प्रथम बार मिले थे उसे अच्छी तरह याद है। तब जुलाई में कालेज खुला ही था, शायद पन्द्रह-बीस दिन बीते होंगे। उस दिन खूब बारिश हो रही थी। कालेज आते समय हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी और उसी में किसी तरह रिक्शे से कालेज आ गई थी। पर अब दोपहर के बाद से जब पानी गिरना आरंभ हुआ तो लगा जैसे आज समूचा आसमान समुद्र बनकर नीचे गिर पड़ेगा। कॉलेज बन्द हो जाने के बावजूद भी सभी को वहीं रूक जाना पड़ा था। जिनके पास अपनी सवारियां थीं वे किसी तरह भीगते-भागते बाहर निकल पड़े थे। पर जयन्ती उस दिन बारिश के कारण कॉलेज में काफी देर फंसी ही रह गई थी। शाम होने को आ गई थी किन्तु पानी रुकने के कोई आसार दिखाई नहीं दे रहे थे। दूर-दूर तक कोई रिक्शा भी नहीं दिखाई दे रहा था। जयन्ती सोच रही थी शायद अम्मा घर से किसी को कॉलेज भेज दे और वह किसी तरह घर पहुंच जाये। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ और तभी उसके कक्षा की एक अन्य सहेली मंगला भी वहीं दिखाई दे गई जो स्वयं उसी मुसीबत में फंसी किसी सहायता की प्रतीक्षा कर रही थी। जयन्ती और मंगला साथ हो गई थी और आपस में बातें करने लगी थी। मंगला से पता चला कि शायद उसका भाई मनीष घर से स्कूटर लेकर आ रहा होगा, उसी की प्रतीक्षा में वह खड़ी थी। मनीष ने पास आकर स्कूटर रोक दिया था और मंगला लपक कर पीछे वाली सीट पर बैठ गई थी। मनीष ने जयन्ती की ओर देखकर मंगला से कहा था-

"और आप कैसे जायेंगी?"

जयन्ती कुछ नहीं बोली थी-मंगला भी-चुप थी।

मनीष ने ही कहा था-

"आइये न, दोनों बैठ जायेंगे-पानी फिर तेज होने वाला है, कोई भी सवारी नहीं मिलेगी।"

और उस दिन मंगला और जयन्ती दोनों ही मनीष के स्कूटर पर निकल पड़ी थी। मंगला का घर आने के बाद जयन्ती को थोड़ी देर के लिये रुक जाना पड़ा था क्योंकि पानी बहुत तेज हो गया था। शाम के लगभग छह बजे मनीष उसे स्कूटर से घर छोड़ गया था।

यही जयन्ती की मनीष से पहली मुलाकात थी। पता नहीं, पहली ही बार वह मनीष से इतना क्यों प्रभावित हो गई थी। उस दिन के बाद से जब भी कभी-कभार उन दोनों का आमना-सामना हुआ था, दोनों ने ही एक-दूसरे को छुप-छुप कर देखते हुए पकड़ लिया था। धीरे-धीरे दृष्टियों का यह आदान-प्रदान आकर्षण में बदला और बहुत शीघ्र ही प्यार की सीढ़ियां ताबड़-तोड़ कब पार कर गया, इसका उन्हें ज्ञान ही नहीं हुआ। जयन्ती को लगा था जैसे वह मनीष को अपनी सारी ममता और अपनी सारी आस्थाओं की पुष्पांजलि समर्पित कर दे। कालेज में खाली पीरियड हो या लाइब्रेरी का कोई एकान्त कोना या कैन्टीन का शून्य स्थल, जयन्ती और मनीष बराबर मिलने लगे। और जब एक दिन प्रकाश भैया ने उन दोनों को साथ बैठे कैन्टीन में देखने के बाद घर में जाकर कहा-सुना था, तब उसे साफ मालूम हो गया था कि वह कितना आगे बढ़ गई थी। और तब फिर शुरू हो गया था सिलासिला एक ओर डांट-फटकार से रोक-टोक बंधन-प्रतिबंधनों का और दूसरी ओर स्वप्नों के बादलों को कस मुट्ठी में पकड़कर रखने के मनोरथ-संकल्पों और जन्म-जन्मान्तर तक कभी न टूटने वाले प्यार की कस्मों का। मनीष ने एक दिन कहा था-

"जयन्ती, मैं तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता हूं।"

जयन्ती ने आंखें नीचे किये ही मन ही मन भगवान से मनाया था कि वह क्षण वहीं रुक जाय या चिरन्तन बन जाय। जयन्ती का उत्तर न पाकर मनीष ने फिर कहा था-

"बोलो जयन्ती, क्या तुम्हारी सहमति है?"

जयन्ती ने पूरे मन से चिल्लाकर कहना चाहा था-"हां........मनीष हां।" किन्तु संकोच और लज्जावश वह खामोश ही रह गई थी फिर भी इसकी खामोशी के उन मौन क्षणों ने मनीष को अच्छी तरह से समझा दिया था कि उसका प्रस्ताव जयन्ती को पूर्णरूप से मान्य है।

पर इससे भी क्या हुआ था? एक दिन सब कुछ पानी के बुलबुले की तरह टूट गया था, जब घर में सभी ने एक तरफ से मनीष के प्रस्ताव को ठुकराकर इनके प्यार की परिणति पर अन्तिम मुहर लगा दी थी। जयन्ती सोचती है सचमुच उनके प्यार की परिणति हो गई थी या नहीं कहना कठिन है।

इस घटना के कुछ ही समय बाद जयन्ती को कालेज में नौकरी मिल गई थी, और सुना था मनीष भी पढ़ाई के लिए विदेश चला गया था और चार वर्ष बाद वहां से लौटने पर उसने भी विवाह करके गृहस्थी बसा ली थी। जयन्ती ने भी युवावस्था के इस प्रारम्भिक आघात से उबरने के उद्देश्य से कालेज के काम में ही पूरा ध्यान लगाना आरम्भ कर दिया था।

तभी आ गई थी पापा की बीमारी, उनका रिटायरमेंट और उसके साथ ही उसकी अपनी स्थिति में गिरावट। विवाह के नाम से रोमांचित या उत्साहित हो पाने की स्थिति से बहुत आगे आ चुकी थी जयन्ती। इसी कारण जोशीजी के उस दिन के अप्रत्याशित प्रेम निवेदन पर जयन्ती ने मौन रह कर ही क्रोध की भंगिमा इंगित की थी। परन्तु अब क्या हो गया, जो अब पत्र लिख कर भेज दिया। जोशीजी का पत्र खोलते हुए डर लग रहा था लेकिन अन्त में खोल ही डाला। लिखा था-

"जयन्ती जी, बड़ा दुख है कि पिछली बार मेरे व्यवहार से आपको कष्ट हुआ। ऐसा क्यों और किस भावना से प्रेरित होकर हुआ यह मैं स्वयं आज तक नहीं समझ पा रहा हूं। मैंने कई बार अपने मन को यह समझाने की कोशिश की है। मैंने जो कुछ भी किया वह सब बिल्कुल अस्वाभाविक और अप्राकृतिक था और इसी आधार पर मैंने अपने आपको कई बार धिक्कारा और कोसा भी। काश कि मेरे पास दुर्वासा ऋषि की तरह शाप दे पाने की शक्ति होती तो शायद मैं कब का अपने आपको कड़े से कड़ा शाप दे चुका होता। किन्तु मैं तो ठहरा एक अदना सा तुच्छ मानव, इसलिए केवल स्वंय को बार-बार कोस ही सकता हूं, परन्तु आत्मग्लानि की पीड़ा से कितना जल रहा हूं, यह व्यक्त कर पाना संभव नहीं है। क्षमा मांग कर आपको लज्जित नहीं करूंगा, हो सके तो भूल जाने का प्रयास करेंगी। नहीं तो मैं दुबारा आपको मुख नहीं दिखा सकूंगा।"

पत्र पढ़ते-पढ़ते जयन्ती को लगा कि शायद कहीं कुछ ज्यादती हो गई है। संभव है जोशीजी के उस दिन के व्यवहार पर जयन्ती की प्रतिक्रिया शायद कुछ अधिक ही तीखी हो गई होगी, नहीं तो जोशीजी भीतर से मर्माहत और आत्म-प्रतारणा से इतने व्यथित न हो गये होते। तभी तो शायद क्षमा मांगने का भी साहस नहीं जुटा पाये हैं। काफी समय जयन्ती पत्र को लेकर बैठी रही और निरन्तर उसमें लिखी एक बात के विषय में बड़ी गंभीरता से सोचती रही, और थोड़ी ही देर बाद उसका मन एक अपराध-भावना से पसीजने लगा। और सहसा जयन्ती के मन में एक प्रश्न बिजली की तहर कौंध गया-क्या वास्तव में जोशीजी ने ऐसा घृणित और निन्दनीय कार्य किया था जिसके लिए उन्हें इतना लज्जित होना पड़ रहा है? जयन्ती के प्रति उनके मन का कोमल भाव क्या बिल्कुल घृणास्पद या अस्वाभाविक है? जयन्ती सोचने लगी जोशीजी के मन में जो भी था उन्होंने उसे साफ-साफ कह दिया अब यह बात अलग है कि जयन्ती उनके प्रस्ताव को स्वीकार करे या दुत्कार दे।

* * * * * * * * *

आज जब डेढ़ महीने की घटी हुई उस घटना के संबंध में जयन्ती ठंडे मन से सोचती है तो ऐसा लगता है कि जोशीजी का दोष ही क्या था सिवा इसके कि उन्होंने अपने मन में पल रहे प्यार की बात उससे स्पष्ट रूप में कह डाली थी। उसमें ऐसा क्या हो गया जिसके लिए वह इतना बुरा मान गई। और उसी क्षण जयन्ती को लगा जैसे एक बार यही वह अवसर दोबारा आया है जब वह अपनी परिस्थितियों से समझौता करके जोशीजी के प्रस्ताव को स्वीकार कर सकती है और पापा और अम्मा की दिन रात की चिन्ता को कम कर सकती है। पापा तो चल फिर भी नहीं सकते हैं और फिर दीदी के विवाह और अपनी बीमारी के कारण उनकी आर्थिक स्थिति भी अब ऐसी नहीं रह गई है कि स्वतन्त्र रूप से जयन्ती के विवाह का बोझ उठा सकें। प्रकाश भैया कुछ कर नहीं पा रहे है या शायद करना नहीं चाहते हैं, लगता है उनकी अपनी प्राथमिकताएं है, या अपनी विवशताएं हैं। प्रेम कभी इस सम्बन्ध में सोचता ही नहीं है। ऐसी दशा में यदि जयन्ती जोशीजी के प्रस्ताव को मान लेती है तो वह पापा और अम्मा के सीने पर रखा हुआ बोझ तो हटा सकेगी।

अचानक मिल गये इस समाधान की सम्भावनाओं में काफी देर तक जयन्ती डूबती-उतराती रही और कब महरी बर्तन साफ कर चली गई यह पता भी नहीं चल पाया। धीरे-धीरे शाम घिर आई इसका भी उसे ध्यान ही नहीं रहा। मौसम में काफी उमस बढ़ गई थी, और पंखा चलने के बावजूद भी जयन्ती का सारा शरीर पसीने से चिपचिपा रहा था। सोचा नहाने से राहत मिलेगी और उसके बाद थोड़ा बाहर घूमने निकल जाएगी।

नहा धोकर जयन्ती जब बाहर घूमने को निकली, तब उसने अपने आपको जोशीजी के साथ विवाह के प्रस्ताव के लिए पूरी तरह से तैयार कर

लिया था। सड़क के दोनों ओर लगे यूकेलिप्टस के पेड़ों से छनकर आती चांदनी उसे बड़ी अच्छी लगी और यह सोचकर कि अब कालेज खुलने में मात्र पन्द्रह दिन बचे हैं मन किसी अनजाने उत्साह से भर गया था।

वैसे पन्द्रह दिन क्या होते हैं? जहां निरुद्देश्य लम्बी-लम्बी प्रतीक्षाओं में कितने ही वर्ष बिताए हों वहां यह पन्द्रह दिन बहुत छोटे थे। बहुत दिनों बाद जयन्ती को लगा कि वह एक बार फिर नये सिरे से जीवित हो गई है और अपनी इस नयी जीवन्तता को तुरन्त अभिव्यक्ति दे पाने का कोई उपाय उपलब्ध न होने के कारण उसे यही पन्द्रह दिन लम्बे और दारुण लगने लगे। सोचने लगी जैसे ही कालेज खुलेगा वह जोशीजी से मिलेगी और उन्हें अपने निर्णय से अवगत करायेगी। कितने प्रसन्न होंगे, कितने अविभूत होंगे जोशीजी यह जानकर? यह सब सोचते -सोचते कभी कभी आशंका भी होती कि कहीं जोशीजी ने ही अपनी बात पलट दी तब? आखिर उसकी प्रतिक्रिया तो काफी हतोत्साही थी जिसके कारण उन्हें इतनी आत्मग्लानि सहनी पड़ रही है, कहीं निराश होकर उन्होंने अपना मानस बदल दिया तो?

"नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता"-जयन्ती सोचती है। जोशी जी ऐसे व्यक्ति नहीं हो सकते।

इसी प्रकार के भिन्न-भिन्न विचारों की भूल-भुलैया में चक्कर लगाती जयन्ती कॉलेज के खुलाने की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगी। कभी सोचती कि जिस कारण से मनीष के साथ विवाह का प्रस्ताव ठुकरा दिया गया था, वही कारण तो जोशीजी के साथ भी विद्यमान है। किस प्रकार वह यह बात घर में उठाएगी और उसकी प्रतिक्रिया घर में क्या होगी? यही सब बार-बार जयन्ती सोचती रही और अन्त में यही सोचकर आश्वस्त हो गई कि अब तो उसके विवाह के विषय में पापा अम्मा के अतिरिक्त अन्य कोई गम्भीरता से सोचता भी नहीं है क्योंकि इतनी अवस्था बीत जाने के बाद किसी लड़की का अविवाहित रह जाना उसे विवाह परिधि से बाहर निकाल देने के लिए पर्याप्त होता है। अतः उसका विवाह घरवालों के लिए एक आश्चर्यमयी और शायद भर्त्सनीय घटना से अधिक कुछ नहीं होगा जिसके लिए वह अपने आपको तैयार कर चुकी है। इतना सब होने के बावजूद भी जयन्ती अच्छी तरह जानती है कि अम्मा अभी भी उसके हाथ पीले करने के सपने देखा करती है। और अभी तक ऐसा न हो पाने के लिए अपने आपको ही दोषी ठहराती रहती है। इसलिए इस विवाह में अम्मा प्रत्यक्ष रुप में उपस्थित भले ही न हो पाये, कम से कम परोक्ष रुप में उनका आशीर्वाद उसे अवश्य मिल जाएगा। इसके सम्बन्ध में जयन्ती को विश्वास है। क्या पता अम्मा इस बात से सहमत भी हो जायं क्योंकि अब उनकी सामर्थ्य में कुछ भी नहीं रह गया है और अपने जीते जी उसे अपनी घर-गृहस्थी में स्थापित कर पाना उनकी एकमात्र इच्छा है इसीलिए शायद अम्मा मना नहीं करेंगी----। यदि प्रकाश भैया की तरफ से कोई समस्या आई भी तो अब वह स्वतन्त्र है और इस बार किसी संकोच में नहीं पड़ेगी और अपने मन की ही करेगी।

* * * * * * * * *

इसी प्रकार के विचारों को लेकर जयन्ती कॉलेज खुलने की एक-एक दिन की प्रतीक्षा करती रही। आखिरकार कॉलेज खुल गया। समय पर जल्दी-जल्दी तैयार होकर कालेज की ओर चल पड़ी, सभी सहयोगियों, अध्यापिकाओं और अन्य लोगों से मिली। सभी एक नये उत्साह से चमक रहे थे, नयी-नयी छात्राएं, नयी-नयी कक्षाएं, सभी कुछ नया-नया। जयन्ती भी आज बहुत समय बाद उत्साह से भरी थी। परन्तु जोशीजी कहीं दिखाई नही दे रहे हैं। जयन्ती ने सोचा शायद आने में देर हो गई होगी, थोड़ी देर में आते ही होंगे, सम्भवत; असेम्बली के बाद आ जाएं। असेम्बली समाप्त हुई प्रधान अध्यापिका का नये सत्र का अभिभाषण हुआ और उनके बाद सब अपनी-अपनी कक्षाओं की ओर चल पड़े। जयन्ती की कक्षा नहीं थी, इसलिए स्टाफ रुम की ओर बढ़ गई। सोचा शायद जोशीजी आ गये हों। किन्तु स्टाफ रुम में भी वह नहीं थे।

दोपहर हो गई। कार्यालय में पूछताछ की कि कोई छुट्टी का प्रार्थना पत्र या अन्य कोई सूचना आई हो। पर वहां भी कोई सूचना नहीं थी। जोशीजी के ही गांव के पांथरी जी कार्यालय में कार्य करते थे, उनके पास गई और पूछा। पांथरी जी ने बताया-

"बहन जी, मैं तो एक सप्ताह पहले ही चल पड़ा था क्योंकि मुझे यहां कार्य था। जोशीजी से मिला था और उन्होंने कहा था कि वह भी दो-तीन दिन पहले यहां पहुंच जायेंगे।"

जयन्ती ने कहा-

"पांथरी जी, यदि कोई सूचना हो तो बताइयेगा। कुछ आवश्यक काम है।"

"जी बहन जी, जैसे ही वह आयेंगे मैं उन्हें बोल दूंगा-या फिर और कोई खबर होगी तो भी आपको बता दूंगा।

अनमनी सी जयन्ती ने वह दिन बिताया। कहीं भी मन नहीं लगा तरह तरह की आशंकाएं मन में आने लगी। क्या हो गया कहीं बीमार तो नहीं हो गये। बार बार उनके पत्र की एक पंक्ति उसके मन को कचोटती रही, गुमसुम सुम सी आवास लौट आई। खाने-पीने की इच्छा नहीं थी। रात में यूं ही कुछ फल आदि लेकर बिस्तर में पड़ गई। जैसे ही आंख लगी थी कि कालबेल बजी। उठी तब उस समय रात के नौ बज रहे थे, दरवाजा बोला तो देखा पांथरी जी खड़े हैं, सर से पांव तक वह भीतर ही भीतर कांप गई, जैसे परीक्षाफल निकलने वाला हो। पता नही क्या सूचना लेकर आये हैं। बोली -

"कहिए पांथरी जी, क्या बात है, इतनी रात कैसे आना हुआ ? कोई विशेष काम ?"

पांथरी जी ने कहा -

"बहन जी, मैंने सोचा इस समय जाकर आपको कष्ट न दूं पर दिन में कॉलेज में आपने कहा था कि जोशीजी के संबन्ध में जैसे ही कोई सूचना मिले तो मैं आपको बताऊं। इसलिए इस समय चला आया।"

जयन्ती को याद आया कि दिन में वह स्वयं ही पांथरी जी के पास गई थी और उन्हें ऐसा ही कह आई थी। बोली -

"हां हां बताइए, जोशी जी आ गये क्या ?"

कुछ देर मौन, फिर पांथरी जी बोले -

"बहन जी, बहुत बुरी खबर है।"

"क्या हुआ पांथरी जी, बताइए न ?"

जयन्ती ने अपनी व्याकुलता को छिपाते हुए कहा ! पांथरी जी ने कहा -

"अभी - अभी गांव से एक लड़का आया है उसी ने बताया कि जोशी जी पिछली बुधवार को ही चल पड़े थे - यानी कि आज से पांच दिन पहले ---।"

"तो कहां रह गये वह ---?"

जयन्ती ने पांथरी जी को रोका। पांथरी जी ने बताया -

"जिस बस में आ रहे थे वह दुर्घटनाग्रस्त हो गई और खड्ड में गिर गई। कुल सात व्यक्ति मर गये हैं और काफी लोगों को चोटें आई हैं --- उस लड़के को गांव में पता चला कि जोशी जी उन्हीं सात में से थे---- बहन जी ---- विश्वास नहीं होता ---"

जयन्ती को लगा जैसे कहीं बहुत पास ही नदी का कगार फट पड़ा हो-सारा घर घूमता हुआ सा लगने लगा। बुत की तरह निष्प्राण होकर खड़ी रह गई जयन्ती। पांथरी जी की बात कब समाप्त हुई और वह कब चले गये यह भी पता नहीं चल पाया कुछ समय बाद जब कुछ ज्ञान हुआ तब जयन्ती ने अपने आपको उस अंधेरे में बिल्कुल अकेली खड़ी पाया - बाहर फैले नीरव अंधकार को केवल कुत्तों के रोने की मनहूस आवाजें तोड़ रही थीं।

संपर्क: अपर उपनियंत्रक-महालेखापरीक्षक, 10 'बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली'

म्यांमार की महिलाओं को सू की का आहवान

पड़ोसी देश म्यांमार की संघर्षशील विरोधी नेता सुश्री यंग सैन सू की ने म्यांमार की महिलाओं से प्रजातंत्र बहाल करने के लिए लड़ाई छेड़ने का आहवान किया है। **सुश्री सू** की 54 वीं जयंती आयोजित **'वीमेन ऑफ बर्मा डे** के अवसर पर सुश्री की ने कहा कि बर्मा की महिलाओं के लिए आज यह अतिआवश्यक है कि वे अपनी क्षमता एवं सामर्थ्य का उपयोग देश में प्रजातंत्र लाने तथा मानवाधिकार के लिए करें। उन्होंने पुनः कहा कि यहां तक कि अब गृहिणियों के लिए राजनीति से अपने को बाहर रखना संभव नहीं है क्योंकि राजनीति ने गृहिणियों के परंपरागत हिस्सों में घूसपैठी की है। राजनीति के परिणामस्वरूप ही रोजमर्रे की वस्तुओं की कीमतें बढ़ी हैं, बिजली की दरों में वृद्धि हुई है तथा शिक्षा एवं स्वास्थ्य की लागत बढ़ी है।

अमरीकी नागरिक बना खुश्चेव का बेटा

पूंजीवादी देश के घोर विरोधी रूसी नेता **निकिता खुश्चेव**, जिसने एक समय अमरीका को दफन कर देने का वायदा किया था, के पुत्र सर्जेई खुश्चेव अमरीकी नागरिक बन गए हैं। मृदुभाषी और मास्को के पूर्व निवासी सर्जेई ने कहा कि उनके द्वारा अमरीकी नागरिकता ले लेने से उनके पिता अपनी कब्र में परेशान नहीं होंगे।

64 वर्षीय सर्जेई खुश्चेव ने सन् 1991 में जब सोवियत संघ का विघटन हुआ तो उन्होंने ब्राउन युनिवर्सिटी में अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया। 1992 में अमरीकी नागरिकता के लिए आवेदन कर दिया था। उन्होंने कहा कि अमरीकी नागरिक बनकर उन्होंने अपने पिता के साथ विश्वासघात नहीं किया है।

जर्मनी द्वारा पंडित रविशंकर पुरस्कृत

जर्मनी ने प्रसिद्ध सितारवादक पंडित रविशंकर को वर्ष 1999 के लिए अपने प्रतिष्ठित 'अन्तराष्ट्रीय फिल्म एवं मीडिया संगीत' पुरस्कार से सम्मानित किया है। उन्होंने अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रेमियों की एक बड़ी जमात तैयार कर दी है। इससे पूर्व उन्होंने भारतीय दूतावास के पास जर्मन सरकार के कला एवं प्रदर्शनी केन्द्र में संगीत प्रेमियों को अपने सितार वादन से मंत्रमुग्ध कर दिया। भारत रत्न पंडित रविशंकर ने कहा कि सितारवादक और संगीत रचनाकार इन दोनों ही रूपों में मैंने अपने हर कार्यक्रम में स्वयं को नया और अन्वेषक ही महसूस किया है। उन्होंने कहा कि पिछले वर्षो के दौरान पश्चिमी श्रोताओं में भारतीय पक्के संगीत को समझने की गुणवत्ता बढ़ी है, इसीलिए जब यह श्रोता भारतीय संगीत की लय पर झूमने लगते हैं तो अनोखा रोमांच हो आता है। जीवित किंवदंता बन गये इस महान सितारवादक ने कहा कि जब कभी भी वह अपने सितारवादन में नवीनता लाये हैं तो वह कार्यक्रम के दौरान तत्कालीन ही लाये हैं।

कैनेडी परिवार में एक और हादसा

रा०वि० संवाददाता

अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति जॉन एफ.कैनेडी के 38 वर्षीय पुत्र **जॉन एफ.कैनेडी जुनियर** विगत 16 जुलाई, 99 से एक विमान दुर्घटना के बाद लापता हुए। इस दुर्घटना में उनके साथ उनकी 33 वर्षीय पत्नी **कैरोलीन बैसेट कैनेडी** तथा उनकी बड़ी साली **लॉरेन जे०बैरोट** भी थीं। श्री कैनेडी जुनियर अपनी पत्नी तथा साली के साथ एक इंजन के छह सीटों वाले विमान को न्यूजर्सी खुद उड़ाकर परिवार के एक विवाह समारोह में आर्थज विनयार्ड जा रहे थे। किन्तु इसी बीच यह विमान मैसाच्युसेट्स के तट के निकट लापता हो गया। बाद में विमान का मलबा तथा कैनेडी परिवार का कुछ सामान मैसाच्यूट्सके पास समुद्र में पाया गया। इन तीनों के देहावसान होने की खबर से अमरीका में दुख और निराशा का माहौल है।

सनद रहे कि अमरीका के इस सबसे मशहूर राजनीतिक घराने में इससे पूर्व भी कई त्रासदियां हो चुकी हैं। राष्ट्रपति कैनेडी के सबसे बड़े भाई जोसेफ कैनेडी, जो नौसेना में थे, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान वर्ष 1944 में विमान दुर्घटना में मारे गए थे। उनकी बहन केथलीन एग्नेस कैनेडी फ्रांस में एक विमान दुर्घटना में निधन हो गया था। राष्ट्रपति जॉन एफ.कैनेडी और उनकी पत्नी जैकलीन कैनेडी के पुत्र पैट्रिक बेवियर की जन्म लेने के ठीक दो दिन बाद स्वयं राष्ट्रपति कैनेडी की वर्ष 1963 में डालास में गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी। राष्ट्रपति कैनेडी के छोटे भाई रॉबर्ट एफ.कैनेडी की वर्ष 1968 में राष्ट्रपति पद के चुनाव प्रचार अभियान के दौरान लॉस एंजेल्स में हत्या कर दी गयी थी।

जॉन एफ.कैनेडी जुनियर के शव सहित उनके दुर्घटनाग्रस्त विमान का मलवा में साच्युसेट में मार्थाज विनयार्ड तट के पास समुद्र से बरामद किया गया।

–रा.वि.संवाददाता

ईरान के पास अमरीका तक मार करने वाला प्रक्षेपास्त्र

ईरान एक नये बहुस्तरीय प्रक्षेपास्त्र के परीक्षण की तैयारी कर रहा है। यह प्रक्षेपास्त्र इतना शक्तिशाली होगा कि अमरीका तक मार कर सकेगा। **'वाशिंगटन टाइम्स'** अखबार ने अमरीका और इस्राइल के खुफिया सूत्रों के हवाले से लिखा है कि **'कोसर'** के प्रतीक नाम वाल यह नया प्रक्षेपास्त्ररूसी विमानन विशेषज्ञों और सरकारी कम्पनियों के सहयोग से बनाया गया है और रूस के आर डी 216 तरल ईंधन वाले बूस्टर इंजन से चलेगा।

पाक जा रही परमाणु हथियारों का जखीरा जब्त

ब्रिटेन के सीमा शुल्क अधिकारियों ने एक बंदरगाह के गोदाम पर छापा मारकर पाकिस्तान ले जाये जा रहे परमाणु हथियारों और प्रक्षेपास्त्रों के निर्माण में उपयोग होने वाले करीब 20 टन महत्वपूर्ण उपकरण बरामद किये हैं। इसकी सामग्रियों में परिष्कृत एल्यूमीनियम था जो परमाणु हथियार बनाने में इस्तेमाल किया जा सकता है। संडे एक्सप्रेस अखबार ने बताया है कि यह 20 टन सामग्री अमरीका से एक जहाज से यहां लायी गयी थी।

रा.वि.कार्यालय संवाददाता

सचिन भारतीय क्रिकेट टीम का कप्तान नियुक्त

राष्ट्रीय चयनकर्त्ताओं ने श्री लंका दौरे के लिए सचिन तेंदुलकर को क्रिकेट टीम का नया कप्तान मनोनीत किया। चयन समिति के अध्यक्ष अजित वाडेकर को भरोसा है कि कप्तान के रूप में सचिन के चयन का सभी स्वागत करेंगे।

कप्तानी से हटाए गए मोहम्मद अजहरूद्दीन ने कहा कि हटाए जाने से उसे निराशा नहीं हुई क्योंकि कप्तानी ही सबकुछ नहीं है। वैसे अजहर को सचिन की कप्तानी में खेलने में कोई एतराज नहीं है क्योंकि वे पहले भी सचिन की कप्तानी में खेल चुके हैं।

मो०अजहरूद्दीन के लगभग पूरे नब्बे के दशक में भारतीय क्रिकेट की कप्तानी में देश-विदेश में मिली अनेक यादगार उपलब्धियों ने उसे देश के सफलतम कप्तानों की श्रेणी में लाकर खड़ा किया है। 1992 के विश्वकप, 1993 और 1994 में इंग्लैंड, जिम्बाबे और और श्रीलंका के दौर को अजहर की कप्तानी का **'स्वर्णयुग'** माना जा किता है।

इंगलैंड क्रिकेट टीम का नेतृत्व फिर एक भारतीय के हाथ

इंगलैंड में आयोजित विश्वकप '99' में इंगलैंड टीम के खराब प्रदर्शन के बाद चयनकर्त्ताओं ने टीम की बागडोर एक बार पुन: भारत मूल के एक जांबाज नासिर हुसैन के हाथों में दिया है। नासिर हुसैन इंगलैंड का 72 वां और भारत में जन्म लेनेवाला तीसरा कप्तान है। इसके पहले 1930 के दशक में नवाब पटौदी (सीनियर) ने इंगलैंड क्रिकेट टीम की कप्तानी संभाली थी।

नासिर हुसैन का जन्म 26 मई, 1968 को चेन्नई में हुआ। उसके पिता नवाब जेवार ने रणजी ट्राफी में चेन्नई टीम का कई बार प्रतिनिधित्व किया। बाद में वे इंगलैंड में आकर बस गये।

नासिर ने अपने प्रथम श्रेणी क्रिकेट कैरियर की शुरूआत 1987 में एसेक्स के तरफ से खेल कर की । फिर 1989 में उम्दा खेल के लिए उन्हें प्रतिष्ठित **'क्रिकेटर राइटर्स क्लब यंग क्रिकेटर ऑफ द ईयर'** पुरस्कार मिला।

इसके ठीक बाद नासिर को पहली दफा 1989-90 में वेस्टइंडीज दौरे में चुना गया जिसमें कर्टली एम्ब्रोस की गेंद पर जख्मी होने के वाबजूद उसने एंटीगुआ में खेले गए टेस्ट की दोनों पारियों में बड़ी दिलेरी से बल्लेबाजी कर अपनी टीम की विजय दिलायीं। 1996-97 में इंगलैंड टीम का जिम्बाबे एवं न्यूजीलैंड दौरा के समय उन्हें उपकप्तान बनाया गया तथा पिछले आस्ट्रेलियाई दौरे में नासिर ने इंगलैंड की तरफ से सर्वाधिक 207 रन 45.22 के औसत से चार अर्द्धशतकों की मदद से बनाये थे।

एक दिवसीय मैचों के लिए अनुपयुक्त माने जानेवाले इस बल्लेवाज ने विश्वकप '99' में 61.33 के औसत से 194 रन बनाकर इंगलैंड के सबसे सफल बल्लेवाज बने। आखिरकार विश्वकप के बाद इंगलैंड के जुलाई में न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट मैच श्रृंखला के लिए नासिर हुसैन को कप्तान नियुक्त किया गया है।

रा.वि.कार्यालय से दिलीप कुमार

युगल खिताब जीत पेस व लीसा ने इतिहास रचा

विम्बलडन में भारत के लिएंडर पेस और अमरीका की लीसा रेमंड की जोड़ी ने स्वीडन के जोनास बोर्कमैन और रूस की अन्ना कोर्निकोवा को 6-4, 3-6, 6-3 से हराकर मिश्रित युगल खिताब जीत लिया। पेस ने दोहरी सफलता हासिल करते हुए नया इतिहास रचा है। इससे पहले पेस ने महेश भूपति के साथ हालैंड के पाल हारहुईस और अमरीका के जेरेड पाल्मर की आठवीं वरीयता प्राप्त जोड़ी को 6-7, 6-3, 6-4, 7-6, से हराकर पुरूष युगल खिताब जीता था।

भारतीय टेनिस के इतिहास में यह पहला मौका है जब किसी भारतीय खिलाड़ी ने ग्रेंड स्लैम टूर्नामेंट में एक साथ दो खिताब जीते हैं।

फ्रेंच ओपन का खिताब जीतने के एक महीने बाद ही विम्बलडन की पुरुष स्पर्धा का खिताब भी अपने नाम करके भारत के लिएंडर पेस और महेश भूपति की जोड़ी ने सिद्ध कर दिया है कि उनकी युगल टीम विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। खिताब जीतने के पश्चात् भूपति ने कहा कि यह अब तक का हमारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था यदि ईमानदारी से कहें तो हमने टूर्नामेंट को जीतने के बारे में नहीं सोचा था।

विश्वनाथन आनंद की नजर विश्व खिताब पर

विश्वनाथन आनंद के अभ्युदय के साथ ही भारत में शतरंज के अच्छे खिलाड़ियों की लाइन लग गयी। इस समय देश में लगभग 25 इंटरनेशलन मास्टर हैं। आनंद पहला खिलाड़ी था जिसमें मात्र 18 साल की उम्र में 1987 में ग्रैंडमास्टर का दर्जा हासिल कर लिया था। दिव्येन्दु बरुआ ने 1991 में तथा उसके सात साल बाद प्रवीण थिप्से ने यह उपलब्धि हासिल की । थिप्से के बाद अगला ग्रैंडमास्टर बनने की होड़ में अभिजीत कुंते, तेजस बांकरे एस० की दाम्बी तथा कृष्णन शशिकिरण शामिल है। इनमें कुंते दो जीएम नार्म हासिल कर सबसे आगे हैं।

भारतीय शतरंज के इस बदले हुए स्वरूप का श्रेय सिर्फ एक शख्स को जाता है वह है **विश्वनाथन आनंद**। एक इंटरनेशलन मास्टर का मानना है कि आनंद की सफलता की वजह से भारत में शतरंज के खिलाड़ियों की संख्या कई गुना बढ़ गयी है। 23वें साल में दुनिया के नम्बर दो खिलाड़ी बनने के बाद आनंद ने पिछले दिनों विश्व रैपिड रेटिंग मे शीर्ष वरीयता हासिल कर लम्बी छलांग लगायी है। फिड़े द्वारा पहली बार जारी रैपिड शतरंज के लिए रेटिंग सूची में उसे 2840 की ऊंची इएलओ रेटिंग मिली है। वह रैपिड शतरंज में 2800 अंकों का जादुई आंकड़ा पार करने वाला पहला खिलाड़ी है।

शतरंज को भारत में मुख्यधारा का खेल नहीं माना जाता है। फिर भी अगर वह तीसरे प्रयास में विश्व चैम्पियन बनने में सफल रहे तो उनका नाम भारत के अब तक के महानतम खिलाड़ी के तौर पर इतिहास में दर्ज हो जाएगा। **याददाश्त व दूरदर्शिता आनंद की असली ताकत है।** आनंद को खास बात यह है कि वे प्रतिद्वंद्वी की गलतियों की वजह से नहीं जीतते हैं। उनकी तेज रफ्तार भी रोमांचक है। एक बार कास्पारोव के खिलाफ आनंद ने अपनी बाजी मात्र 25 मिनट में खत्म कर दी थी। 1995 और 1998 में लास वेगास विश्व चैम्पियनशिप तक आनंद कोनरु हम्पी ने महज 12 साल की उम्र में एशिया की सबसे कम आयु की आईडब्ल्युएम बन एक नया अध्याय जोड़ा है। हम्पी अंडर-10 व अंडर-12 की विश्व चैम्पियन है।

भारत भूषण, पटना से।

अमिताभ सहस्त्राब्दि का महानायक

अभिनय की दुनिया का शहंशाह

बी.बी.सी. के विश्वव्यापी इंटरनेट सर्वेक्षण **'आपकी सहस्त्राब्दि'** ने भारतीय अभिनेता अमिताभ बच्चन को **"स्टार ऑफ द मिलेनियम"** माना है। अभिनय की दुनिया में **शहंशाह** सिद्ध हुए अमिताभ की लोकप्रियता चरम सीमा पर है। आप याद करें यह वही अमिताभ हैं जब विदेश दौरे के दौरान उनके रास्ते में लड़कियों ने अपने दुपट्टे बिछा दिए थे। यह वही बच्चन हैं जिनके **"कुली"** फिल्म की शुटिंग के वक्त घायल होने पर उन्हें खून देने के लिए ब्रीच कैंडी अस्पताल के बाहर दर्शकों की कतारें लग गई थी।

जाने माने फिल्मकार, लेखक और आलोचक ख्वाजा अहमद अब्बास ने उन्हें पहली बार **"सात हिन्दुस्तानी"** में अवसर दिया था। अमिताभ के मेगा स्टार बनने का सफर शुरू हुआ था प्रकाश मेहरा की **"जंजीर"** से। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि महान पिता हरिवंश राय बच्चन के महान सुपुत्र अमिताभ बच्चन को महान बनाने में इनकी अभिनय के प्रति गहरी आस्था और लगन, गरजदार भारी आवाज, मृदुभाषी और मिलनसार व्यवहार रही। उन्होंने **एंग्री यंग मैन** का चोला यों ही नहीं पहना, दर्शकों ने पहनाया था। उन्होंने अपनी 95 प्रतिशत फिल्मों में मजलूमों का प्रतिनिधित्व किया।

विदेशों में रह रहे भारतीय मूल के दर्शकों में तो अमिताभ बेहद लोकप्रिय हैं जिन्हें हिन्दी भाषा नहीं आती। अफगानिस्तान, ईरान, इराक तथा अन्य अरब देशों में अमिताभ को देखने वालों की कमी नहीं है। इनकी लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा किता है कि के.सी. बोकाडिया ने उन्हें **लाल बादशाह** के लिए तीन करोड़ रुपये में अनुबंधित किया था। आज नयी पीढ़ी के किसी भी अभिनेता को इतनी रकम निर्माता देने को तैयार नहीं होगा।

सहस्त्राब्दि बी.बी.सी. की टॉप टेन च्वाइस : 1. अमिताभ वच्चन 2. सर लारेंस ओलिवियर 3. सर एलेक गिलो 4. चार्ली चेप्लिन 5. होमर सिम्पसन 6. रावर्ट डी. नीरो 7. कैरी ग्रांट 8. वस्टर कीटन 9. मार्लिन मुनरो 10. गोविंदा सम्मान पानेवालों को रा.वि. पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

-अजय कुमार, मुम्बई से

जवानों के जज्बे के आगे मेरा सिर सम्मान से झुक गया- रवीना टंडन

फिल्मी दुनिया के सुप्रसिद्ध अभिनेत्री रवीना टंडन को जब यह पता चला कि कारगिल के घायल सैनिक, जिन्हें श्रीनगर और वहां से फिर दिल्ली अस्पताल में ले जाया गया, ठीक होने के बाद दुबारा मोर्चे पर जाने को उतावले हैं तो उनके जज्बे के आगे रवीना का सिर सम्मान से झुक गया। वे दिल्ली अस्पताल में घायल सैनिकों को देख भाव विभोर हो गयीं, उनकी आंखें भर आयीं, पर उन्होंने अपने आंसू रोके यह समझकर कि लोग इसे कहीं एक्टिंग न समझ लें।

रवीना टंडन को एक जवान आशीष का रोना याद आया। वह जवान अपनी लकवा की बीमारी पर नहीं बल्कि इसलिए रो रहा था कि उसे युद्धभूमि में वापस नहीं जा सकने का अफसोस था। रवीना ने संकल्प लिया कि वे अब देश में जागरूकता पैदी करेंगी क्योंकि अपने चेहरे, व्यक्तित्व और अपनी हैसियत का प्रयोग कर उन्हें बहुत सुकून मिलेगा।

'जुबली हीरो' राजेन्द्र कुमार की याद आती रहेगी

'जाने वाले कभी नहीं आते, जानेवाले की याद आती है, "दिल एक मंदिर" फिल्म का यह गीत राजेन्द्र कुमार पर आज सटीक बैठता है। उनका गहरी नींद में सो जाना भावनात्मक और संवेदनशील भूमिका के एक अध्याय की समाप्ति समझा जाएगा। उनकी भूमिका इतिहास बनकर हमारे मन को कचोटती रहेगी।

20 जुलाई, 1927 में स्यालकोट में जन्में राजेन्द्र कुमार का रक्त की बीमारी के बाद विगत 12 जुलाई को निधन हो गया। सर्वप्रथम 1948 में **'मेला'** फिल्म में एक्स्ट्रा के रूप में जिस राजेन्द्र कुमार ने काम किया उसे 1957 में **मदर इन्डिया'** में एक छोटी सी भूमिका से उन्होंने दर्शकों का ध्यान खींचा। फिर 1959 में **गूंज उठी शहनाई** बनी जिसमें हीरो के रूप में पहली बार वे आए। इसके बाद **दिल एक मंदिर , मेरे महबूब, आरजू** तथा **ससुराल** एक-से-एक अच्छी फिल्मों में उन्हें सफलता मिली। कामयाबी की बुलन्दियों को चूमने के लिए राजेन्द्र कुमार को संघर्ष पूर्ण लम्बा फिल्मी सफर तय करना पड़ा अपने पचास साल से ज्यादा के फिल्मी कैरियर में उन्होंने अस्सी से ज्यादा फिल्मों में अभिनय किया। **गूंज उठी शहनाई** का वह रोमांटिक हीरो आज भी दर्शकों के दिल दिमाग पर छाया हुआ है और जब भी जो भी इस फिल्म को देखेगा, उसे इस जुबली कुमार की भावुक प्रेमी की भूमिका मन मोह लेगी।

1998 का 46 वां राष्ट्रीय फिल्म समारोह सम्पन्न -शबाना श्रेष्ठ अभिनेत्री तथा 'समर' श्रेष्ठ फीचर फिल्म

निर्माता निदेशक श्याम बेनेगल की फिल्म **समर** को 1998 का श्रेष्ठ फिल्म तथा शबाना आजमी को श्रेष्ठ अभिनेत्री के राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चयन किया गया है। इसी प्रकार विवादास्पद हिन्दी फिल्म ***"गॉडमदर"*** को छह राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। स्टार ***अजय देवगन*** फिल्म ***"जख्म"*** और मलयालम फिल्म **बाबा साहब अम्बेडकर** में अभिनय के लिए सुपर स्टार मम्मूटी को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता घोषित किया गया। इन पुरस्कारों की घोषणा नई दिल्ली में आयोजित 46 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में की गयी।

सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार मलयालम फिल्म ***"जननी"*** के लिए राजीवनाथ को दिया गया। हर वर्ग का मनोरंजन करनेवाली सर्वाधिक लोकप्रिय फिल्म का पुरस्कार करन जौहर की फिल्म ***"कुछ कुछ होता है"*** को दिया गया। इस समारोह में 114 फीचर फिल्में, 105 गैर फीचर फिल्में, 22 पुस्तकें तथा फिल्म आलोचकों के 17 लेखों को शामिल किया गया था। जूरी का विशेष पुरस्कार बंगाली फिल्म ***"किच्छु संलाप किच्छु प्रलाप"*** को गया है। टु तीथे मी सर्वोत्तम मराठी फिल्म चुनी गयी। इसी प्रकार ***"शहीद-ए-मोहब्बत बूटा सिंह"*** सर्वोत्तम पंजाबी फिल्म चुनी गयी।

रा.वि.संवाददाता, नई दिल्ली

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

8954777 (O)
544471 (R)

Office :
Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East, Mumbai - 400 068

Factory :
Plot No. 10, Dewan & Sons, Udyog Nagar, Palghat, Distt. - Thane
Mumbai (Maharashtra)

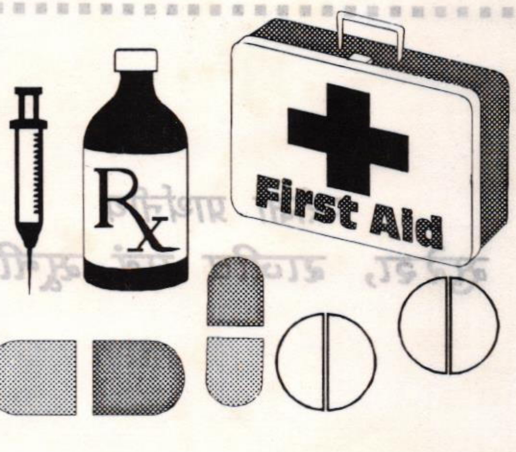

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रूपक सिनेमा के पूर्व)
बाकर गंज, पटना-८०० ००४
दूरभाष : ६६२८३७

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)
दूरभाष : ६५७६९, फैक्स : ६५१२३

आधुनिक आभूषण के निर्माता
नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी तथा
हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय
सुरेश, राजीव एवं सूनील

GOLDEN

GOLDEN POLYMEX (INDIA) LIMITED

Regd. Office :
Uma Shanker Lane, Mogalpura, Patna City-800008
Ph. : 640212, 640015, Fax : 0612-644525

Mfrs. Of :

High Barrier - Extruded Multilayar Films
H.M., LLDPE, LDPE Bags, Gravure
&
Flexo Printing etc.

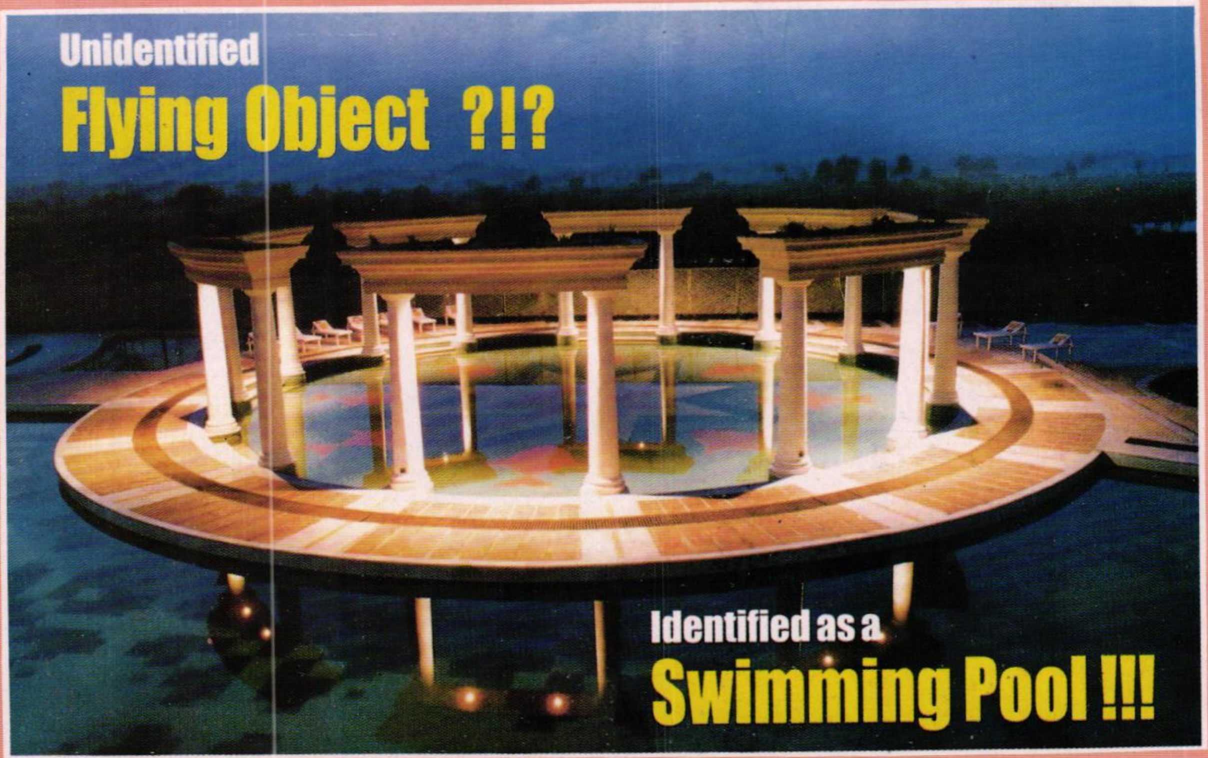

Yes, you are looking of a tiny portion of the magnificent state-of-the-art over 12,000 sft. Swimming Pool complex of the Lake Land Country Club.

Membership	Valid for life in case of an individual and 25 years for Corporate members. Not transferable for individual members but transferable for Corporate members within the corporate body.
Additional Membership	Children above 18 years of age and the dependent parents of the member are eligible for additional membership.
Annual Subscription	A subscription of Rs. 150/- per month will be charged from members and will be payable on an annualised basis from April 1, 1998.
Accommodation	2 nights free accommodation per year, life long for members and family. Discount and attractive schemes on room and food & beverages for the member and the family.
Sports Leisure Facilities	The following sports and leisure facilities will be available for the member and their guests • Department Store • Cards Room • Snookers• Library • Video Room • Fully Equipped health Club/gymnasium • Carrom • Table Tennis • Squash • Badminton • Golf with 18 hole putting green • Cycling • Jogging trail • Horse Riding • Childrens Park • Arts & Crafts Village • Forest Area • Comping Tents • Picnic Kiosks • Fishing Beach Area • Complete Aqua-park with Swimming Pool, Speed Boats, Water Scooters etc. and many more...
Food Beverages	Two restaurants with bars and a pool-side bar.
Conference facilities	Full-fledged conference facilities will be enjoyed by the members on a special discount.
Executive Business Centre	Equipped with all modern communication and business facilities with independent cabins and board rooms for meetings. The members will enjoy special discounts on usage of these facilities.
Health Club	Modern spa with locker rooms, sauna, steam, jacuzzi, fitness room, fully equipped gymnasium, aerobic room, yoga, health food boutique & restaurants, beauty parlour, crech-all will be available to the members at a special discounted rate.
Additional facilities	The club will continuously add new facilities for the use of the members. Members will be kept informed about additions to the club and other news of the club through its quarterly Club Newsletter, 'The lake Land News.

The list of facilities may be changed from time to time and it is at the discretion of the management to do so. The Club is operational and more than 1500 satisfied and happy members are enjoying it. Why don't you come over and have a look and feel the ambience? You would love to be proud member of the Lake Land Country Club.

A brand owned by Country Hospitality Corporation, USA, a part of Carlson Hospitality Group which also owns major hospitality brands like Raddisson Hotels Worldwide, Regeant Hotels & TGI Fridays.

COUNTRY INN & SUITES BY CARLSON

A Cozy Stay At A Comfortable Price®

The Lake Land® COUNTRY CLUB

P.O.& Vill. Munshidanga, Off Kona Expressway, Dist. Howrah 711 403 W.B.

A gentleman's club, as well as the gracious lady's.

Developers :

Panchwati Holiday Resorts Limited

Marketing Office : 27 Shakespeare Sarani 5th Floor
Calcutta 700 017 Phone : 2405981 2805703/3419
Fax : 2409822/0168